

म्बाजरते रायन वा जागपरां नमस्त्रत्य तरं चेवनरोत्त ममादेवी सरस्वतिं वासं तते नम् सुर्येते सत्त्रदाच ॥ व्यय पतिमधा मं व्यागते देव विसत्त मे। इति स्वरंगन न्यस्यानासु देव मधा व्यो ता व मास्मित्त तारम स्पर्व जीवित विमानमान चे उदा तारोध नी तो वितरी ममा को में ने वास भगाजनपा वास तु धर्त बर्श बोर शासी सहसा को व हो मा है पतत्त बाप स्थान्य पादि यु उपः कर्य व सममितः।।पणेतिविधिनासम्बद्धनार्वपसमिषितः।।पदानिमिविज्ञानिम्पिसंस्थानने तवं ।।सा पंच त्य इको महिममतिषाति क्षेत्र तमा वे से का धि पते व्याहे यो पते रति व ध्रामा। यते। हं बहु मि क्रिमि ब्रिं वित्वं मधु सद्वापिद त्वं मित्यु पद्धरः क्य बस्वा व्रविस्तराम्। श्रुत्व त व उत्र रक्ते बरोमिक तमा तमना प्राक्त ये त्ववादे विकि उत्तरमान वरिविता सत्र अवादा हितिया वदः जुला से गर्म संगर अजे। सिता करेलार बरं का नाम कि से से सित कि धाने रंके दे सिव गरं विकास विकास साम स्थापन स जसत्य जितां गर्जा स्वाह साम् अव हा साम का ने द्वित ने विविधा के दिये सह स्रागोष्ट्रिच वारासमा ह्य ति।। त्व दर्च देवरा जन विशेषी देव ते सह। त्वेषा प्रस्वार्थ ते का लेम्द्र रा प समहत्रवता भ्यूदेयम व्यंकार्य मन्त्र व्यमवियत्य नः॥ तत्त्र राष्ट्रकारे यत्त्र व्यवम्भविष्य वि स्म श्वास के क प्रशास न निया मत्या बार ।। दा नं व तं तपी कि पि कि नर व व है तं न पा।। वेना

dira

A

राम

V c

स्

त्यिक स्ता ता भागतं वादे प्रमाया पः गराष्ट्री श्रमा वाता नाता गुरा प्रता मुलार सता निहता द्रभेगा षितः भे तीन स्वति कर्गा वृष्यि देव प्रायम् वर्तवा का नाष्ट्राप्त तस्ति ताम वर्गा वर्ता वर्गा वर्ता वर्गा वर त्रिश विस्तिक त्या विवासि दः रिवता स्थारत मण्या रूत सुषा हता सा रूत की विसा । शर्रा के बुना स्प्यामहुरवयमान्त्रवत्।अपस्याम् अतिकामिक्षेत्ररोतिमणक्राः विधाना राहतास्य यमायावतं वासिशामीतस्य वास्य वयह विमयाय्युरशैवम् शार्या वयतभ्यो विद तारभावातहतायया।विनारास्त्रास्य साम्याविनय बर्धहा विमाना दुख ज वधी शोदा ती सम्बत्ती ताहा के प्रक्रा बस्वा व्यक्ति मुख्य कि है तात्वे व ने स्था कि ने वा मिलिततः विपाय। तरियने व छरेवा संबद्धिताय तमी बिनी विक्रमाने पर यो तामस शोगादितस्यात्तहप्तपसम्पद्धभाजसम्यात्तस्य हकाद्शी वृतसम्पद्भव नकार्त्तकस्य नाम तद्वतिहणं का ने मना ती विषे पं कुरमामिन कि करें पराण प्रत्र सम्बन्धि शयकं। क्षासिकं मासिकं वित्रं तुः वासंस्थि दिवान रे । प्राति ति स्विनिति साम का कि वित्रे वि विश्वासे ना गरशं शिवं तुः विश्वासे ने विश्वासिकं विवेद विश्वित विश्वासिकं ने ग्रास्त्र विश्वासिकं के विश्वसिकं के विश्वसिकं

रंमस्त्रामस्भावातीताभवंकितातवज्ञार्जहरातियागर्गेषरिग्विनी।इन्द्रविवनावासमा गुमेन निपासकाम्यतस्या बकु भिद्यामिकं होते तुम्या अभूम्या भूको हो देव की जा क्या हं देख वनका। खोद्देश्वर वाच । व्य राख्ने सम ना का ने प्रयो ते प्रवीत ना वि । प्रापं द्वाच ते व ती त ते विहा प्यामित्राञ्चासीत्स्तिषु अगस्यां के मापा एकी हिन्ते तस्य । भून ने को देव शक्ति वेदवेदां गणर गः।। श्वातिचे यो जिन बा श्रु की सीर कृत परापराः। त्युं वाराध विज्ञत्ये साक्षा त्स्य इवा पर्श तस्या तिस्प संस्वासी ना माग्रावती सताल्य प्रश्रासिक्षणपय स्माने दरी सताला स्वप्य बनी नेस चति। त्र बहु यो। तो कर् विद्वं पत्रिक रो ध्यान्तर्गाधिते। हिनादि पदिन्ते रहसी वितस्ततः। ताबे ते श्रेन संबोर मा पा ब्रेशमप्रवतारः अविवाह । सर्वा जाव सम्वोष निवतम्। निहतीरा स्मातेन हाता समामा विना ती त त्वे च यम वे न अर्थे शीरत पायुक्तः ॥ वैक्र मवर्म नीती महारोतिन समीप ने अवाव जी बसुय नामास कि व नादि व नीते ना हे व की साताना सपीती स्वभव विद्नासोगः शेवाः जिला शाय विद्नवाः शिव्र जिलामा ने व बापूर तीव वर्षायः सागार्यपाग्यको हेप स्थाजातकी उर्ष्वातानिः वि ना देवदनीयपा करिवत्त्र वधा जादिनामि ।। भीत्रसाउवा नात्त तरवृतोमह्रवनाधिकात्रनो विकान जाती रिववर्ड साद्यो मन्यम्योगमस्विधानके दिवाइन वन्तनोगं मेकिने। रिस्री प्रमानिक विज्ञात ur Shastri University, Delhi. Digitized by have a partial Peetham

नबं

बिद्दिष्येत्वारं महिनाजेनमस्पति।श्वेषेकातिके मासिनराजन प्राव्यानमस्मानेक जलाहित विश्वीतिकालं यपाममाप्त कान्यता कृत्वारियो। मानवाः वर्षः अभिद्वेष्ट्र त्रुग्यस्म ब्राप्ट्रवृत्वे क्षमित्रास्त्र व्यवस्थित शास्य अवना शिष ने स्त्र ने विश्व ने में विश्व तह की वि स्वेश्वरं त्रिम् वनै दिन दान महतं हरमं प्रराम्प व ननं निक्रिताद सामा । इतिश्रीपद्म प्रशास निक मात्रात्मक्त स्त्र त्यानाम् अद्दे दीती वाध्यायः।।सत्ते उत्त वासवं का आह्वप वास्तवे वा अवन् दिव सा-।।वा साना नुक्यनाप्मासः समिक्तिवरा। एकाइशाति यो नां व्यानां का निक्ति प्राक्त यदे वृद्दे वृद्दा कार गांकि खक्या तारा। श्री कामा वावाना सा छ द वे वा माने स्ट राष्ट्र हो रामा सा । द से देवा स्थ संवाददेव विनार दरम् वी। स्व नेव प्रायका वारदः यश्च मित्र वा व का दिना विवय का र रास विक न्द्रतिः॥नाष्ट्रद्रथो न्। क्रेखनामा भवत्य व मस्रश्माग्रात्यज्ञः। विः मानीमधने शती महावारी प्रमान्त्रमः। जित्य देवा विराह्म संबद्ध स्वान्त्रमहासरः॥ र्योदिनो द्रपान्य विद्यारेत पान्ति । अइन्हर ह त्र्याद्धतिदेवा सुवर्गाद्विम्हरंगु ता भूवव सन्बहुव क्रियावने धासवासवा । हिवर्गादिमहरं हुवे संस्थित स्तिद आद्य आप्र द्रशानाव म् इसी तहा है सावि वार मन्सहता विकारा है द्रशान मा प्र राम पिविञ्जिता।। ज स्ने ते ब्रांव दक्त स्ताजर सी प्रमान किं। स द्वातं म पादे बाबेद मंत्र ब्रांग कि त्रानाक्रियततः सर्ववन्त्राना भवतिहि॥इतिमत्वनतरे है तो विस्र मार स्रामि हे ते।॥ Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सने

तगास्त्रात्रांशामता कानेक पीवत्श नकेरत्रदा प्रधात मध्य स्थान देवता केपतो शीतापाड ता वता बाताबिक निष्यानिमानम्बरातागास्य व्यागप्र हस्तीग्राननमंबराताबि हिसप्र रासम्पक्ष वेन तेप धना किति। श्रारिह पहिसाने ताम कारागरा सिवतं। नाम रेवी समाना स्ता विक्रेडमानपु द्वाराश्य समानिष्मानस्याज्य स्व दिन कि के प्रमाका निक् वृत प्रशेष के मता विध्य स्वार्यमान्य प्रवृत्ति दिवा ने प्रयाचार्य नेमा अवि। आगति हे गता सर्वे प्रताने वि ममा सहारतिषद्वाः सङ्घङ्गा एवभविनी चिताते देवशान्त्री मत्त्र शिवश्चित्री स्पर्वेड शार्मित्रहर सबसाउरगव ती अभे कार्ति के बतपरापन बरुष रची तिवर्ष की ममहारित्र पा प्रकृत स्थादक के तामस्यादक के त्यत उस्ति के का जात अमें का जि के की प्रानं वय तस या उक्त प्रशास्त्र देह मेहसे स्थेन स्पृध्य स्नी स्थिया भवे ताप व व ता दिसं त व विस्नवेन ते किय रो। सिवेदित ब्रह्मित स्मान्य क्रमा की त्वमांगता। म्या अन्य मंदर्गा त्य के का विके प्रति के ते ब्रह्में के त्र

का०

कुर्वित्ववकाः सवाक्षिकान्त्रेन्यपुरम् अष्यम् अन्य वने सर्।।वित्व भीरवरातिषा पृथाकार्यति पा ल्यादियालया व वर्ता प्रत्रवी जादिसति।।धन दा दिर्धना ध्य सल्याना वी य म जीपाम मन्यध्यसादाः जी बत्यक्रास्त ते पतः। म्या जन्म मर्गा हो स्त क्षतमे तहते तमराप्योक्त विधिन सम्पद्ध तेमा माभवता मिषा एका दस्या वृत रवाहं मन दिः विते वितः प्रति रहेवात किमी ना जी ती वी विवास मार्थित हुए से स्विति के करें सा निध्य कर ने तथा सर्ति। हा न सम्भाममंगिद्र में कि देश में कि मान देश में हिंदि की भगवान विष्ठ : सक्री तु व्यक्ति वेट की सा स्पातंत्रको विध्ववासितः अस्य मस्पतः असत्तिमराउको सिद्धं हृत्यमा सिद्दवन्य निः। तीवत मानम्यो तज्ञ ता बूदिन वेश पत्य तजापि नमें यो ना बत्य सार्थ प्र पत्र ता इये स सागर सिमः सागरेण वर्वे दें तात ती वधी त्रतेशं से विस्त्रमित्स एव द्वार व्याने य ने स्व करें हती बद्री बन माजमत्। तत्राहुष अवधीत् श्वीतिद्या जायविष्ठः। ऋदिया (वावाज जावर्षि शीर्गा स्पूर्व वेदान्य मार्ज छ।। म्बाह्बय छं च त्वादिताः सरह स्यान्य माना ताना साथ से वोजे तिष्यमिद्वतामारा संप्रतः। भारद्रश्वा नगत तस्ति सचित्र विज्ञान वसम्बिताः। उद्देशिताः साबी असे विदाय समिताः । तेषु या बिना ने में में के दी ना बिना ते स्पति हैं। ज्ञातस्तर्ष्य तिपाणिवाञ्च चस्विति संजन्य च्या जैन के घडेः। वि स्वेन सिव धार्वे तेत

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sanagya Sharada Poetham

श्रम ४

सर्याने का जाता के के विश्व के प्रमुख के प्रमुख में ता ता ता ता के प्रमुख क शतनिदेशः अनिदेअत्रसंस्थितान्। श्रपदीमा स्रिता देशिकं शर्यामिन्या। प्रजीपकर्ष राम निर्देश हार भवनं मत्रात मत्य प्रका भाषानी तथा द्वादिका किया वर्षे उष्यं षदीया-मुद्धर्रहः।।म्ययप्रजोषां मग्रवां स्तद्रियरिलोषितः। दृशेतेः सरेस्तवसत तार्दसमद्तिः। इपनारे केड्यामः सपन्य स्विदशेस्तदा द्राउन्यात्रमा तान्या वण्याध्यः। विक्रम्तवायावरदेष्ठिसर्ग्यांजीतवा चादिषंग्रानेगाननित्र विवानदिमा न्स्वीमे बद्दामिनः दिवस्पश् क्रेकादस्या पावड हि धिनी भवता विशा दुव्या शहो वे पेता त वा प्रांदि में गता ने पहिले ही निनं गतिने भवित्र पे पण करें मही है नत् छ प कर नि ने मति। अजीति कि प्रदेशिक्म की पाद्ये अब विर्धिय या हता ते प्रदेश करिया जाते की दिख का रशा म वृताः श्रीव हती सहिति छत्य द देते स्थिताः। ता ना नपाम है देना ता सीन न नमा महिन यम्बिवेर स्तुमंत्रनी व्यव कारिन्ता ॥ प्रत्येक वित्र कारितिश्वमान स्वति ।। प्रत्ये व यात सान दिनानमा ।ते सर्व प्रताब स्यो स्य सामा स्य ने शसे पः वे कि वित्र से सम्ब

त्

NK

वैक्रमाधं बरदे स्मिवनाम भे त्वेस रण त्वेसलीप त्वेत्र पंत्रपातः न गोहर व्यहता वाना वेत्रवर्ग रवी। बदरी वनमध्ये हे बदा ति क्षांसिल वे गाम्यून्य त्रद्य भिन्ने वे स्वयसाव प्रस् त्नात्वाद्वसेवे नमवाद्वः काण्ते प्रत्यास्यानस्य रानं तस्य वे द्वाना नत्त्रमाः । जीव न्युन्तास्तरा तेष्णापने वाष्ति ए ति। स्त्रां वाष्ण्ये देवान्ये व देवस्ता द्वारत वेवात क्षी व मगा त्त्वधाः देवा सर्वे प्येश हे स्त नतस्युष्ट्वां तक्षिके शत्रार्थे द्वाद पस्तीर का आणे शर्पा पा हरी नत्री पः सित्ये हा विश्व द विनः। सती चे राजे व दश्वना भा में होत्या क् वितस्म वा सुपार्वा दिन्ती प प्रपत्ति विकास के तिया स्ति है साम माना संग्रहें ने तुर्की ध्या का प्रचार व व गाम के पर व त्ये या के संयुने का निकास से पे। तयो। सान विधि सम्बतियमा निव ना रद्।। इ दा वन विधि विषय ब्रेस्य रात स्प्रमा नाई इंत्र बा ना त्वेबि को रेश पाले शिना ज्ञाते वि प्रतिनवात पापिन इतः सम्बद्ध माहातपंशराउवेनुन १वस्येतमा सस्यमा शति को दशी श्रमा । का निक्रं न ता निव्यन ह्यां क सर् व्यादतिहितः।रात्रान्तुः व्यां श्रांश्वायाम् द्वित्रहास्य वृती। तेजन तासा वृत्ते क्वामा दिहः से द्वान जनः। दिवासंध्या स्वरणस्यं बानस् जनस्य त्वासरा वर्ति मम्प्रमातन की बली कासब जिता। अधीन्य ने प्रिष्व गती वह सिशा हावः।। गरही ला ञ्याश्वनस्य ७

धान्यसम्बद्धाः विशेष्ट्राः विशेषप्रसंस्तुब्रह्मा हर्षित्र नाम्य न्य इति विशेषित्र स्वास्त्र विशेषाः स्वतः॥प्रस् संबतः॥प्रसन्त्रदेवज्ञेष्ट्राः विश्वत्र ए ह्य काः॥द्विपत्यद्शाः बद्धः को विस्ति विश्वतः स्वास्त्र देवाक वृद्धे बदेवज्ञेणनाः पृथिति विश्वतः विभागः विश्वतः विषयः समस्त्रोतं सस्यानवे बदेवे प्रवास्थाने त्सि द्वित्रती बेय व क स्व य पत स्व मन्। पत्रभागो न्य वा का न्स्व त्यू शादा द्वापते । स्वा नेपते दिति के छ एकि को पुराप व धने। अहि मुहि में देवा स्तु मा कि तो प्राप्त के प्राप्त मा प्राप्त के प्राप्त में प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त में प्राप्त के प् बादिवश्कि होत्। दत्ता सा पक्र रश्करत्वरमेत ६६ द्वन ।। प्रीत स्व वा वा वा ममाक्रे तन्मतं देवा पंड्रविद्व इस्तम् ।त न पान्त सम तत दून दे निवित्र विषा स्ववंशा ह्रवीरा ना जंडान न न विष्यति। सम्बद्धिस्य याचा त्रकारिया काम विष्यति। प्रमंच सर्वे ब्रामा पा तिवस श्रेमया सह।। तीर्षगञ्जीति विष्ण तमें ती र्थ अविष्यति।हातेष्वतेहोमो जे पः प्रजारिकाः विष्णः।व्यन त्र फरने श सन्मात्रिध्य क्राःसराञ्च क्राहासाहिषापाति बुद्धन का क्रान्यिपाइक्ष नादस्य ती र्ष स्याविना शंगितितश्राति देहलागंत्र या भीराः अर्थे निमम सिनाधी ।मन्ते देवि शंत्येवन पुनर्जीव नीनगः। विक्र-इरिश्वेद्यार्दे क्र बैन्यज्ञसमध्य नागतिक्वे विरुक्त संवित्त स्तर्भे ते भारते से वमका प्रश्य प्रति है से सदानरगा। स स्मिम स्ने अवातः स्थित के पा व ताका नाम कर स्य नवी मिल्ले पातः स्वान प्रकृतिता स्थाद श्री का वातान पोति स्था प्रपात मः। स्र्यं प्रतिश्वराःस

i A

7190

लेषितः।विश्वरत्वान् भनातं वसाधिवे कुरहे यो मिनं हृदयनिहि।।म इन्तयन गयिन तनिहा मिनार्यातेकं र जारिकं में यु ब्लारिकं पति वरें ते नवीति परंचा मिनत का मसुद्र जनता। तांश्विद्वितियेत्रकात्तेमहेष्यभवंतिक्षित्वस्थायक्यांश्युत्वम इत्स्याव्यायत्ते नेत्रत्वे निनगम् अस्तमहूष्णभवनिक्षिक्षके क्रमन्ति। रिजामित्रका प्रात्मे में के किया के रहित है। तथा से ते । जिया से दिशि में रहित के का निर्ध के तथ की भव उच्चे रवने गर्छी शें बरंसराजा रोशं तुर की पने हुआँ ने वत हु विपाल निरूक्ति पासके जस्मी कामा नवार्ष ऐता प्रभा प्राता प्रसाला कि एक पोसर्व देव ता क्षेत्र का विश्वित्वादेवदेवं समाप्ये तामेत्रहोनं श्री कं मिल्रहोनं सुरेश्वराएं ए जिते मयादेवा परिपर्शित दस्तु वे ।। ततः प्रदिशिक्षं क्षत्याह सहस्य निर्मित्रे स्वाप्य ने द्वारा प्रति । पं समर्वेत विस् शिवसापिवप्त ने दिने के विस्पितिशिक्त विसे वे। निर्दे तपापाः सहयवेजे सावपावि बिस्मेर्यवनं मन्याः ॥ रतिश्री प्रस्ति प्राच्या उपराज्या सत्भा मासंबद्धांश्वमंध्याण्या नारद्वां मा दी ह्या के दिया की व्यापार में अहि इस नाश्यां तिलरंषी सते: प्रदेशिया चे तिहितः श्री। मान ब्रेट्व क्तेन्त वामप्न संगमे। इमा

शिस्त रवा साप्त ही तस्वित हिना क्षे धने प्रत्य सर्थी चं क्षित दितः। स्कार्ति जपं अरदिनि बामेदश्र ने भयोः शिवः सम्पादयाः प्रश्चार तिर्गाशीन स्यते। एति विग्रशोदी हो स्वाने रिवन स्य यो ।। प्रतियन तुर्भ रांगी तद्र देशीन मान्देत्। तद्र दे दिन मार्गस्यः स्त्रीयादा राग तद्दे दान शो व क्रमि विही मं स्पत्त करणः विक्रताः क्रियाः ॥ प्रख्य दिविही तस्य ने मे भाः पर नरः त्यतः। दन्तान्ताविश्वादिश्वताः अर्थाः स्वपतितः। स्वाउदै नं वशो वा वेः प्रजाः वश्ववरः निवा वस्त्र नां अनिधां स्व त्व जो दे कि व न स्पता विभे जे समुझा क्षिय द्यां अत पाउट ही सिविधां भीर ब स स्य स्याक्रेया वरागिता। अतिपद्यि वर्धे न न न स्थार दशीनके। व दस्यी प्राणे न न इर्थो देतथा मनम्॥डेव वा से तथा सा ह नक्षिय निधा व नम्॥अववाहादश मंड के मि खिशी व तिथा व ता।। वं ए की उसका का सितर्र गडी ब्राम क स्वा ।। विषेर्रा विश्वा या त की वे देत धाव ने।। त तेविकाः विवस्पाप्य हेरा के त्यस न धीः कि धुव्यस ताम् सन्म ही ता न दितं त्यनः ।।तन्दे वस्यनायाभन्डप्वारान्य प्रबंद्यक्षाहाला स्वायन द्वीता कुर्ण द्वीता दिवा निता त बराष्ट्रकादिख्य वियुक्तान् सन् में बार स्वाधिक दिये। सताम्बले जी पका निपा वियोगी देश त वैज्ञानपरायतसे ब्रायस्तिपः।।तम् क्षियत्रदानिकतानि व नेगहरोः।त्रिकदिनिकरेरे पस्माद त्यानने प्रस्म ते। किलं बसि देवेग म मायय स्तु पर्धिव। विस्तुने व तर प्राह म क्र कि परि

इसिवेनों गाचाःसिनःसर्वस्तीर्थानिज्ञान ज्ञानवाः।सिस दाक्षाग्रस्त्रे से पुत्र दुत्रस्त्र क्या प्रतिवतास्विदियाचायसाः सिद्धः सप्नाः। निष्यः सर्वतत्रवापिकानुत्र हेनि के बजा। ह मिः स्वात्व प्रतिमंत्रेहिता हत्वा प्रवित्र बर्ग न्या मधा त्यात्य त्या प्रवेश विष्णापा वे तः का तिक्रमासिवर्ते तिथि रतियो। ति वास्तते ख्यमण्य निषितरः स्वर्भवासिकः। ते तो तथा दि निः कम्पराष्ट्र वस्त्राय तो ब्रुती। प्रातः का निदितं क्षम्प्रिमा पात्र दृष्टि प्रनः। ती की विदेवान्तरम् स्प उनर वैविष्यितां गंधव्य प्रति र्वं संस्थित सरमानसः। ब्राह्मनः का तिक्षा सिक्षातस्यविषि वन्त्रमाग्रक्षणाई मया द्वंदक्जे नुतिस्द्रमात्त्र स्थान्या स्थाना स्थाना स्थाना स्थाना स्थाना स्थाना स्थाना स्थ उब्धेः सताम्बू देः प्रामञ्जूष्य प्रमः। तीर्याशिद्वि रोग्यु देवे राष्ट्र रखमा स्वता । सर्वी ने स्वाप्ति ता देवाः प्रजितास्त्रम द्र इत्तरास्य अक्र दृषि गोविस्ताः ऋष्ठंपेवां स्र गोन्डवि। ता वृमा न्या नेवित ध्याः करा विक्रम विक्र ते। ततो हरिष्ट्रिपां देवी तुः नसी मने चेहुती। व्यपाग स्तानपुक्त में का स्वां प्रशा विमे चराम्। वस्ते विदितं वेदेत वसी ब्रमा वना स्वान्यन न्या कि ने वाचे सङ्गतं ना कितंब वित्रात्याविजी वृतिमा संस्तु अशी वृज्ञिती वृपतः। इदिक्षण त्रमस्कारा न्दुर्ध्यो देव्हाज्य मानस्य देवस्विति मि ताप्रविमि निसिम् निश्वर्।। नमा नमसे तुःनिस् पा पे हर्हार विने ।ति ति श्व योग्युली यो रासी स्वस्पमानसः।। प्रसाने प्रनिष्ट क्षेत्र विद्याने विद्याने स्वति। स्वस्ति विद्या

ग्राम

द्शारुशंकानं तीर्चितान प्रवंस्य तम् ॥वि संद्रम्य ताततः क्षयितं क्र्यं स्त्रयनस्यत्।तीर्णिद देवताभ्य रव्यमा दर्का देवप्यतालमः अमान नाभाषनमस्त जान शापिता न मस्ति सहिष् शंग्र कारागर्वे नमोस्तुते। वे क्रं हे च प्रपाने न तथा वदनि का समि। इदेवि स्वविन क्रोने विभागति द्धे प्रम् अतार्वामाम के द्वता विष्ड्विय स्माति रेवसहिते : सर्वे अभिवेदमस्वास्त्री का सिंबे हें कि निया मि प्रातः सा ने तन देना दी त्य चे दिव दे वे शर् शकी दन तमें हत ते । ध्या तमहे त्यं व देवेश ज ते स्थित साल मध्ता तवप्ता राम प्रेम दा में दन विवस ता हित ते से मि विबेकाम्यकार्ति सायनाशिनां हर हा गार्थिम या द्र ने दन्ड जेन्द्र निष्द्र ना श्रुतिनः का निर्देगाति स्त्रातस्यविष्वन्यमाग्रहाराविष्यपद्वेशश्याशहतंहरे ।स्यत्वाभागीर्षीविस्त्रिवंस्त्य नविशितानिमार्ने नविश्वित्ति स्वापा ध्याविश्वितानितामत्व ब्रेशिन गर्ही सानेस मावरेत्। इतेस्या नेपती नां च तुनशी मान स्वित्। सपायी दर्शन वनी हिती पादश मी व्या नमें दश्यों न च स्त्राप् की नी पर्निति ते स्ति पाश्चादी इत्याम त्यान में नसा ने ततः प्रम्यास्त्रीय प्रशान्वदे के से वे से का प्रशानि ।। विकास देवना की र्ष पः प्रशानि भावनः। सिविके सर्व पण्यः दुनातु क्रप्या नमामा विक्षारा ज्ञामनुकोय्य कार्तिकवृत्त कार्रणातः । इन्ति देवास्ति स वैभावने तुस्तिकाः। बिद्रमें गामकी में सरहत्याः सक्षान कार्राक्ष्य पा देव सन्यो मासन

वा

शासानिवालके के वें के तरता के देशे अवसा मुद्रे लग्ने में वास्तिक है। त मो दिका का का वास्तिक के के वें के तर त पत्ना नारे र म्या निहेश स माने जा जनत या। ना सिना द त के शितं व जी पता जिल व ती म्भाम्बनावर त्राक्षेत्र का राउं वह ती कृत क्रिका मक्ष्रापत्य न न जी पेहे स्ववृत्ती THE STATE OF THE S स्वमिहें व व का के श्व सत कर के व्यक्त के ता हि पा विते दे गया में ने वा घा है स व ती। रमञ्चलात्मनमुखपानता वतके सहाह जाबेड्डवदवा हो रचनवदेत संदा बती एता निवर्क्त वे नित्ये थानी सर्वे बते काषा है छ। दाच पुन्त की तश्वश्रमा निस्ति छ। तमानुषागरं वह ती छत्रा के म्ल के तथा ज्योप व व स्वितं व प्रति व विश्वे स्था नारिकेरमाना के नपूजा लेवदरी के जम्यावर्म बतान का ते की शास्त्र न त जे ते यो शाकान्येतातिव उक्तान क्रमात्याते पदादिष्ठााधाक्री परंतर होते ह द उन्ने प सर्व दा उर हो। व R. F. O र्मसन्नागवध्यो ने शासत्वास्त्र नेत्रपाष्ट्राकान्य निम्म ना सं तिपद्राय कृष्णवर्जिय किविताह सम्प्रित्य वर्गात्सन के किलाह त्वा भरा ये सह देव हि। स्वन FE बहिमा है विश्व यो है। ने प्रमान्ब्री। हिरिजा आर्शाने ने स्वी धी के तु आर्थ ते प्रथाने का रिशाहक्क का जिंक वातिनंनरं। प्रमह्ताः पता बज्जे जा जा संहाहिता वपा। बरेषिक बुने सिवन यज्ञ शतमा जना प जाक खा चू मात्व जी वे कराह का निके वती । कुन्तिम निव वती प्रपानि से अशिभरत वि वसित्त का नितर्ते का तिक वृत कारिशाः। दः स्व प्रदः तति कि व मिह्नामि निक्षित का विकास कि कि विकास कि वि विकास कि वि विकास कि व 算為原理的特殊情報的代表存在的阿特多原示更和中的共和的各种证明的

शप्याचपरवादं पराजरणाः।। सदाचव जिथ्वा तो विशेष राति का तिके।। ४।। रित्नी प्राप्ता शका विकास के लिल इस ता भागासंवाद व के बापा पास्ता रहाउँ वा ना बता बेद वित्राप्त संतिप्रमायेयकी विताः॥तान्यराष्ट्राष्ट्रवयपाराजन्य स्यापनसमा सत्रास्त्र ब्रिमिम्सिमामा मामानि सोई से बिरवंत स्पासा नमाषाद देवानित वा छ। को तिल वति द्वदेविद्विमाना व्यास्त्रा वृत्तेना तथा। स्वीराजमहतित रावकी वृत्ति विवति व हिरलेति नते ते नत्या के सं कत्यद्वित्या भावह छेश यद ए व की वत्या निवनती परा नं नपर द्वार परम राजमंत्र भागती थे प्रति गरे स्वीपा ना दि पा ना दिन बती क्रामं अमामि बंच में कि तो अध्योगमाम बारा था ने म स्वित के से में प खेलित त्यान्त्रा कारि प्राप्ति वे रुज्य ६ व्य रुज्यादिका मिने म्यादिनः की तरमः संबे क व्याध्यान जेतपात्तामपानिक्तंगव्यं ज लेप त्यलसंस्थितं। न्यात्यार्थं पारितंना ज्ञानामिषं तत्य ते बुक्षा श्राम्य मान प्रमाय मान प्रमात्मा जनमा चतुर्य दाये मुंजी का यी देवस्ते अती। नरके स्व बतं देशको ते अपनं नुकार्यत् । श्वयम् कार्तिक स्विपी ने ता भोगं ने बता

र विद्या

क्रीव 3 तसीपरिकात्करारापञ्चरात्तममन्बितम्। महापरितसं प्रसंद्धेमं तत्रविधापन। मं उरने वृत्याविसा रचन ने प्रतिमा नि खेत। यूज वे ह्या ने देवे शेशे खिन का मा भारत के प्रेय के प्रवेत सम्बद्ध जन हो क्-प्रपाद-इदि ला कपाना रचम्या ल पज्ञ येष्ठती। हा दश्यां अति अदि को जयो दश्यो ततः स्ट्रिश्च की हिंत श्वत ईश्वंतस्या मुज्यतिका त्वता तस्य श्रुप वते द्रत्य शान्तः व्यता मानस्य मं वेदेव देवेशं क्षी वरंगि गुर्व न तपाए प्रवादे छोड्शालः का ना स्प्रा मिल्वतेः । राजे नागरणं कृष्ये की तवा चारिमंगलेः॥अतंक्षंतिप्रसानागरेन्स्रपारिगन्।।जनगत्ररशकेद्वतिर्भागपसंच्येः विस्त्रासपीतयसंख्याववका ने समानितान तावती व्रीष्ठताने व ताव से प्रमानितान मा वर्रा रज्ञ ने वाषि पात्रे कुष्णा हा या दिन श विश्व तो पात्रा माना माना पात्र व वारा पा दिन पुर र्वयं व हो मो हम भा न्यका निर्मा ना गरि विका जीतं न्य से वर्वतं ते। जी शह संवदिति सः ने मम मुग्रतं ज्ञान-रत्याद्वातं न दर्शनको तुकाविन पुरता गरदं व सात्रे वहार नागरा वहन चो। विस्त्रवीर नात्रोरं नपति वेस्नवाना निवन कुर्तिवास्त्रविका निपायविक्त वेत्। भावेरते वृत्ते व ल करते हिना जनस्य दिन दिन तस्पप्रापं तीर्ष को हि समस्यते। ततस्ति वी शीमा स्पे च सप ती कान् हि जो तमान विश्वाला तान हो कंबा पन्श्रातमान निमंत्रयत वरान्द त्वावते विश्वन राम यम्प्रमभ्यतः। तस्याद्रवेक्तं नमं तर्वप्रवेक्त्रते। अवस्तानीवपिष्यान्यामां वारिना CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

न्यनोगंकाय्यक्रमं अस्। काङ्गिक बुलिनेर खावि नयं प्रितन्त्रणात्। क्रार्तिक ब्रितनः प्रे साविध्नवाया वर्गाहिता।।रंशं कुलीन शक्ताद्याः राजानेकि करें प्या।विद्या करे वित्य यत्रति शति शति ता शति हानि पा ना पा ने ति छ ति तत्र है। वा नि स बुति नः प्रापं मर्चा इतिकारिशाः।।नसमर्थी भने इतुंब्रामा विद्वतु मु विभाविश्मि विपेस्तरन्द्र सम्मयनार्थ ने वस खायो ने धन भा न्यविकारे का ति। इन्तें वते सनि प्रमेक् रते मनुष्यः कितस्य तो चीप रिक्री स्म सं वृग्न व ।। रितिक्रिय प्रयू नामाना मिक्र प्रमान के रोपा करा सम्बद्धा नार्यस्थान्। त्ययो उत्तेषातिनः सम्येद्र पापन विश्विन्दपात न्यू गुल्मपार्यातं सविधाने समासतः। क्रजीशुः स्वतः देशणे क्रप्णे इधा प्रवेशती। वतसे पुर्गाता या पान छ प्रीत्य प्रवेशव तुत्वस्याउपरिकारु कुर्या सर्दिक्त राज्ञामा विष्ट्र राज्या मारी श्वर कुर्या दाना विस्तर ता सत्येशी व वत हीरं प्रध्य कमरक्षा भिताम्। हिरेष्ठिर शास्त्र प्रम्पेन्य स्पान्यप्र स्वान्य व पणाणार्वमा वमना पद्म एका ने बाक्षा क्षेत्रं कार्यन्दन प्रध्य पनिक्रम्। ध्रपरी प्रमेने वे छेनम स्करेश्वरिक्तम् विस्वजीनेततः कृषे विश्वरास्त्रविष्ठा विद्यानिस्निति भावमित तः। वाह्मणा प्रयुग्तव्यं जो विश्वप्रवितिष्य। प्राप्या व्ययमा विजय मेवच ।त्राम्भदेशेवसईतोमइमेवच। च्टिमिर्च एकि सम्बद्शेमा श्रीसम्बद्दी

की

स्पिक्तरम्पायस्य यात् लेशीम् विद्याः ए जात्वे विताः। तिनारं वृद्ध निक्क विनारः त्यं त्यां भवादि शुनस्पानिक ति देवे स्पशार्ति गाः। विश्वने या समस का देशिन्याने वनार दाए न द्वितमासन सर्वे जीति वते व मानारद्वा वा इन्ध्रार गन्न व्यक्ति माना स्मृत्या स् निहासं प्रा दने तसर्व क्षण मिने । प्राचा कः शिवंद के मां ले निया पर्व तना सर्व देवे पति दतस्वक्षराग्रासिवत्राणवद्भतः शिवष्ठरंतावत्रन्त हद्द्यन्। प्रत्येम कम्बीगा द्वान प्नभी व गोशिए छ स्तिन इस्तिभी इस तो ताता ताता व खरा। यने वनः वनः ए छः सति व ने वियन् पातितः अकीवगुपरिणः नेनिर्भत्यवचा बचीत्तिप्रपाद छ माने पिकषं त्वनी तर्ग च नि श्वनत्वा हत्व व वेरा करते ग ता हित दुर्मते । सारदं व वाह् सुरी प्रति व ती व जी व जी व हे नह ह मानेनासकराहे की व त्वमगहर्ने व सस्मानात्रीत्रेन इन का जते असा प्रहें विशे हसा बहुमानिस्तां हा ताझ विवृद्यान निर्देश है वह में हम ता सी तुंब व के में। पुर निर्वा नमोदेवा अदेवाय्य्य का प्रथिति। वितर हो ए से वीषन मी अदिन सिन्या गिन त्पापवड्रम्पाष्ट्रसम्बे । वस्ति संस्थित के विवस्ति ने प्रदान प्राप्ति ने । वस्ति । ने प्रदान के किथरापन्। निमेश्वसिशिरहेर्नेश्वसिर्णप्नमेनमः। निरदेशकेशीएवं स्तेतसिर्शिश ष्णात्रा नगार्हा। संहर त्रपन ज्या मंत्रि भो की दहन ते मं। विरंगर प्रमे बुलन यो ने सा नण तथा रन्सनी ब स ने ब जी हो तथे प्रणे ब ना । प्रहार स्वापा पित हो कि देव ले पा ही रहे शर्मा

सक्त

१०

वती स्त्रतो देवादति हा म्यं जुरुपात्रि त्रण पंसम्यानी त्य चे देव देव देव त्य देवा ना नपम्र कर प्रवर् दिस्तानिप्याशिक्षेष्द्यात्यप्रामेत्वताल्यापुनर्वं समाप्य चेर्वं रचतुन्त्रीत यातते मा किए ने तर्ने प्रतिविधिव वद्गती। गुरं बुति पर्छा ने वस्ति के र मा दिति। सपति बंसम म्य की तो श्रा वि पूर्व समाप्यता । यहा सरागर देवशः स जो मम सर्वदा। अता दस्मा खु से ता विस विजिन्न सत्ति क्या।तत्त्व ने शं मायाति स्पर्मे बास्तु सत्ति ।। प्र ने र्था स्तु सक् ना सहित त्पंममानीया। देशते वे स्थाने पा अप दिति देने प्रमार दित समायता निवासा देव विसर्कित । तामचीगुरवेद यादलपुक्तं तराबती।।तनः सहद्भुउपुतः श्वयं अन्ती तभाविमा नामानिवना प्रतपसि विधिरवे विधिः स्थतः । एवं पः क्षरते सम्पन् वानिवस्प बते नरः॥ विषयः मर्वकामायो विस्र मानिध्यमा प्रपात्। सर्वक्रीः सर्व तीचे सर्व दिनेश्चपता तत्वीह गरिए ते ते एं सम्प्रास्प विधान तः। तिथ-मा स्तिसदा प्रत्यास्ति ए। धनाः न्रानादपः। विधानितिनता परशः कानित्र बतकारियाः। दहस्यिता निषायानि बिना शेषाति तस्यात इति परमाने बदनी रपर्तेश्वतं कारिगाह्यर्ज्ञ श्वेन विष्मा रहगोति म तम यो वे तत्त्र प्रपति वे ख्या ये तिसम्बद बतकर्तातात्र वेस्ट्रतंपत्र तार्वे ब्र १३पविना शनं प्रभेता र तिकी प्रभारताका तिक पहाले ध्यापाणाने कस्त्र स्थामामे वादी अक्षमाध्य प्रशासाष्ट्र प्रह्म व । प्रशास वि तं वृक्षित् वृत्तम् ती

। यद्डवा

तीयः

शु

तांप्रवान्यत्यात्रः त्री प्रवारा ना वान्यात्रः नं यो प्रधाने स्वाद्धे वा प्रदेवे निहतः स्व देखः प्रतान्त्रसं स्थिताः ति विभ्रमणु ध्रेपं मानि निम्मण्यात्रम् प्राप्ति स्वादि स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स् यक्सरेलगर प्रथक्षेणजेवंबुलन्केन देविकितंप्रामार्जवस्तस्पिश्र शहरेको होत्वावह सश्यसमुद्रस्पमं पनं देवकार तम्। न तो पहर्गा वेवदेताना वपराभवमा सञ्चल के का मा सक्षितं मणने तक्ष दूतसंवेषपामा स बस्यर शाक्रस विधी दूत विषि छ पंज त्य स्थापी प्रापसत्वर्भार्वार्विमे दिन्द्रदेवन्द्रवान्यमव्येत्। बन्दर्वेवान्यम् वेदियानने श्वरः द्रताहे वेषितस्ते न सञ्च पहण्या तत्। करमा से पा मम वितामित सा नारा दिराए। भी तामि सर्वे र तामि तामिशी बे प्रश् छमें दिति द तवने श्रु ता विस्म ति विद्याधि पः द्वान् वस्त्ररं इते भवन्ति धरमन्वितः द्विउवन क्रिएडू तेम या प्रवेमिष तः सागरी ये था। श्वद्याप द्रया विस्ताः खबु सि स्थान्ति ता तथा । ज्वन्य विम द्रशा ते न रिक्त ता दिति जा स्तया त स्मात इस जाते तम् प्यप्रतं कि ल शिखा व्यवेष्ठ रहिवान विदिव न्ता अराते जा प्रमान जैस विहतः प्रविषः सागरीद्रम् विद्वालयम् स्वास्य सर्वे मण्न कार्णम् नारद्वस्य स्विति सिन्निताद् तस्तेनेन्द्रशाम् अवम्यात्रिद्वववंसर्वदेशाणकः पपत्रथा तिनशम्पतदादेशा नो बात् प्रस्तिताक्षरः । उद्योगम्बरो त्रांसिई हेविजिगी वया तक्तिया सरे दस्य दिगमः वा णता सत्तरम् वितिज्ञाः प्रत्येष एक कोटिशः को हिनिः स्तरा अपने मिनिशेमा चैर्रा वि

C-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

1,14

राम् ११

ग्तम्।भ्राद्रतेष्वसम्यानुभागने वस्य अवश्वाद्यात्वात्वात्व व वृत्वेष्या याति भागने वे कष्रात्रात्व नित्यामित्रदेवणे देने वपी इवेत्यना रहे के व्याति स्थाने करे धत्यामित वश्च वर्गामिति। मप्पाति भेज गर्वा सम्म रस्य असे जेवे। लाब तर के दे रूप त्यमगा त न न न व । इरत त्म सम्बद्ध न प्राची प्रशामिकः। एव गर्ने स्वस्त्र स्वतस्वना द्वि री सतः। श्रुत्व व्यान प्रयो त न दि नतितिस्तितः । तार्वत्ममुद्रस्यात्ते द्वातं सद्दर्शह । वृत्तार्गमाजा नं द्रष्ट्र समुद्र । वृत्ता अति । । प्राम्पश्चिरंसा बार्य तस्यो त्येत्र निवेशपत्। तते ब्रेस्प वेशियः स्प्रम्प वेशियः निवेशियः निशम्य बतताथा तुर्वाच्ये सागर की श्वरीत्। तमुद्र वाचे । ब्राम न्मो तिथु गंगा यो माने उपम मयनका जातकमा दिसंस्का र कुर्बि स्पने गाउँ । जाउँ द्वावा एवं वद्ति पद्या क्षेत्रका तः सागर्नात्में जः।।ब्रुक्तारा मण्डीत्कृष्टे विश्वन्यं ते मुहर्म् हः।।श्वन्तत्तित्व कुर्यत् ने नामान्याम् र तःन्याकचानिन्तः क्षार्वस्त व स्रोपे स वसागनस्ति व्यावन्या व विनान्या विधतं पसा दनेने व ज त्यमा। तसाजा लंधन इति खाता नामा भव तेसी। नधुते व वतर्गाः स वंशा वार्षण्या। श्वध्यः सर्वभूतानां विनाउद्देशविष्यति। प्रत्यसमुद्भत्त स्त्रवेवातं गिष्यति॥नाद्दुवाने रिसिंधस्त प्रमु न वदन स्त रा। का नने विस्त मं रूपं न व्यर्थ पं म पा वता नि व्य पन ने वि प्रमुखा त्ततीप्रयुक्त स्मे स्मो तो १६ दुः शहि विताः । स वा पि तो श्राप सहद तो नशी शशा जो शक्स। स

तांर

72

दशादिवानिद्रावितान र त्वादे सः सागरने दुनः । शंखने रिज्ञ वर्वे : प्रविवेशा प्रश्वेती प्रविद व्यनगरिदे त्याचे वाश्व प्रशेश प्रभाः । स्त्र वर्गा दु गुरु प्रश्न स्व व्यवस्थ स्तापि ताः । त तस्त वृष्ट्र सुराधिकारे क्षित्र दिकानगिविषय मुद्रदा । शुक्त स्ट्रस्य वरान्छ प्रवृद्ध प्रश्नाव पंसवर्गा दि गुरुम मं न्ट्यार अधिव प्रक्रा वस्त्र है के प्रवास वती वह वे द्यात्री प्राप्ता प्राप्ता द उवान । यन देश्यम या ने हृ ख्या देना सना सना सना स्वास वा किया व के विता सर्विधिस्तो तेष्रवरमः देशकुनः नमामन्स्यकुर्मादिनाना श्वक्षेत्र सरामक का या याना पातिहर्ने विधानादि सर्जा स्थिति स्म कर्ने जना शेख य मारिहस्ताय तस्तु रमाव झभा यासरासा विवृद्धिक वृश्यस्या पतस्य व तास्या व तास्य व मारित संताषिता मुत्रा दुः रबाख्य संवास सदेभाज च विस्ति ते अजे जे शतुः या प्रना भाकि ने दृष्टि न्त्रायतस्य न्याः स्त्रान्तास्मः वार द्य या सिक् ह नाशवनामस्तात्रमे तत्यर व्यास करानि ससे के हैं वी उसे ते सपपाहरें। इति देश स्तुति या वर्ख के ति देन जिहिला ना नास राशामाप्ति विस्तित विद्यता तदा । सहसी त्यापदैत्यारः इत्या खिन्न मानसः । त्यार ह्या रहे वे जा भ्या स्था वनन व ब बी रा विक्तिया व । ज व घर राते भा त देवां के देवे हैं तं तिराहते अपियामि अपापाति वरे विता खाइवा सहते व स्थाना प्रमान पिसर्वशातालयं ते व्यवभागा प्रदेवधाः स्त्रपति वी व्याभागन् वी व

पतिकारि भिः। ज लात्रिप छ ऐरे सम्बद्धाधि छ ते म चत् । निर्प छ स्वमरा व तो देवा प कपरीत्रताः । वरमाहत्य ति छ त हासा देस व लेम हत्। तेतः समभव च देदे वराजा वसनका । प्रशतिः परिश्वेकरोता पपर्याशकि। तेना संसप्या वत प्रप्याप नस्परम्। तत्य्यो नाभव क्रेयर् विरोव पवार्ष गी। पति पा समा ने श्नुडा नारवनप पति पि व्यानतर्गि मे मि संधा भ्र पर ने रिवातन प्रदेश ताने सा भाग्ने व स्त दित च ना विद्यमान्य तसं नीवियामि च तिस्तो पविद्यमिः है वा चिपि हता ने देव व क्रियादिकी वधीःसमानी बेंद्रेगादिः सप्रनः प्रनः एनः हिबादिवान्ता मुद्धेप्रनरे वसम्भिता न। जलभरा का भवशा भारतीय बाक्य मध्यी है। जलभा उवान । अपादेवार ते प्रस्ति होत कर्षेष्ठ नः॥त वस जी वि जी वि पाने वा न्य नेति विष्यु तम्। एउउ जि दि वी प्रधी: समानीपड़ेशादिरिकारासुरा बाजीव प त्येन वेशी बुद्देशाद्रित छ एहरे। ना ३६ वा वा व त्वसामन देखे के बीला दोरण ब्रेंस तरा। पा क्षिपत्सागरे त्रंगि प्रवराया ना हा दवम ख चर्वान्हतान्यवाद्यादिमामहरू तावत्रवादितंत्र तात्वात्र देत्यहतं प्रेगां विष्णाभयविद्धतः। स्थागत्पद्गात्मे ने द्वाराष्ट्रात्मे ने विग्रहः। प्रता यधमसदेत्य नायजनंपतः क्षेमः। तुरंशमबी सब्सार श्रंशक ने कि तम् नार्वा क न श्रिकातह न न दे न म यहि। हानितास्त पा दै यनव ध्रमानास्त प ताप ने दिशो

१३ का०

नवंधरङ

रेषान्सर्धरा सतमा चषान्य स्वपुरे ना गानक त्यो देश न्य वसविति न व धुर्मि गापा स पाना सवनाः उना नि वेरसान्य न कि ब्याधि तो नेयु दुः रिवृ तो न क्र श स्ताया न दो तो द इस्ते तरियन स्वया या अप व शास ति । एवम हिंद्रशास ति यनि दे अमि गासम्य क्र सहस्त गार्टी व्हरति द्वारा सम्य तस्य असीवित्विकितेश्वीरम्ण वस्वित्न । इतिश्वी बद्रा ना को बन्न हा वर्ष क्षायः। तर्देश्वान् विमान्य निविधिवद्वेनवेन्त्र तिमित्र संविद्वरियं तर्वे वेन्त्रेन गादं र प संत्र में कुत अया गन्य ते ब्रुह्म न रहे वि ह छ त्व या क वि न पि दर्प मि ह वापात स्त य जापयमा सर्वे नायद् वाता । जातः के नाश्योव रहे त्ये न्द्राहे यु द्वया वित्रो संपासहाकी व द्वयान स्मिशं करम् वापना उत्विस्ती गों क त्य द्वमम्मवे ने किम ब नशा की गों विता मिति स्वीपिते। तं इस्तिम अराज्य धिवत द्वीम मन नदी। द्वारी विद्विति दिन द्वारी विद्विति द्वारी वित्व विनिका ।।ताबत्रवापिदेत्रोन्द्रसम्बद्धःसंस्थताममा।तिहित्रोन्द्रतकाते हे ले त्यानि धिमिहा गतः। जित्समिषि मिमाप स्पन् स्वीर लर्कितां ध्रवेर ते ईपा मि शि बोदन स्वि लो बोत्स स्दिमानी पर्याक्तवराप, ज ले ही कि महन इन्तराने न । एव ही प्रमुखे ने पर्व तथा करें। प्रमीपते वीतराजी पिति प्रणामनाषारिः श्वं भी ल्या एव छन्त न नेपितरा तथा त्या राजा सतः। अत्यक्ति शिवादन्य श्विती को ससम्बिभाव। भ्यू परिनामक्ष्या दा प च वित्व द्व शोस्ति ताः। तथाविता नवाबत्यां क्रयेगासद की ध्रुव स्योगस्याः उनः इस्मू क्रयं धाता विसर्जन ससर्जा परसत्तास तसमेकापि नामवेत स्त्रतः सीरतसंगे हे. सम

राम

83

र्प्राश्मन् वा बुब्र भगोवन्ना दि प्रीता नतवनेवा यममब्ध्ये तत्व देश । इत्यक्त महा मुख्य रवनक्रमशीक्षक्रताविसर्वेगा घरो के सम्बद्धाः स्त्रवित्ते स्वयं उता द्रामान्य त प्रफेडिताः। वात्याचि वर्तिता देता वस्त मुख्य मार्थनाः। नता न वं अरो हसादेतान्य त प्रकार तर तर है त्यन पने की धार तती विद्यं समन्य गाता ततः सममब घु इवि सह त्ये इ ह्याना विष्टदत्तन हृद्ये वागाने के न नाड पत्यात्ता है ये समस्याना पास्त्यान्ताता स याहत्यम् इम् द्विपातपाम् समतिति।विसर्गरां वरव द्वन विकेदप्र सिन्निव तावत्य र्यमित्रमान हरमाहना।तनसावाउपदेनपुष्ण नमरावरने।विकाममें लिलेकी वे जा उमिर्नाद्यनाहीमा एवं ती सुविरे प्रदेशत्वाव ए प्रतापवा ना उवा च देता राजनेता ती रपाति रागविव्या ने।विरंबरपंदे से न्द्रपीति स्थितविक मात्। श्रदेय मधितद्विपत्तेमन सिवर्ति। जलधा उरावायदिभावकार के सिवरमेन दरस्वमे अ अभिन्यासहते वाम इहिस गरागित्यानगर्ड वार्वे तिषे सुक्तासमग्रमान् देवजारीः सहाकाले धरंना मेपुरमाग्रमे इम पासक न न सरस्व देवा नाम चिना रेषु दानवाना स्थापिय त्वासह कि ससनरा जान्मही तान माहिकेशधर्विति द्वाव पत्तिविद्वात्ति स्वितम्याति देति व्याति व्याति व्याति व्याति व्याति व्याति व्याति व्याति व निर्वनिदेशिक्योगंसमहावेशी स्वापिताशसिषादीन्य नपड्नतंत्वनी देवजं धर्वीस

विव

周

र्रह व्या

किं असे ममदेवेश तर जा पप्मां श्रमे। दि ज्य का संभव में त्य नः शी हुं मां सं तं ह सावा द्याः। नाइद्ड्यादाशिवनिवसमाज्ञक्ष इत्साद् प्रस्क इत्स्य हस्त की देव मासे जित के को प्रधासनार हिस्सा कि रो ने के प्रधान स्तर्भन ते । प्रत्ये भी मद महारा ते ने वान सिंव स्त्रयः।।ई ब्राह्मवा विश्वसं ती हिम ब्राह्म त द्वार गः सरा। त्व र्वो पन कर्व विने वते मत्युवं केरम्याना दुइवा शान पाय कर निर्वे त्य हा र की विष्ठ विश्व स्थितः। ना इपित्र च य पर्व तथा मर्डी द पान वेत्। एक विस्ता पत्त व से पत हु वैरस्य ने अत सववंरीभ्रत रिनम्मी एपाजतः।।त तश्वरा हः पुनर्व जातमा न्या नम्भि विम न्यमा नः समित्यसर्वे अथवा वन् वनाव धरायस्य विविद्यं तत्।। इतिविद्या वार्यं का वस्तित जिस्सायाया ने इस्साधाय। निर्देश काया। न न धरसा ने का को का का वा का ति न विग्रह निर्जा गामान्देना ना के हिमिः परिकारितः जातस्याग्यतः श्रुको एक स्लान्यस्य ता भव त्। मुक्र र श्वंपत द्रमोब गान्य स्वायित सत्त्र। दित्य से ना व्यते स्त्र विद्राना ने शति सारा विराजननभस्त्रातिष्र द्या व्यान्ति। तस्य द्या तत्र द्या देवा शत्र वे रामः। यून तितास राजग्छः प्रावनते विति ज्ञा । विष्ठान ज्ञानिक प्रकाति वदेवापिति मायमा तदासाइ स गाणीय अहिसा अर ने द न मा दिस् बान न नं भर के विहा नारदुर्गान्। स्तिदेववन् सत्ति प्रत्यवस्य निम्न निम्न निम्न निम्न वर्षेत्र निम्न वर्षेत्र वर्षेत्र प्रतिदेव वर्ते प्रतिदेव वर्षेत्र प्रतिदेव वर्षेत्र प्रतिदेव वर्षेत्र प्रतिदेव वर्षेत्र प्रतिद

T?

श्रम

कित्तस्पतावर। त्यान् नवदेत्वे दुसर्वरत्यि पृत्यव। एवस्त्रान्यम् नेमिषिदे यगर। तद्भण्यवशाहाती दनगञ्चर विश्वित्राण्य यसंवेषयामाससूद् त सिहिब्स सुनम्या सम्बन्ध यत्रविविक्समायविमितिः। देलाशमश्रमः कुर्वन्दश्युः उर्वन्दश्युः अर्वन्दश्युः अर्वन्दश्युः अर्वन्दश्युः अर्वन्दश् रा से स प से द व ई सं रबा गरी नते निव दित ता पदे शा नदिना सप्रवेशितः। ज्यान्वदेश्र भासमाये वित्रां स्वानिता राज्य न द्वारिय प्रमान कार्य महाराज्य प्रमान प्रमान भो । मे तरन सर्व र तस्य मा ता शर्रा वय म हा जा रप्शानवा सिना निन्य पश्चिमा स्मव तस्वादग्रम् रस्तेभाषीव पहेमवती अभा सहरता विनाचा स्थ्या वसी रत्त्व तिता तस्या नामेव साया गणने विभिन्ना शानस्ति वो नाग्दा वी विदत्ते व तरा राही भू मध्यान्छ त कारिश मश्चम्य त्यु र बोरो इसी वी शति समें नः । सिंहासः वृद्धन ति के सन्बी जनपनिमहान्। इ. इ. का. शुक्र तनु के सिंह इन गए। सत्रवादि तुम्रे में द खारा कर्म पार्दित। अधार्वेद्रतिवेजने वहिः सन्द्धारतम् । अल्याबादितमार्धस्ति इदेशाने वादित नैवारावध्यं तमितिहिन वीर्नि में भवति वा त्यां मामहादेवावादितं समुण्यतः प्रकारे वीव व स्त्रता द्वा स्मास्य तरा बुकी ते छु वे ति पुरुषः श्रु त्वो गृह तत्या असी स्वरे । गृह त्व त्रा से प्रकाम महिन्या जित्र महिन के का का का का महिन से हिन के महिन से किया है या

स्य

सारक स्थिम साद्य भस्त वर्ते वहारिए स्थान मार्ग विस्कृति स्थान मार्ग विस्कृति स्थान offe 64 तादेससे सगणास्त्रणा प्रसानवदनं हरी जिन हुन्छ ६ दुर्मितः। अवप मध्यतहे साने ह नामाभपादिताः। वाष्ट्रकाष्ट्रता पद्रत्य की गाँ ते गा सहित। अंग्ने हात भपा से ने इला मर्षप्रतामयः। विश्न भए में तेना नेपाकालने मिण्डकी स्वान् विय से वार्याना सगरा से नामका बार्या । हिनं तः शरवर्णिया प्रदर्श वव ध्या हका। निती दे स्या से बार् से प्रदर्भा निप्रवयुनाश्चर्तिहरवंदिशःसर्वागरासेन् इनेष्पर्याक्षाः शर्शने भिन्न निरम् रवाष्ट्रगा अवसते विस्ता मासा नक राय त्विव न पिति ता वासमा ना श्रे वा विश्व स षाग्या । त्य सा से ग्राम अभि ते सर्वे वि विश्व स्वाभवत्। ति तः व अ जे खब से वि को न्या जी स्वति वरकार्तिकण वरान्वितादे घरान्यस्य तिवारण मास्नम्बरण ने । राज्य तिकामका मालधरीपा आने लाय माला न विष्ये देशे थापः। नारद्वना ने त जरातिय ती न द्वा नेदी अमुख्यामाना न्यूमकी दम्ब धाव ते देव प्रान्या निहीं नेद्र दं दिन अमिल्लां में ने दर्तिया नियं भः खन्यु खं वेगा दुन्य धाव ते पा कि तिन नियं भः का विकेष्सम्प्रदरवं विनः शरे हिदिविक्य धवेते गामवितः स न्याते है न तः एकि धर्श क्रिजीव ज्लेग हरे वितः। तो विजिश क्षे बेडेए खण क्षातामण नवेत ति ते ने नी इव CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नहतःसिंध जस्त्या। तहहं वस जा ताय स्तावे बुंद मा तानः। श्री भगवा दे व निर्वा शंस मवंत्रवामातः वास्तान्यात्रियः। तमपानिहतः संख् त्वमने निह्नविष्या द्वारं वा गीनापमिमिर्महाते अस्ता हो वंध्य मपा दिवैः सहस्व ते अंश्रास्त्र पे दीपता मम्।ना र्दे वान्। ज्य वि स्प्रमुखा दे वाः एवते जो सिद्दु स्त्र रा ता है के त्ये ज तीन के द्वास्त्र ना म्बन्धहः। तिनावरी न्य हा देवः सहसाशस्त्र मुस्ति। वर्त्र सद्दर्शने नाम ज्वाजामारना तिजी वेरा माति जः शेष ना वतरा वर्ज हा तथा त्र रः ताव ज्ञ व धरो हु के ताश त व महिम् शाहत्त सर्थप ती नांके हि तिः परिवारितः ने ह सा विदि ते जगहर् व सर्वे प्यागत व्यागरीत रत्रम्न हा त्रव्यायाति त्वरान्विताः नेदै भवस्य से नो ने स्वास्विधि वा स्प अव ने राजिताः सर्विदे तासा श्राद दुर्म्य दाः।।ततः सममवद्य दे के ताका प्रावस्थान। प्रमणह तदेत्य कं बीरशस्त्रास्त्रसक्तम्। निरीयदेगश्यो है निश्वनेः बीरहर्षरोः। गना स्थरपेया देखना दिता म्ब्येके १ प्रा शिक्षिताम र वासी हो स्थाप पार की व्या जत नमः प्रा मुख्याम रिवसंस्तान्यान हेते रचना जा रचे नरे असि खिरातत बना हता न लिए शहू में रिवसं दता । प्रमण्डत दे यो हे दे त्याहत अशे स्तथा व सा स्टामां स व का व्याभूरणमा भेव ह दा। प्र मणहत्रेतां वान भाउने वः सम जी वपना । एड एनः चन रवे व म्यतः संजी वनी व लात्।

क्रा ०

सन्नादेशंखनेरिरवै साण् अभवनित्र नाद श्वसेन मेरु मुक्त स्तान वेधर शर्योते. नीता रपटलेरिक प्राक्षायिक रखन्म न्यासम्बद्ध समय प्रता ग्रा शंप श्विमित्ति ह्या शेला देनव कि सरेः। बीरभंडं वर्विशासाननायक्षक्रिश्वनः कानिकैयस्तराहे संशान्यविद्याध्मत्तरः अबुर्शाशक्रितिकिनः विश्विद्याक्षत्वमानसः ततः क्रेथ्वपरीनानः कर्निकैयं अतंब्धरः गर्ण माड्यामास स सम्हान त्येष तार्विव नार्विव गार्याम यत म्हारी ता तो गती खरः क्रधागराप्रश्नाष्ट्रनत्। धोरमङ्ख्यावक्रीहिविद्याधरान्वस्याम्यामश्चर प्रमान स्थान स्था तेप्रस्परम् विरमदः तनस्तस्पर्णनवारीन्यात्मत् धनुष्टिके देवैत्यस्पप्रस्तेपरिवा युधः। सवीरभद्दं तरपापि अम्पे ज्ञानि देताः परिविनमि हैं सवीरभद्दः परिभिन्नम् द्वीप्रण तभूमोर्गिर्सिरं समुन्तिरस् इतिमी प्रप्रामीका निक्रम हाल्वन हुई नेध्यायः। भारदाना प्रा तं वीरमद्रत्र द्साउद्गाममात् याग छत्तर संगित्वा केश मा नामहेश्वरं अवयमे लाह लेख्नताराणां ने न द्वी वरः । भूभ वृद्धभान् हः संग्रेमं वहसिव नार्द् वर्षे रहमायात मात्मेक्यसिंहना देर्जाणाः प्रनः निर्वता संगरे दैत्या वित्र व्या वित्र वित्रा देता वित्र वित्रा देता वित्र वित्र र्ष्युसर्वे विद्रुष्ट बार्निक विते र स्थाण तकानिव तक्षण ते अप जाने धरो देना ने विद्वता खेल सगरी की धार्म धार्म हो से वन वागा नसहस्य । विद्यान दान विदेश

१५

रोगगोः का तनि मिष्यत्। सम्भित्रवरुम् ने तुर्षंसारिषाति। सा तनि त्रात्मत्र हाथ न श्विक द वेद न शान रा वेदी खरा ने न त बेदा स्व ह न ए द साम शान कि न ह द के हतासी हतसार थि। अदि शिष्र मार विशे भादिसी व्यान पता ख्रिय से में जारी ख्रिय र पति वस कहनी एश्वमानी शरकाने पर स्पर मेविध्यताम् जाशास्त्र तदा श्रमे हिदिवसाध प विशा सारिषं बित्रिमि के ही: पा तपामा सुभ्द ते लें। तता तिकेपः श्रेमे वि कारा बच्चा गरा छिप्र मालकेविनितिश्चिम ननादना विवा । मालकः शराम न श्वेचा न दे केवेद नः। निर्म्वार रश्चपतितः पदितिरमव इपातती संबोदरः श्रेमहत्वापरश्चगहिता भ्यपानपत्र कम्मीम् विसंगर्त्य नः । का नने वित्रिशंभवना युमी ने गे दरेश रे। एउ प्रज्ञा वृत्रः क्रेश ताने मेनमहाद्वप्राभिषामा नमा ने अविष्यम हा वल भ्यम व त वजे न भ त करि र तसार कियागरा भेरवश्वापिव ताल के जिल्लीप्र गांशियश वर्षा जिल्ला नासंबाजगा खापितमन्वयः।।ततः विलिबना शन्देः सिहनादैः सब्बरिः। वीनादिना इमनकै एपिनी समक्ष्यान तिती स्रान्यभावना सत्यंति स्रय नवान इस त्या पति ती स्रान र त्याराण आरो। निने व स नि के प्रश्वसम्बात निग नि न बु तस्त ते देसा निन न र श्राधित सिनारते हैं ते : पितते मसिने स्तथा वाक ती मामवे से नाव वस्त्रवद्गत व । प्रविधि स्ति नगरिन हसा नागर नंदनः रियानि तिए ती के नगराम निम्नु स्ति प्रयो हिस्स १वरण CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitižed by Sarvagya Sharada Peetham

न्त्रभिर

ने इ

Par y

विमानः सगरेस्थितः १ जगामविष्ठिरिस्त्रा वनर्जारनं धरं परम् व्यवस्थाने धर्मे व्यवस्थाने स्व दुित्रत्तामिपात्र २ पावद्दर्शवार्धनी पार्वती द्वजे प्रवरः। तात्सवीर्धि मुम्बेन अंग्राञ्चा नवतरः। ह ख्यु मातदा भीर पावसे भ पविकल्या जगाम त्रहिताबेगात्सा तदो त्ररमा मत्ता ताम द ख्यु त्रतो देत्यः द गादि खु हो तार वा ज वेनागा सन्यन्द्रिपत्र देवा राष्ट्रमध्य वार्वत्य विमरुविस्त्र संस्पर्याम नस्य ना नावद्र र्शतेरवंसीपिवि संसमीप्राम् पार्विस्तिनि विक्षतेन धरोदेशः इत्या स्मा इतम् तिलेन विधितेतिसिनेष्टितेतस्य दुर्मितेः अरिकान्वान् तेने वृद्धितः पंचा व्यवस्य न्वया महिना न्वया सभावेहधाः पातिब्रामान्दुरिताम् नाइद्रह्मा । स्व तर्थान्यातामा में हस्य सवुद्र्ये तदा ततः शिक्विस्त्रितम् नसः तपष्ठनर्जिमाम् प्रजन्धं रह्मा स्वापिदेत्यः युन्राजतः चि वेर्ध्यंश रों शे सम्बाकर दरी । र स्त्रीवप्रकार का सम्बाजन असे प्रवास ने वेच देश अपः।। देश विस्त जीलंधरँगता तदेत प्रमिद्र पाति बल स्वमंगायस न्या वा करो ना तिम य्यवन्य दसादेवी स्वयमध्ये ६६र्शक अर्त्तरं मिलिक किले ता भ्यकं दिगम्बर्स किस्म्य न भ्षा द्वे क व्याद गरा से विते | दिल्या स्प न वा मंत्र साद वी में हिते शिरः। इव शरे सा गरे मुग्सहते वात्रनासह नितः व बुद्धा सावाना ने स्व देशा श्वीत मन् द्र देश दिनमो पि से सि दें नि प्रवृति मुहः। तद्वि सिति शानार दनी भयविक भी कु ने विन्नो (न स ते शर्म) विस्तुवन्य वनद्रमन्त्रं पानने वहरात्म वस्तिद्रा ततः साम्यम तीवाः नद्दशातिव्भीवशोष Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वा ०

وو

हरा स्व द्वारा असे हिला निकार के प्रति के स्व के स रकतपतमतले। विद्वरमः शिरःकीपत्रपावरश्चाकितत्विम् वस्त्रमस्यव्योगे नाकरे दिविधा शरीवधान बस्परदेश पाश्चमान्य हुनि इसमेन्द्र ताः के बिन्दे विस्वातीनि एकताः निश्व अरसरा स्थातंत्रनाः सिक्वाहितापणानितः कोपपरीक्षात्मकोण इउन्तिधरः स्थातपामसम्बन रेवजाशितसमस्य ना जिल्लाचा प्रधास्त्रायमणसर्थं किमोभिन्हते स्त्राम्बिक्ति वं ते सि तदर्गभ्यं धरा नारदड्नानार त्यंकावारा सकत्य नदा नदा स्वास्थाना ता सामा दिनिया निर्मा हिन्दि रप्रमित्रवानगरमन्ध जेखन्धन्य विष्य दिस्य मिः।। सिक्रिन् धन्य विर्याण विष्य ज्ञान भ्या न्या विकास त्र के विकास के ति कि त्र विकास के ति विकास के वित्र के विकास वहवनवागा है के शमानम पा सत् । तता न ल धरा दे साम ता र इंव का थि से सम्म मा गंगाध बीम इतां उद्योहिनीम् तिता नग्रंच न कत्रिध की प्रतागाताः ता ववेराष्ट्र में इव वार्य तिस्य गपरे। तं इस्रा महरा वन प्यानिक गर्विमिति तः। पतिता यपिशस्य गिकरे मोनविवदशः एकागीक्रतमा के स्वरंदे स्वा ज्वां धर्य। कामार्त सर्जामास प्रवेशिकास व ता प्रदेशेक निश्माकी स्पापित्वा महाबद्या दशद्दिर पे गस्पितिने व ता धरा प्रश्व व मा रूठः सबम्बन ते धर विषय असमाना ना का पा में नवर हा मा निकाय पे सावी मध्या न हरी नए से मवत ।

तः। देशमा विशेष पद में उदे देवे भी तमन्तः। अयुष्ट नाषि भार्ती रेद्द्या हिले तमानसार में त हनमध्य स्पात प्रक्राब्र वास रण्याक पानित्य तस्पानित सा विस्त्र तमेवाहे। विर्वतस्य ने धरा एक्त बेर् ब्रुवन मन्नेत बेर्ब कि विकेव देहरे शील पर राशिकामिन का के सिर्वमया सम्बद्धार्मा प्रस्त स्वत्य स्वत्य प्रमाणे त्यप्रमा प्रमाणे व्यत्ये व्यव्य वी दिश् तो प्रमा ता वे वर्ष स्ती भूत्यात वमाणी हरियानः।। सं वाणि माणी दः साङ्गावने कियारा प्राचना नाम्य मसर्वे इत्रेशापे प्रतिशिष् त्वप्रागतः। नारद्वभवाद्रस्य सार्वाद्रस्यापि सार्वस्य विकाना विकाना कि तिस्य सम् मानसा तती हरिसा मनुसंसार नाउँ कि निमानसार नावेगुं हितः तत्रेवत स्पी मिति सिद्ध संह वृत्ती ध्यमानाविष्यो नशंगता। द्वासी वृद्धा राज्यका ने का हात्य का माविस्त ने ने जाने वृद्धा ध्या । ना २६ दुना न तो नानंधरी देखा उद्दम हुति विकास स्वारमा प्रयानी री स्ववंद्रमा हुपान्य व । र्रणी र्थापरिगतां हुबा अदेतीपार्वतीशिवः विस्तु भयं भवे सिम्बे व धन्त तं दे इस्त जो रोत पा विभारमाणिके जित्रमान्सः ज्यक्षु एः स्थितस्य मिविस्र सर्वे राज्यम् मे तत्रेजने रा वेगा त्विभि विष्ण भ साप है: अपूर्ण संस्कार दे शिरस्य रित के दरे । ततो नजे सती मा पांवि स्थान से प्रवोधितः रो दक्षण धरा नरतो न्याना मा जाति भीवराः । तस्य ती वमहारी दंद्र पर स्थानहास सामकानुः संस्कृति स्थानं से जिस्के दिशा दशा नतः शापंदरी देवस्याः संभावि संभ पो । मन प्रधा दपना ने जो क्या ने सित्र विष्य तथा सनः निर्वा भीविष्य ति शितेः शरेः । वा राग दिशा रित

रास्सीसिक् बदनी देखा नगनप्रस्करी॥तीर ख्राबिक लाती वप्रायन प्रम्य ना दर्श तपसं सात्राक्षेत्रा नमास्य तम्भाततस्त त्वराष्ट्रमा सन्धान जो का तत्ते भर्गातास्त्र सर्गामण नामित्यभाष्त्र नाष्ट्रिक्तादिक्षार्यसार्यतात्रमं तर्हं कार्रीवतीकीरे वकार्विष्ठिया माति देवार मया वस्ता हांचा तो विभवों जती प्रशाम्प दराउव द्रियों वेदा ववनम व्या ता विभ का नित्ति ताहे त्यम होए इपद्मात्क पानिशा विविद्य पुषि दायि हरपण तिन साम पाउन धरोहिने मर्त्रोर इं येश्वं गतः प्रमो सत्र यस्त्र वं पुद्धे तन्त्र क्ष प्रस्तु ता ग्रेर्य य स्त्र द्वा भा मा के एषि का विषेत्र है में वे से ता ता व तियी का वा यो तो ते प्राप्ता जा तिस्व ते । तत सा बुल ता संगिति वती गंग नं गती जा सार्गण की कागत्य वा नरा वच तः स्थिती शिरः द वे ध हसी नी ह खाबित नप्रयासामपातमार्छिताभ्रमीम ई यसन इः खिता कमराउ ल जाने सिक्रा ने नि नाइव सितातराष्ट्रमर्त्रभावं स्वभावं सत्यादं के तीद्रावदेवा पः दुगस्वसं यदे द्विता द्विता विमेगास वर्षे न वदस्य च ब खु भं राम नागसंग य न देवाः संगेश्व वी विक्ति नावि छ नासह स कर्ष तापसेन त्वेने ज्या वा वि जापी नर पा नाय देश का रि तिति तर व ना ते स्वित वा वा म वे वी त्र बंदा बंदा प्रान्न देसान श्रेष्ठ ती वये ने ममिष्ये। त्व म वास्य पुनः सक्ता जीवना प्रमतो मन नारमञ्जानात्रिक्ष का मान गर्म प्रहस्पनुनिर च्वीता मिन्स् ना में जीविष है शक्ते उद्देश निहते अधि।तथापि त्वत्वपां विष्य एतं सं और पाम्यहे। नोज्ये वाचा इत्य तान्य हु थे पा व ता व तरा अवद

ति। संविधास्यर सर्वेशस्तु विम नार गी मा श्रहमबात्रका भिन्नो देशान विधि प्रती । जी री न नगी इसरी नित्र जाः सत्य नमा गुत्रीः। तत्र मछ त तत् का पे विश्वा स्या ने वृद्धा स्राप्त स्थान ता वा नित्र न भाग माम्बद्धाः। सा परित्र वाच प्रसिद्धां न नमा न्यू हुं। देवर ना विष्ट्रम्यो सः स्त्र ने ना गांत तथान प्रा BU ततः सर्ववतदेगः श्रुत्यातकाम नादिताः जीशेल स्मीक्ब्रशस्वेन प्राप्तितिन त्रा त तसांस्ता स्रान्द छा युरा तन्म के वसला । बीजान्यद इस्ते म्ये वाब्य म् द ख्रम्मिया ति अवः। प्राप्ति तत्र वी ना नि वि सार्थि जायिति हित वि वि वि वि न तः नार्थि भवतो सिद्धिति याति ना देवा ततःसुर्धः सुरिक्षसंज्ञा प्राधिका विविश्वित्य विश्विता न्यमत्त सपनिवसः सपितिषतिसो स्पष्टुज्यः। रतिश्री प्रप्ना गाना व स्पन्नित्र स्पन्नित्र स् 高 ने विकेश का पार्ष प्राप्त ।। नार्यस्व दिन्न मत्त्र ने वी ने भी वान स्पत्त चे भवनामानतीन तुनशीनेवधा श्रीन्स्पेतमाधा अद्वर्ग स्थाना भा नामानती स्यता जो री मना न तु ने शी तमः स त्वर में रहा भी में के पि एपा वा नस्पत्ये हका निस्त्र स्ति नप्रतिमोसंध्रमत्यस्य र्पाति शयविक्रमत्। हिल्ला पावनतो मेहात्वामा गहिन् तसातवाषित्वशीधात्रीराजनेबाबलाकिती।पञ्चनदमाः पुराबीजमीबिवेवस मिलिनम् न सा तेंद्रवानारी तिसानी कि तामवत् स्थातः सावहीरी न्यारवा मवाप्रति विगितितां था की तुन च्या त द्वागा तस्य की तिष्टदेसदा ति तावस्य ते दः खासी विस्तिता की

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi, Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

राम

68

छ न प्रणायत्तिहान महत्वाम न पुद्रविकियु तस्य करणान्यत्तरातां त्य बत्तपरिक्षे नगरा ज्ञास नर ष्मंत् सी। सेष्स्त त्व्वहारेया प्रवेद ते र राजगात है होगा क्षय मारागपन तस्वीर राज्य षु ॥ततः परमतं अक्षे उद्देशे देव प्रस्ता च करा है ने वेगा विसे पारित्य व विसे में। व रहते दसी वेजा तद सार्यो वर्ष धर म्या तस्य रतिकार का या महत्वपूर्व के वर्ष मार्यों का पर प्या ति वीं नोप न्वस्थान सम्मात्न स्वतिनं तदक्ष नइ देवावमी गम ता देश देते देव ते न न ही पी विन्पंगते। स्य ब्रह्मद्ये देवां हर्षा सु श्ले त्ये ने ने प्राप्त प्राप्त प्रश्ने सिवित्र देखा महादेव त्यादे करिताः शर्जे मा द्रमा द्राप्ति नियद्य सम्द्रत्ते व द्रायम् हे व नुस्य वेश्वार्यायामा हिनो क्राया सावा कार्य करिष्या तेश नाइद्वार ति हा नहिं छहे व सह द्रतगरी की तशहरा देव तुषु दुर्म ने वलिन क्रांच स्तार ने गाँप देव वास त्वेर जाता में जाता है। जी स्थितिशं सनिपानी रिकामित्र वाविश्व विदेन वीधियो नता ति म्लि कुति न तास्य ता मूल पातित्रयो विश्वाति में इसे जिता न गत्य शेष समिशिष्ट ता परा। यद् वस्ति ता नरा ख्यो विले देश ति विकार च ति नाताः साता सामा दिनिहरू ता यह विस्ति प्रति है भी में यह तान मवादी नामिष्णप्रय न्यवहिम्न वतारमः सदेवम् रनेषु हति वताः स्मतास् । मो द वा सी वम गात्रिसंध्यमः मेर्द्वेदेका ग्रामा नसः॥ परिद्वमा कृष्ट्यात्र न द्वान स्थ्याति ते द्वाति स्वन्ते देश से जो म रह अमा स्थित महर्द रहा जे जाते तत्र जा का वा दि जेतर पत ना ध्या आरती व

त्वशीमित्रकारमे प्रवाधिक्य है स्थिता संजी व स्व इं उच्यते । भागी प्रवेस संविधित्त । वशीप त्रसं क्षेत्रे । स्वाधित स्ति स्वाधित संविधित । स्वाधित संविधित संविधित । स्वाधित सं द्वापनाः सर्वेषिनार्तिके। तित्यं धानी समानित्यति हा त्यारित यी पत्रधात्रीप ने स कि बें। जिस नरी म छित्रिया न तिगिर्हिता न धात्री क्षापा समाध्य त्यकातिक ने स्वति वः। न्य त्र संसर्गर्भवाये स्वावधित स्व न एवं ति। धानी कत तुगाविस्त्रकार्त्रक्षवित्र । विस्त्रते वेष्ट्र स्विष्ट्र प्रित्र तत्ति नसर्व प्राधा वीत त्वरंग मिरुत्मम् विदेवच तुर्म्यः।। नस्मणि जवेद संप्रणादे स्प्रणाद्रिराः।। धानी तु तस्य अबसरशोषः अच्योति पः श्रावयते वनसा विध्तपपः सहद्वेस्तु श्व उर्न ग्रन स प्रकृतिमानसंस्यः॥ स्तिमीव्रप्रवर्गोकानि सन्नाहास्य नामाखादशा आयः।। एप्रतान्।। केतिहासिविवसमारात्यंकिषितं त्वपाञ्च सार्व्यवर्सम्बद्धलस्यात्व इतम पा।पद्यवितिनः अर्पे प्रने प्रहिशित्।।तस्त्रविति।तस्तर्वितन्वैरामिदेवपम्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सहैषराष्ट्रेरुमगमहिष्टः सर्वद्वनस्कतः। का त्रिक्षणपनिष्टिम् स्तरमा स्रजाविक्षय ते त्र तिक्षीम् अदेशे तुक्षात्रमा पृतः विष्ता। तुत्वशी क्रानन्ग त्र स्ट्रितस्य वृति क्रतान्त्रहे ती प्रत्ये व नायाति यमन्तिकरा । सर्विषा एहरे पुरापे क्षेत्रदेतुलको व नम् रोपपित्रिम् उद्यो वत्तनपरवित्मास्वरी।दर्शनंनम्भ्ययपस्तुजंजास्त्रनेतचेवन॥तुनशिवनसंसर्गःस ममनिविद्याने। रोप्राण त्माल्यात्मेका दूर्ण नात्त्वर्ण नात्त्वात्रात्वर्ण हान्या दूरन्या दूरन्या दूरन्या दूरन्या नःकाषसंविते॥तुलशीमंजरीभिर्यः कुष्णिद्धरिहराईनम्॥नसगर्भेगहेपातिष्ठक्षिभाजीत्र बन्तराष्ट्रकारितिनी किनिजंजा याः सरितस्ते का कसदेव द्योदेवा ति छ नित्वत्री दलात्यामे त्रराषु हो पः प्राणान्य हे विति। विद्याः साउन्य माद्री।तिसत्वेसत्य वरातपः त्वर्गारतिक लियापस्त्रमानिष्ठं व ति। वसि विसे तेशक्ता उन्ते पण्यते रिषात जुशीकार जं पस्तु वन्दनेधारयन्तरः।।तदेत्रं तस्यशेतायिकप्मारामयो हपत्। तत शीविष्न छाया पर्वप्न भवन्य मान त्रात्र प्रकर्ति ये वित्र गांत्र मदिष्म या त्री छा पास्यः अपितियर प्रनं रणतमा सिन्यानित्याने स्वयं निर्देश ताः विर्देश ताः ज्यवेवदेहेच र पस्त्रमाधने धार्न प्रतंपस्त् सित्ते योहिष्य प्राधार्न प्रवंचन

चक्रपतिर्म्पमातती नगरं समार्षप्राया स्पक्षप्रयादिन। अप्रयादेशवध्यम् नाम् विनय र्गमन्गाः॥प्रश्चमात्रवाहकाविनग्रप्तम् एत्। युग्रवाव॥श्वनवगरं हत्तेकनिवनगर प्रशितां इया अपाने पानिक सम्प्रमं वाष्य प्रवान मं । विनगु नस्ति वास्य मत्रि प्रश्ना ष्र गर्म । विकार अवस्थान स्ति कर्म श्रम कि वि निवि ते मिला न रुसमाने ये नमनीर तद्यात्रमा श्रास्त वरानु नी वा यो बा विद्या रा वित्र ह अ है तहा सराव की त्यं कान हकारियो विद्या पर करी वा न्यां तस्यात्रि व विपेहरे पाक मो डेस वा में ले उन विषयतस्त तः। स्थाद्याविद्यानीयपातिस्त्ववनशंस्यः॥मत्तंरमिष्वाद्रश्रम् स्थातः क तान्या। तस्मा सुत्रशरेरण तिष्टल कातिनिदिता। त्र यने कामर देशे का व्यति ते विदेतरे तम्बेत्रारीरस्य विदंतिव्यतिष् ततः दुर्धयानि न्येने वासन त्यान्या कारियो। स्रोहा ाव। सार्व पंच मताकानि वे नदिहा कित दिन र इंग्रामी ह तानि सं दृः रिनता स्वेन क म्भ्याम् विकायाता दिक्षेरांदेशं त्र देम वेरापास्तुसंगम्। त तीरसंख्यता मार्वता वतस्परारीर तः। शिवविद्यर्भे शिह्म मण्डल छवत्राद्तं। भ्यपसर्वप्यविन भोत्तव्यं वनपादिन ।। यो निन पाद्ग्रेमं बाद्सा बुवतद्वताता स्रुत्मा मया देश मया विले हिनी नमा लि हता ततः स्त्रतगिडिताविष्य शरी वैविनिन स्लितं ३

ता

नगर्यु वा वा अप्र सी त्स ह्या दिन व पेकर वो र बर तथा बा म्या विस्कृ रिव प्र मिर्ने नि ति वि श्रुतः विश्वतन्तरः शश्व त्विष्ठप्रज्ञरतः सर्गाहादुश्चित्रराविषाचा जपान् क्षीतिविष्वप द्रशानिका निके मासिक रिमो अर्गाण्य सः॥ ए में तुर्णे श शे वं मा मान रिमे दिरम् हरिक जो प्यर्गा युग् ह्य बुज तित्राति व ह्यु समा मा ता स्तरी भी मिन एव ना। व में इं कु चेत जिहा निमंग्नार्ताने निमंग्ना स्थाय प्रमाश्रमीपकरशोद्विता समि मि ज्वाहन इका सम्भाय महरेकी मतु त्नशोष क्रकारिया सोहन सा तके प्रधा तस्त्री मागा न्ये प्रथ्य संस्ट त्य सा प्रवीन ना करिविया का मार्थ दशोसाववी दिवंदराउव इप्राम्पसा। बन्धिव व पूर्व कमिवपाके न दशाने तो जाता महमान लेप तु उनिर्धित्र पाम्य है में जिस्कृत मार्ग ना दुर्वा वा में हु द्वा प्रमान वदमानं इवसे मितरा भी तीव विसित्त विष्यत्त पव वनम ब्रंबीत्। अन्दन् उवाव। देनवर्म विष्य वन विद्या मा र्शियता क्रतिमा विकंशी का तत्सर्व के प्रथमि। के हिंचाव सोराष्ट्र नगरे ब्रुतिन् मिस निमा भवदिनः तसारेग्रहणी १ वें क्या है लिति हरा। नकर विनापा भन्ने वेच सारिश्में हैं तम्। निषितंत स्पिति नं भर्त वे वनशी त्यान्यत्व है एपमाप नामना देश बरीस वार्षियो ते तथे यास मति

36

साम्ब्रीदियंद्दशापांत्रमञ्चरतः विमानंभाश्वरं छ क्रेविस्टरूप धरेर्गरोः सूपता तदिमान स्पष्टमं दत्तः सविसापः पणत्र दराउब इमे ह खाती वि छ द वि सो प्रापशी तस् शो ने व नलानेप्रगनेदिनम् तमाम्बन्दतीत्वमान्तर्दमीसंहितास् ग इतः साध साधित त्रविष्य पति विस्त देश देश धर्मी की विस्ते वत प्रयोगः अवात त्या क्ष्रवेद्ये तथ्य प्रवासिक वतम् कतं प्रयार्द्ध कते न इराय है उराप माज तम् लख रायस्यार्द्धभाग्नेन यदस्याः पूर्वसंवितं अन्य नरशताद्भतेषापेन दिल्वंगतम् साविते वगतेषायं पदस्य प्रवीतन्त्र गाम हिर्तागर्गिने विविधान विद्मास्थित वेद रहिति मत्साधी ना ना मेंगा उता त्वियम दी प्रा नमवै अरोप भी खरं रूप मास्यिता तु अशीप ज नेरवेनकार्तिक वतके स्तथा विस्वानिध्य ताजाता त्वपारता स्तपा उता त्वेन सम्मन्स्या ज्य ति भाषामा विक्रं अवने विक्रामान्त्र ध्वेन सहप्ताम ते ध्या क नक्रत्यास्ते तथां वसक्याः अमः विर्ममाराधिताविष्ठं धर्मदत्ते वयायया सम्बगराहि तीव छः विनम् छति देविनम् श्रीतान्य रितार्यनं ध्रम् विस्पापितः प्रयासम्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi, Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वित्रणावपरित्र स्थान वित्रप्रति ।

त्वश्वासंसर्गहतपातक न्त्रसंबुद्धविष्ट्रक्षेष्ठसाम्बयहं इत्यंनिशम्पकलहाँ हैना ग्रातित्वमेकात्रम्बविस्मप्दःख्यकः व्रष्टमिष्णितक्षण्ड्यते विद्यानिर्धात्वादिरंसव वनं निजगाद इत्यात इतिन्त्रीय प्रयुग रोकालिक माहा स्पेयक्री निविद्यो । अपनिविद्यो विवर्षे सर्वककितीर्चरानवतादिकः वृतदिहस्यताकास्तित्वविकाधिकारिता न्वदेनि दर्शनाद्या ति ने वाममानसम् नवैनिव निमर्गति त्वाम न स्ट त्यहः रिव नाम पान केव नवा स्वाम क्रिन्न मसंस्थितः जेगस्य क्षी पतेषुगये च तत्वं नातिमहितस तस्मादानम् नाने य-ग्रमाकार्तिक वृतं तस्या ईष्रायभागनसङ्गित्वमन स्यान कार्तिक बत्र प्रापनन साम्येषान्तिसर्वेषा यज्ञद्यानि तीर्यानि बतानि च तथा प्रवस्त ते विवादिया अन्यम तिलम र स्पात कार्वित वाराय सम्बन्धा मान्य न द व उ सामा अवदानिक पावतामः पषेचपत् तानशीमिश्वति वेनश्वा वपन्तं दशा सरम् तावत्वताहितिन्दि हो ज्यान दिन शो को प्रमा दिस्किन धराज्ञा ता त्वा वराप न पृथि दिश ततः सादराउ व द्रमी प्रा मामापति क्रिम उबावमा तरावाना हर्षेग द्रधमा ब्रामि के ही व त्वत्यसा वेन दिन भ्रद्धावमक्त नर्पाइहम् पाणधीमक्रामन्य स्वज्ञी अता च बेध्रवं न द वा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

M

36

'शार्वोतार्तिप्रषांगतः पस्पिन्शासित्रस्य त्रिश्चापिद्वितः पावश्वरित्तवर्गित्वस्थितः । भ्रत्नरः प्रसाप्य नत्रश्रेयते स्य ताश्चप्तितग्ब्यो सुबर्गाष्ट्रव्ये शोभाद्धी गस्ताने वर्णप्ते । सक्दाविद्याद्वानास्त्रम् स्पनि हिन प्रासीन्यते नर्षायानि द्वास्त्रितः तत्र न्त्रीरम्गादेवसप्रन्यविधिवन्त्रपः मगानुस्राष्ट्रविध्वयः खर्गाउद्येस्त्याक्षतेः प्रग म्परंश्वया बद्दप्रविष्ठः सत्त्रवे तावद्वात्मरामायान्त्रम पश्यदेव सतिथे देशवैना र्षणामित्तु वस्पर बद्धारिया तसरी वासिनंत त्रविष्ठ कस्तू पंदिनम् तम से तस विष्णि देवदेवमप्तप्त विष्मस्तिनसंखाणनुलक्षीमंत्रसेद्वैः तुलकीप्त्रयातस्यरत प्रमाप्राम्य प्राच्यादितां समारमाव्ययम् अविष्ये विष्यं ने उ च मामाव्यक्तां प्रमान्य स्वर्गाप्रमान्य स्वर्गाप्रमान्य स्वर्गाप्रमान्य स्वरंगाय नास्वयाकी विवित्तानम पुस्ल्पमित्यु मही प्रज्ञा प्रज्ञ पा व्याप र्तितस्य व वः श्रत्या सज्ञेशःसिंदिजेत्रमः राज्येकी र्वमालयाज्या द्वव्यत्रा वि ए उ व राज्येकि न जानाश्चिमिति किन्यातमः विय्वतिव्यविद्ववद्यमम् वण्यतः ग व तः द्वास्त्राव्यः म्बुत्वा शहराल रण्तमः विस्ति एसंत्रा विद्वाच वन हिन रा वा वेद रसेविद्वावस्त्र मन्त्राति गिर्द्धितः भक्ति स्ति प्रति विस्ति दिस्य ति दः विनः

वनसन् CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

राम

र्नादेवदेविनोपानिस्द्रितं ग्रहरूरितानों द्वे पनाम्हमर्गातुर मुक्तिविधिन ती जाती पेय प से ज अ अवतस्त्या हिंता विष्टः सानि धे तेप तत्यति बहुन द शहताता भाषीदययतः छनः ततः अराप सर्व जाते परायास्यात भत्त स्य वंशो द्रवा राजा अविरवा तीमाने व्यक्ति नामादशर् च स्तेत्र नाष्ट्री ६९५ तः इनः त्रेती प्यानम् नाष्ट्रियाते सरापाई भागिनी तनिष्तिवसानि ध्यं विकाष्ट्रियाति भतिने भातमने तवपुत्र ते प्रकारा माना र्यकत तक मन्त्र बता दक्ता दिन्छे सं तुष्टिकारणात् नप ज्ञानाः च ए नामन तीर्था नाहि कानिच अन्मितिविकारम्य पतस्तिचे तहत हत ति एष्टिकरं जहरीः एदर्डमाणा पदिन न्यारे: प्रश्चित स्मा निर्मेश ने कता रिति मी प्रप्रा प्रश्निम सिन मिन मानि देखाण्या ना द वा इसे तहने ने अत्वाधर्म दतः सविस्त्रयः व्याप्य दराउन द्रमो वा वामत्यार धर्उ व अर्थायमास्विषि विष्ठभन्निन्यनम् पन्तरान्त्रतेस्त्रीते सारोधित्व प्रशाविधि विस्पृतिक रतेषाकि विव सानिध्यक एक ए पति ता ना निवाल निस्कृति विभवति है जे ब् तुः साधु ए छ त्वपाविष् क्रमुख्क जुमान्सः सितिहास इयम न अप्यमाना अभव स का नी प्रका युग के लाक कर ने स्वा भव त तस्य भव त तेरे

मेकपातां कप्पार्विति निर्विति प्राण्टातां University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

36

न नैनिकरोत्तरा सामेक त्यार्व ने इस्तिय स्थाने स्थान व्याविष्ठावे । विचे दिर्वस्त वे स्ववेद्व विद्व विद्व विद्व विष्ठ विष्ठ विक्र के कर्ते जनः के पहरत्यनः उपी विते हें समा है ति का स्प अनु ते स्पितः। अनु य सर इत्यां सम्प क पांकस्प न करी स्प है।। उतिपाकं विभागसी तद्वेग असि तः शिप्तः। ता बहदर्शनेष अने पक्ताने हर्शिश्य ते। स्तुतना मेदी नव दने अस्य न की वरी विशेशतमा निय दिनार्यो हि इपया विन्ने मानसः वित्ते सान तरेषा पंति हति होते ने बुनी तं। कप्न सिर्देश से हति ने न दिए गामे।। इत्ये बुन ते विषे इमाना नेस्बित्त्रे स निशा वेण देश व भी त्यम कि तथ्न एपा तसः ।। म कि तप्तित हरू ने छ नि सिना ज्योगे। विगारम्येत्य हाप्य खन का नी र्वा नप्य प्राचित ने विकास कि का विवास त। साका नागवरा देवंश व न र अप धरम्। पी ता न्वरं व दवा हे जीव सा के किरिए गा। यत शीव यस कार की स्तु भी र स्था ने वि अ म्यात ह हा सा त्विके अबै । ब होती अनु वि सी ती ती वै वेनमस्तर्हे तरानानं वस्त्वसः। श्रूषसका द्योदवास्तदेवा स्योपप्रस्तदाणं धर्वाप्यर्ति स्वीनगण श्वतर तुर्दिए। विमाने शतसं की शि देविषि जारासे वित्र स्थानी तवा दित्र निविष्टिया ने तद्भवत्या ततिविशेष्ठमा निग्प मिनं सा ति का रतस् सा न्याना सनी दत्वा नवि दे हे मे दिए। विमान

रवंसम्बद्धितस्य वारं को व्यहरन्त्रप्राततः सिवस्त्रप्रः सोधित्र नस्य वत्र धार्यत्। न्यस्ति तंस्त्र स्टेस्तरः वा कंहरतेमस्र ॥ से महत्या स्विनस्व साम्यामं स्वाम विष्या। स्व मः वार्यक्षिणाम् सम्मित्य वुचे स्त्रप्रा । स्वापंति धार्यनं से से तस्य स्था संक्षित्र वे ति विषये विषये विषये विषये विषये स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम

1

য়

एनादिसंनेव विक्रा सिष्ठ संस्ताम् मपिद्वा अपंप इसि तं विश्व तथा सिन् र्राण्यापित गर्वश्वतिष्कतिमाति तः तश्च राव तु वने मेखसर्त्ते तेन हिना तयः साक्षा कार्य है विकार विवाधार मिखति प्रथन्तसर्वे पित तामित्र रास्य तिना वयोः गः व तः इसक्र सन्देव गष्ट्र-सिनंगनगरं हिन आरमें है सार्वसर्ग क्रत्या वर्षे न स्त्राज्य में विसेवसमायन बहुनंबहर्शियां प्रबुक्तित तप्रवेजयाने जैसम्बिम्त विस्तित जैवतको देशं तये बती प्रणानियम कर्बने विस्र तुष्टिक एन्स दा इर्जामा व वते सम्पन्तान शीव नपा ननं एकादशी वृते में प्रहादशा हर विद्यपा उपने दे विद्या वित्रा दिमंगतिः निसंविक्तास्तदग्रजांबतायातिस्तवरीतः तिलेवविक्ताग्रहतिष्टन्व पनिष सर्वभतित्य ते विकाम प्रयत्सर्व दर्शनः मास्याति व वाति त्यं विश्व तियमानिष सी बरोदिस तुब्दर्शन चापनिवधित्र रेवं सम्म्यध्यतोः त्रिमः पतिंका जो व्यतिते नप्रिक्रिश्यमः सो नान्य संस्पर्धव्हव्रतस्य यो स्ति सर्विन्दिष् कर्म्य गासारा इ का के हा ए बि ध्या ना दुव व अंदरविदिश समायत लानित्यविशिद्धनः। वासक्रमाक्रो नाव्यहरत्के स्य असि तः। तमहस्र व्यती वाकेष

सस्तर

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

36

স্থা

ज्ञते। सिन्न त्रभंषुरा वीर्याप्ता त्र देवधारियो। जारा व व ः। तरा द न्ये स्तु क न्या प्रोदेव हु त्या अगिदिनाक देन स्थाउ र बोव छ जी के बन्दाः। त्यक्रियः किन के मिदिन पृत्विति केन तः।तस्यामेबा अवत्य खात्क पिका पोश्य भिवित्। तय श्विव विन पश्वेव विका भित्रित्ते स रा।तो तत्र कित दिप्यामीध म्रिशी वीवभ बतुः। कि त्यम छो त्री मा वि स्वन बराव नी शांकारेन दरी विस्त्रसाम जिसमा ने सदा महते न करानि ज्ञा वाहती प्रक्रिती प्रक्रिती प्रक्रिती प्रक्रिती प्रक्रिती उमतुर्यम् अश्रातीद्विषिग्रासं यती। जय सामाभे बहु त्मा मा से की विज की भ वे ता न तायज्ञ विश्वं कतने परिष्या त्वन्तरः महता बुम्धा स्वातन्तामा विनेद्दी वड तस मश्यति हिने तरमतः खाश्रमं प्रतिम् प्रतार्थे व यपिवस्म स्त ख क्षेत्रे तरम ते। तर्देनं विभन्योतो एसपद्धित परस्परं जियो बुकी त्स्यीआगः क्रियतः मिति तत्रसः। विज पश्चाव भी हो तथा हो वेन तस्पतत्। तती श्राप ज्ञामः की धादिले में देश मानसः। उपति लानरएस्पेतनसागाहामवातिलम् विजयस्तसानं शापेन्युत्वासाय्य शब्दानम् मद्रम् नीयायस्वमा तस्मान्यातं मां वजना तील्ल एवं त्या तुर्वि से हकानि त्या वेने विशेषापयो श्वीत रतियाम्पासित्यसम्पति । अस्ति । अस्ति । अस्ति पासंकपेदेवगा हमातं जियो नियो नियं कि विश्व हिंपा सिथा नियं विश्व विश्व

37.

राष्ट्र

वरसंस्थानं गर्धनं विश्व सिन्धिम् विस्तरने त्रात्र विश्व प्रति विश्व प्रति विश्व विश् ज्यानिक स्तितं सिविश स्पर्धं विक्रियानिक हे राउमित्नम रै सितेन मया सम्पन्त स्वीत्र न्यस्मविष्याक्षत्रमात्वधानम्य न्यस्मानिरंतरं नेवाद्याप्यसम्बन्धनम् मझेवतस्यविष्यस्य साक्षायात्ताहरिख्यु तसाद् नैश्वप्रोध्वनेवविष्ठः प्रसीद्ति अक्षिरे वयरतस्य निवनदर्शनिविभे र समाजिताने पं श्वमम्बिय र पासने स्वासितिते पति त्युत्र त्यमगष् त्वत्याधाष्त्र देशस्य ए स्वयं सभाजनः। इव्योपा मुन्न गयने तत्त्रमा बस्यवितिः। प्रवारं तता म्य स विद्वार्थितः। विर्वे की तहाँ से विष्ठसंबोध नेतर रा विकामित्र स्थियं दे हिमने वा क्षापक में गा। इस ती सापत है की सहिया में वपश्य मा छ उत्त स्तती केथत शिषास्यार पत्रव कामात तस्त दापित हों ने मुज्ञ का विशिषा व मुः। ताव गविरमहिष्ठः क्राइज्जी मिन्नि तो विष्यः तदाविष्ण् स्वास्त्ये दत्वा वे के र मिन्द्रम् त नेवस हिति की नगमित्रायता विविध्य दासी सत् प्राप्यी ती प्रविद्या सम्प्रस्था त नामा आवे व ति तस मन्द्रप भाजे क स्पो हतते ते नरमायु व राग रहिनी चूप नरान्य निकार स्थाप की वर्ष ध्नभ कर ब के प्राच नंनाम द्वित्या प्राध्येत्र दत्त प्राचा न पश्च विजय क्ले विश्लोर्व ह्यो प्रा CC-O. La Bahadur Shastri University. Del

**णउ**च्

49

रकार मण्य नवरानानिन तीषान्याञ्चकानिवे धन्या रिवविष्या मध्तरत्वये तद्वतं सतं त्र 36 अरंगेगड्रोः लंड्डिमजा विष्यान्यगरेः प्राणियते स्मामिरियं वद्यान्यान्य दे । इस्पे ती अर्थरत्ने तमपि स्पावना वजी न पाक । न हमा के वे करह भवन जे ने अर्मा रही यासी अतः वयतस्त द्वति स्थितः दहाते न दिमा स्थानं मार्थी भ्या मेरिय के न बात इति ग्रंस मिनंदरभवं करण ते काव यते वयः वक्षान हरिसेनिधिक रिशी मिनित्न में है ए या न गहरीः।।इतिकीपद्राष्ट्रनारोको द्विकारात्रकातिकार्यायः।एपद्रवाच्यात्रमावेशयात्रव प्रसाकिन विद्याशाः सह। बेशाब शरीं तो हानिर साकि यिता त्व प्राप्त भी येतने र्जिया के अस्प तस्प वातनीक प्रमुक्ष क्षेत्र के क्षिप ने महानामा नार्ड गर्ग , क्षांत्रस्य तं वुः सा साहियो है जिस तोमहे श्वरा तत्स्य मध्यावन्तु ना ने व से वत्म नः।।तंशिव तसस्य विसे ने विद्यापितां ऋगः। वास्य स्या नरेष्वं नने देव विसेष काय हा दिशिश्वर स्प्रिय मनगणे व तामवारा सकावा यत्र भारा ने राज न सर्व जाती रितः। प्रमहिरहरा स्थेन ति दिर शिवि रं मये। इर इबादमा मुनिय से विसे देवते तस्मरीजा विधा नय समा जे देश हा गर ताः। खा पा श्वरं मही महपा वजुरी श्वरं।। साम ने राय को ता व पर गरा इस वी बहा भारत वा बिलो छा रामा हता साज CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ब

मान्या विकार संग्रेन कर विद्याति मणि न स्था कर्ते एक तेन कर वन प्रस्वसासिया विक्रित है है । विद्या कर विद्या कर विद्या कर विक्रित है । विद्या कर गराह की तर जाति सारी तत हो ना मिष विस्त व तिस्ति कर नित्तग्र सारं का विक असाकीं गतः तव्यायाहतं ग्रहः संस्मर्व्यापकार्गं ग्रह्महातीताताः संस्मर् श्रीपतित्व त्य विविधि श्रेष्ट्रिशः शंखनका तथरः तत्तिग्रहमं त्रो वक्षिक्षे सम्भति दलावविजसार्षे वे कर्छिम नषदि भः तराच भः ति तस्यानं रुरि ते वि तिश्रुतं वक्तसंबद्धणा दिप्रन्या वा ने पिहिले दिताः ताविमे विश्रुते तोके जयश विजयस्य वित्वे विसं विसे विसे विसे विसे विसे के कि तथा हिल अतस्वन विश्व में जातिन विस्त्र व तिस्य तः त्यत्कामा सर्पदेमी व मव तिसमदर्गनः तु ता म कर मेबेड पातः ता मिस्रमवेत एकदशी अति छा तुलशीवन एल कः बालगान छा निषिवस मं श्वस्य भन्न मस्रिका श्वर्णा वं यत्तं का निष्वसमा एवं त्यमिष्दरं ते निष्याः वरमेप्रम् प्राक्तिभ्रम्भ्रत्तेत्वेत जसी व यथावयं ताव नन्य बता दत्या दिस्त से तिहिंदा

तस्त्रिहिं स्वृत्वन्तत्त्रत्ते क्षेत्रविद्वा श्वायम्भामा दिन्न प्रज्ञ र नापित इंचले स्वेत द्वार रेव तु जा पते।। र तिनिञ्चितं। खबिवेस हतात सा न्छापे पेविनि वर्यते ॥ इबाइबान। निनि तिरिताता ध्य सी प्रजारी प्रत्य ते नमानिस्य त्रबंग की जी ही भ्रता भेव न ये पनि न्रजाः। स्वया नि 36 संश्रामी व स्ता शाने व व विष्य जा। म विष्या वे पुन्त हो । पृथ्य मा भित्र वा वहा। वा द व रतितद्वनं अतुलाबान्धने स्प्रमहेश्वरः ज उप्रतामव नयः व्या शेरिव तरा राग्यतन विस्रास्त्रसाव्यादिक प्रहेखरः॥वस्त्राक्तिकाष्ट्रपण्याचे वस्त्रतः।देव न्सा रवानिया वंशान जजनसमावि विसिष्ठ ॥सद्यादिश खरेम्य सा यप्जा संन्यान व्रगाः। इसे ये प्रविक्तिक वार डः प्रविव्या वहा। न स त्ये शिः ८५ व्यन न शतके ष्सहस्यः। जावेत्री वृद्धर्ग वेप्रिचे विष्ठते तथा योजे ने व भवते थेः सावित्री तिष्योग नांव प्राप्ता विते तन प्रतिहर हय ब्रेसी महावता तिवाल नी नामा द्वीवभ्रवतुः तद्वार्नयास्त्रमारुत्यं नाहेवत्ते वर्षायः। पष्ठेव् तार्यो देवार्यो देवार्यो न सिषं ति वापमा र उपवे प्रपेहरं श्रमं पः श्रामिषः श्रामित पः श्रामित मना सा तस जसः सद्भान प्रतिस्थान ग्रमे द्वं स्मत्न म् श्रीन्त्री प्रमु न रोका नि न शिम्ला विविधितः १ Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

गाय्यवामिनमनं . मध्येत् १ १५०० वर्

नापातिस्त्वराशम् र्नातिक्रमे विकर्णितं साविधिक्रणे । स्वी क्षा व वान्वापाति वेत्वराशी व ग्रापना विधिसं प्रता एषा । नवेदस्यमा या विद्यापाय विकित्ता । नादद्व वा वार्षे व मेविह न द्वीवित्व कार्या तमन मन्त्रात छ तो सम्दर्भी व्यं जा प्रशेषित एक प्राप्ति वे प्रद्वित ग्रामाने के विधिमणा करेति या वदी चार्विधितस्प विधे रच के मैं ने खरे ता वदे या प्यो तत्र शबरा पत्त स्थाने रूपाते तः सादी स ता द खा जाप के ब्रुट्याम सह स प्रतीर्थात रक्ते आ त्वराववनमञ्जीता खरी बावा अप्रमाय प्रमान देन के विति समाता जीति तन मविष्विद्रितिसंपर्णं नपंषिपंचरित्रणे भागेडपविष्यप्रस्तातस्य द्वोके सदा ध्यमस्तरक्षणस्त्र निम्रणामयसने कनि छे वंभवद्भिः संनिवेशितान स्नात्नर्हे जडी धता नदी न्यामिक प्रापाता दुर्ग वाताताता काए मकराप्ता विने के विताध रागसे स्था के शपद्वैनी प्रमानि में खाम । आयु-अन् ना तद्यमा प्राप्त लाममा ये इस्तची पतिः ळणशपस्त्येपसान्त्राज्ञावत्वमिषिनिम्गा।नाइदुवानतते हाहा हताः सर्वे विवविद्न मुख्य सुरा अवराम्य देड ब हुमी इवरात न वि तरप पुः।दिवाड न वः। देवि सर्वे व व सपानुमा चापलणश्चना पदिसर्वत्रशे अता भविष्णमाः ज्ञाना प्रतान न तो न त्ये न हिनिश्य CC-0. Lal Banadur Shastri Uni Call Syllor Photo Photo Species Species Color Photo Spec

या

सर्यताक्राष्ट्रणाद्याच्यायस्य वृक्षाक्रायः

ह्या

36

30

1

६न र्वत्र पानाकी पृथा वस्त्र एपपयो। ज्युध्य वना ध्या प्रकार वीक्षान रिप तुर्वे। सप्यप पापाना विद्यापा द्वारते मानवः । एकन् व पान पाना विकास त्या से जतः। बड़ा श प्रान्तमामी स्पा विप तेषु गप्पा प्रवा प्राप्त पाष्ट्रा पाष्ट्रा पाष्ट्रा विश्व द्वा दिन विश्व द्वा दिन विश्व द्वा दिन विश्व दिन विश्व द्वा दिन विश्व दिन व श्वराग भावमनोध्याना त्रचेवन परस्य प्रापेषांचा नं शता शंपापु पा हरि परस्परे विशे पैश्रम्भिकारं बक्र शति वाति तहतं कतं वाय श्वष्ट्र प्रथित । अर्थ तः एरा प्रापाति सवा पः अर्तिपरः । प्रतिभ्यति व्याच्या प्राप्तः वीपिमान वः। तस्पतिका तर्वन तड्यां विभिन्न रीया। सिवितस्प नुरूषे नेषु गुने स्पूष बेलित । इसप त्मस्त्रता प्रस्तु अंब्यु स्पार्व वृष्य ता ताराष्ट्राच्या प्रमेश प्रस्ते व व व ता ताराध्या दिनेने बेयाः स्वारी दिवस्ते त्यप हस परंदे से उर्गदर्म करो तिपः। कर्म कर सब भागीस्यात्यस्य तस्य व पायते नाषत्रस्य सर्गयस्य परम् श्रिपते नरः। अनी तत्यसम्

मादनेश्वधनस्पानुक्तपतः। बुद्धिदस्चनुमंत्राच पृथ्वी पन्तर्गाष्ट्र विज्ञानि विकास्पान्ति। विकास्पान्ति। विकास्पान्ति। विकास्पान्ति। विकास्पान्ति। विकास्पान्ति। विकास्पान्ति।

भते। स्वर्भ प्रमुख्यां संद्या तसिस् ति जिते ४

यानीहरीनया द संबर्धा श्रमाश्रमाम्याम्यानिकामानीनात्वप्रतास्त्रात्र्यात्रमा स्थाप

सम

भाराक्षेत्र विक्रो का प्रशास्त्र कि विक्रितमानसः।। संप्र ज्यानर रभ त्रम विस्तान त्रभविष्ठे॥तस्मे द्वतद्वये ह्यत त्रमाने वृद्धि मं क्रिन् ।। मार्वकर निक्रण स्ति हते वे का देशी बता। बनस्य ती हते की का सने का ति विषा शीतियों गंत के जाणा दारका मना एते का संवत्य स्त करोति पत्ति या समिव समतापातिवतपाप्त गरिभिः।पापे भी नभवतेन कर्तिचिति मिदिप किते चेसे वनकोते अर्थता मत्यु सर्वा स्तान्य गावि स्मानीय तकाय प्राय किया ते सन। प्रस्तिनपुर्यन्तकन हा हिस्माना इस्रवम ने निषं का विकलिय करें। स्वाति तिहादि प्रशासिकानपुरिषाजी ता निपत् ते व ज ज ते प्रश्में प सर शाक्षेते प्रभी अवत केतमार्शिकालम् ते वितिका मित्र वाना अद्ता निविषापाति अपनि निविष्ण नरे । प्रायम् ने कार्या वन तहां या वित्रिण ममाद्शा प्रमुख अपनि स्पूर्मी जे भा जि तताहि षाकानेत केवले के नी फल मुंद पुरापण पया। म्यू के निवि से सर्वे व्यवस्थ प्रवाह तालंसर्गात्यस्पपपानिष्यमातिनिनेभिष्या एकत्रमेखना दानादेषात्रस्प्रातनात्

aar

700

不多

95

OR

का कि का निविद्या के कि कि तथा छ 110 विधनेष्यः नितंपरिधमं स्तत्रदर्शनसर्श्वमात् विस्वानं तथाविसी नित्रश्चाविसी । वसत् एवं मास्रियतः सो प्रकातिको पापनिविधी कि प्रमारा दद्शी शे असे जी गरा। 36 हरें। पीर्शमस्य तते प्रशिव जो प्रज्ञ ने दिसे दिसे रागं भी जने दे व रीप मारों बते लि ने जिपमाग्दरशी सोबात्व पे विष्ठियः। विष्ठग्रां हती व्हिंग्न पति संगिष्ठि व नता . Z.R श्व तस्त किपते तिथी नहीं मही सब अम उद्दर्भ पः किश्व रेने पे रिकायपन तस्पष्ट तस्क गपित्रणः सर्वि विष्र ज्ञास्य नशसे पः । तत्र वास्त्रीदि के पृथ्य न्य नाम तक्ष में खरः। तो वृत्त्र् विम र्छ विकानः सपपातरः जना स्त पतिनं वी स्पपर्वितः तपन्वितः त्वशीक श्चित्रतीक्त-मुखं लिबिनुतिन अपरिह्मित्रविद्यात्मिनिक्र नध्यमन्द्रश वातिनिन्यः संप्रमनीन्या विन्युत्तित्तः देखानिर्मत्यावे दयत्तद्या एमापतेनेवा द्या क्षमंबेद्वः सतं हत्त्र । बिनुगुनु उन्न । ने न स्परंपति विचि रामा त्या स्त्र ते कि विस्।। 5ः हत्त्राव्यानेवतं वर्षेणापिनभास्तर पापमूर्तिरपेद्यः वेवलंद्यतिविभो॥ तसार्वः यमपी देनिर्यपरिष्यतार्। श्री स्मा व गानि शामि सेववः ने भी धिम् हसिकंकरान् दर्शयनासनोद्रयं कालाविस दश्यम म् प्राप्ता भी बेत पत्रपत्र CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ম্স

वियोगर्ना विताप्रवासी विशापर्य प्रति । १० विशापर्य पा विद्र है विशापता वितर्य नव ना श्राप्त होती । वितार तक प्रवास के विशाप के वितार तक प्रवास के विशाप के वितार तक प्रवास के विशाप के परितादित्वित्विति स्वात्रित्वित्वे प्राप्ति के शामिष्टित्वे निवादित्वे निवादि श्री का वाचे इसे खर्ना स्पिय श्रव पापाना पाति विसं पूर्स विताति विसं पूर् तिहासम्बंध्यम् वृश्यमति प्रदेव स्विधि प्रयुग एक विकास विविधा श्री है। विवाशियरवितिपुरवासीविषु अंसि द्वेष्ट्यर्। ब्राम् वितिष्टिः कपिति हः सुदुर्मितिः। रस्यम्बन्धनि सस्यान्त्त द्विकः।।स्तियवश्यास्रोणन्ध्तसंसक्तमन्तः। देशादेशां तरंग छ त्यस्य व अप कार्यात् माहियां तीं प्री नम् करानि सभने घ्वर महिलेगा हा ता वहीं ते हेपा नेपाहिष्यतीति सांगाप स्पात्यं गता माति नर्म व पाय ना शिने कार्तिक वृतिन स्ति व ना ना प्राप्ते ज ता ना सार हिए विकास के विकास में कुछ बास है। सिन्स नर्मिश्री देश्रम न विक्रम कार्गाता द्रवर्ष ब्राह्मण न सान न महिंची वैनेरता नाको शिवत्यगणे प्रतः को शिवन छ वर्गा रतान् क त्यगायन वर्गित विद्यस्तवन् निपरंन् विस्क्रें देखिती ने की स्वामा ने प्रतिश्वारियाः दर्शकी त्या विस्ताने

36

ति विस्नामसं प्राविती विच न सानिहत काष्यं मंत्र ति वा प्रमहिल वे स्वन न ग्रहीय मानिर्ये नेवष्यताम् जाईशब्देस्त धारापे विर्वेभागसंविधिम् वाष्यतस्त तेसाइत्स्वर्गसंतिहितसाया तस्त्रादक्षमपु राषाहिप साया विकित्रस्य प्रमा विका कानिर्या सर्वाक्षण केमध्य प्रमान प्रमे लिल वा वा वा स्याना मनिनारिस सो रिस हास श्वराणिन अप तत्र असमें निवय प्रनर्ग स्वित रेशा में व त्वति । प्रनेष्म न्य दर्शिष्ण इतित्रीपद्मायना के निर्मात के निर्मा के विकास के निर्मात के निर् खुरं नी लाजरण त्ये न पा ब्रवीर पुरशिष्ट्ये ना न्यर्वा न्यमानु बरहर्ता था। ये । उन् व प्रश्मा चिर्म न्त्रा रान्धाना त्याना न्यान म्या नगः पापकराहेषु प्याने प्रादिक हैं तम वाल्यस्नामायनिरंशिरदर्शनः प्तरिम्नवनिद्याः प्यन्तेषप्रशिर्गः श्रीत्रश त्वेश्वदेवाचे बहुत्तामानामात्वियेत प्रायाच्या स्तिरिपयाने श्वत्य मेरा। गुर्वे वित वत्रानियान्द्रवान्मर्शिमिषित्रवान् तार्यित्रनरयेवेतिनर्भात्यि एडे द स्तिष् निर्यो ने नायों पे अपन्यति तथा वै वां अता मि श्रीहि ती यो निर्वे पारा ने प्रथ या महिता देश अपने स्वन कर्म गा समी भिर्द्धीर व के रवं ने मो न वर्षा जिल्लिन आस जाने के मानि रंतरम्

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

या प

श्रम ३०

नवध्यमानश्वमुक्रेशकुंभीयाकेषुक्षियाशुद्धंकत्यष्द्र्यनम् व ज ् स स स व जा या ततामुद्रश्निमनम द्विनं प्रत्मे नयत कुंभी पादेष ने सिद्या ज्याने सित्ते या वत्सित्त साता मी ताव छीतत तां भूगो अंभी पन्नी मणान हि प्रस्थ न या तुरा ते हुआ महप्रविधित योवि स्प्रणित्वतः वेजारगत्पतत्सर्वयमाया वैद्यत्तरं यमस्तुंकेश्वत्यप्रतयनिव दितं आ कि नेतिदिति क्रेन्तितमा नाष्पावि वार्यक् ताव देश्या यमे त्वना र दे पा हसल्य प्रमन्द्र ति तः सम्प्रतं दक्षा वा वा म व के तर् ना द्रावा ने ने प्रान्त्य नातंपमस्वित्तन्त्न पस्माद्त्रस्यक्रमानंकम्भास्यनिर्यापुरुष्ट्रप्रयापुद्र मंगां अपीदर्शन स्पर्धभवशं तहे वंड शमा वा द्योति प्रति प्रति प्रते नेरः श्रुशं खा तेस संसर्भ के तवाने प्रधिक्ता का निक बनाय की संस्थान संस्थान प परिन्धी कर सी का संवर्धी वात प्राप्त भावा है त साई वत स्पे त्य प्राप्त स्वा न विदान का निक इति ना संसाम बका निम्हाल पर है सेवस की राजिस ए इस बारा प र से ते ते ती ता में रे सी में सा ने सी विश्वित स्पेप वे सो वे स्वारं Sarger निकास का जिल्ला

क्रीत

Win

भैनेपन्यन्यन्त्रप्रविकरेः नह्न्यद्वसहस्राणितान्त्र ज्ञन्तिम् ज्ञनेः वतारिश् भिन्नाने नानिष्वरस्य १परोर्वन् स्वसमायानकः १५ क्रामार्श्वम् एहतम् स्वर् मुखादि जि: पांचे द्वियका गनवरियता क न तुराशित संख्या दे: ए प्रमे देवव शिता न प्रत्यकी ग्रीम प्रतिस्थिमान नी कर्यों तथा नी तिसे श करेतह दुपपाने के से जित म स्वतिपापमञ्जाषापसम्बाषान के स्यतं एभिः समस्पन्यते तिर्पेषु प्राज्ञम म कान्नि बनि में स्पात्में सर्जनमन ने तर त सर्पा पन पादति ने है ता निर्पात क्षु सी त्रा अवस्थिति ति ति स्या न प्रेतयस्त्रम पारुरत् घने घनरं प स को है व प संश्लाभ्रतानवहा धनद्यानुगःसोपंधनपत्रितिष्वःस्रातः नगस्य पाक्रोतीर्ण मयोध्येतुधर्मगर एवं प्रभावः ख लुकार्तिक्रेयंमक्रिप्रे रिक्षिप्रकृति या पा सन् का नि प्रताक्षिता विन दे ही जी बना सद प्र सं दर्शनता सनो ते।। इतियो मपुरणेका नि कत्रात्मेख न विक्रांप्यः।।सतै उत्त न।। इस क्रावण्य देवो विस्त संपास ितस्तर सापसंध्याबिधिक है जगामन न नेग्रहे एवं प्रभावः वित्रोपेका हिन पोपः ना शनः विस्तु विपाद रो संभी मिति सिक्ति प्रति पत्र त्वा वा पति है निः Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

36

विविस्थितः शिक्ताश्वका कि कि पिक्षितिः ज्ञाचमा ने परियान्य ये ने प्रश्नितः विविधितः विषितः विविधितः विषितः विषितः विषितः विषिति विषितः विषितः विषितः विषितः विषितः विषितः विषितः विषितः विषिति विषितः विषितः विषितः विषितः विषिति विषितः विषितः विषिति विषिति विषिति विषिति विषिति विषिति विषिति विषिति विषितः विषिति विष सियमवन चेन्त्र महाराष्ट्र में स्थितः पत्ति प्रमिष् वैविष्णे मं प्रवेतिति रचेरमेरिष्यास्य नित्रमेनरः श्वासप्ते रहे प्रमाना र कामे त्यपाना वितरः प्यतेपापिनः पस्पक्तमा ना स्तरता तः सम ता खा महा द्वार प्रन होति र वा प्र पं प्रम्य मानि से पारोशिव ध्यं प्रमिक्त करें: अऊर से ब्रंध्य मानाः करने पत्र प जेंड विनः सज्जनाम क्राप्ताण प्रांतिरेधनी हपेनरः कारामहें के नेपापः प्यने पहिले करे ग्रमाविषिहिष्द्रिपंचेध मेशदिकिः स्थितः केर क्रांमितिन मांचे निर्मेष श्येपुं ज्ञान्य प्रशेषार्विभा एते शास्त्रत्याचा स्प्रिश्वसाः प्रशेषा हा प्रयोगिनेक पहातानएः षर्गरपर्भ पर्पेहरताः सदाः र त्रप्राप्तमेष श्पष्ठं निर्पमञ्जे म्युधामुखाविप्यन्तप्रमाप्रस्तान्यः अभन्तम सक्तिदापेश्रमाभिरताच्ये म ज्जामानः अंद्मान पर्यते खनकर्मणा यद्यस् रिविजधा है। इसाविषिहिसंस्थितः ण्डेंभी पाकी सञ्जाणितिर में बीर दर्शनः में किते तादिई व्येधने खरिबे तो दे पे मह

भ्या रही

:सर्वदास्ना नारं सप्तः। ऋक्रकोदा पदानेषः परदी पंचने। धवेत्॥ ति देशाः ब्रेस्ट्रिक्साव्यस्प पर्राहतव।। स्वयसस्य नाविकाः व्यस्प क्र स्राम्य विशेषकार्यः। हे इति क्रिक्स प्रमान्य विशेषकार्यः। स्वयः स्वयः। स्वयः विशेषकार्यः। स्वयः विशेषकार्यः। स्वयः विशेषकार्यः। स्वयः। स्वयः स्वयः। 36 तात्वसः श्वभन्ने क्व बस्वरिं। सर्वाभावे खती कुष्णी वा स्मापे ने जा वा मित्रवाम श्वत्यब्दयार्वत संपूर्णहेतवे। अप्यान् दः वर्षत्यमः खत्यवयो जोञ्चलराम् मोद्र तो सर्वियस्त तर्भिस्त बस्मा स्त्रात्म त्रातमी हती हर्। उनव स्थरन सर्पि भग वान् विस्तिवन शेमपः। नुद्रस्पे वर साहत्य वाश्वेवासक्ष्य स्वाद्रश्नित्य की नेसेनेते को पाष्ठरस्थ तथा दः स्वापद्वाधिद् छ ने विनाश्च द्वर्रां ध्वया नाय वः व पंच भा त्वेमाप ना ब्रह्मा बि स्रमहे श्वरः। एत त्ह्र प्वत्व ना श्रामी न प्रहातिनः य उन्न नापार्व नी शिवणिद्वेः सुरते नुर्व नो किल। अश्चि वास्यावेषेया वेषावेषे पर्वमुक स्तिष्ठगान तस्तु पार्वती अक्ष शशाप विदिशे कसः भ्रत्तिकप सुरह्यं शाल के 南台 मानार वनशाकि मिकी यह के हो ने जान निस्तर ने सरक्या न स्थान्य म स्वापं शास राम हैं यस मिन्य प्रास्त उन्हें। इनेसा पर्वती देवी उंश व हा दसनसा। तसा दस लिमाप ना बुक्षाविसमिते ब्वराः। तसादिमो विस्तृतह खेरा बुमो ब भवत् के धिव CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

उपनि रे: केंद्रशानिः र विस्मित्र स्वरूपिताः

क्रियप्रम् सम्पद्धः विद्विष्टिमे सिक्षित्रमहिद्देवनस्पतः क्रिक स्विधिसम्प्रक्तिक्षत्रतिवस्प्रमः श्रवश्पनवकर्त्वः प्रपृत्रः स्तिवार्षा त मासकामे इति सम्पक्ष भोग कामे एपापिक एवं स्थितपराक स्विष्त स्थः सेक छित्र तः दुवारएपियतो काविका ब्रिजियार के डितः क्येते व व कर्तवे कार्तिक बत क्रामम पस्मादनं वपानं देने ता ज्यं सर्वणानरे स्त्राज्य क्रिवद्यं वज्ञाने पश्च नरी नित्य ६६ वतः कार्त्तिव तर्वते न व र्त्त वेत प्रयाम नेत् तस्व व स्पापिष्य हं रागु द्वं मुनिस्त्रमाः विस्तारिव प्रणवाकुर्या स्विविद्यारा शिवविद्यारा भी बसर्वदेवानमेखाद विस्तुनाम प्रवंधा निर्माणा परिस्तु सिन्न हो। जासहस्रप्र नस्पष्तमाष्ट्रोतिमानवः वाधक्रत्युउष्क्षियान्त्रेष्प्रप्तंत्रवेत् सर्वेतेष्पेव माहो स्वन र्न का पत्ना युवा स्पेत्र न ने में नहां पीपवा सिवा हि ता हि उमान है क हिं की नी माध्यमार्जी त्रीप Sast University Delhi. Digitized by Sarvadya Sharada Peetham 'रुमारवलिकतापञ्चपदिचापप्रताभवेत्। कुन्याचिष्ठित्वस्वस्तितुः विविध

24

वज्ञां चर्ति खा। वृताशकाः ऋतासानुन्यायं वेद्धिनियतोमम नाजामिक्येभोब्द्यानयं जनमार्थः वेतस्माद्यां वाच क्यानायामिकि चात्रवर्तते संस्थतव् तबयाज्याचेत्रस्तिः 36 । निर्वेतिविद्धार स्वतन् निर्वेवाचे वेद्ध्विनिर्वेद्धिमन्तिकीनं वृद्धन्त्र प्रतिद् नादिकं वा विनेवत जनसम्प्रहम् प्रस्था उरागनदा प्रस्था प्रतिवा वी वापितज्ञनेवयनवसाम्भरं उन्नमीनीतिवशालोखवयः सुर्वियंवद धर्मा वाररतानि त्यं तत्रमे अवसाम्परं त्रवह निशेश गरेप नदंप सो कल हो भवेर निशेशा द्वां त्यति है पः साधिस्यानवसाम्परं दुरादनद्तावित्यंतज्ञनेववसाम्परं अविशेषरद्यांगः ग्रारणं पनस्त्रीसेवनं यत्रस्यानतत्र असाम्यहं विद्यासञ्जनदिकानामाना यत्रनह नेते अत्यत्वाही पत्रवित्यं तत्रवसाम्यहं सत्तावाव रतितहचनेश्वलि पत्नावह अवंग ताबराग का मारे हे या वस्पानिविचार यत स्थामितिव चस्तरया गुलाविदात कार्वात् अवश्वस्य सम्लेखिनन स्मीपतास्यां त्योगस्याव मध्नोवप्याव क्षामनमम सताबाब इतितातनसंस्थाळाकामादालकासादा व्रक्तिसाविरं हास्वतः एमधिक्रोबीकं स्मत्वानचीचिवान । सीग्रह्मानविक्रीक्षेत्रके पाववीतः । उन्यता विक्रीतामय स्तान वा वहार प्राप्त का वहार हा तक्ष्र वा व

राम

₹

लरतः सर्ववृत्यक्तिनो भताग्र सार्थित रच्याः॥ ज्ञायापुरे के विव वटार्विया यो हा सामान प्रत्य प्रति हिस्ति विते वेला । निषाम बर्जाण जीविक्या जार ॥ इति म्ही व द्वार ग्री सामान वर्षार विवाधिया वः स् य उ तिस्य शत्वं कर योषातेः सत्तवो धितरु स्त्यं स्पर शत्वं च कथे था प्रः स्त्या यं संनित् स्थाने स्तुअव समुद्रमणमा द्यानिरतात्या पुःश्रुगतमाः प्रियंचको सुभते यो त्मवप्रद्धितः यावजीयवद्गींगसोलस्प्रींभायीर्थमात्तसः तावित्राप ीमासल स्मीरतं वृद्धपारिगनं श्रीर्वाच स्थरंस्कृत्यक श्रन्ये छाँ परिशायिन त स्मान्यमायनामेनामेखेस्द्न विवाहिवयमात्पश्चोद्बिधमीसनातनः स्ताउबा च ॥ रित तहचने प्रुत्वासिविस हो किभावनः उद्यतिकायम् नेषे स्टी विकास तथा स्रात्मवाक्याउरोधननामनस्मीद्दोकित स्वत्मवास्माद्दानामनते विभ्रतीतउप वितता रत्ननवमानसंविगिष्ठिरोहरो सम्विविस्वाक्याना विभ्रतीतउप वितता रत्ननवमानसंविगिष्ठिरोहरो सम्विविस्वाक्याना विभ्रतीतउप वितता रत्ननवमापन्नमानयामास्थ्रम्भित रुग्निध्स मार्थमानस्व स्वाधितारितम् सासम्बद्धामायामास्थ्रम्भितर् रुग्निध्स मार्थमानस्व स्वाधितारितम् सासम्बद्धामायाम्यस्य पितासावविद्धिम् र जार रत्व दिन्छ।

36

षर्गः चरित्वाः अहंबुक्तः अग्नेन्द्रं वाद्यवा कुनित्ताः स्वंदन्त नोसे व्युता वेथा वृत्ता श्राकाः स्वेद्रश्रेत्रसंद्रक्तः संदर्भद्रक्षः यते कुद्रतेऽवृत्तिस्त तो वितिरेते कित्रते ने ज्ञाते वित्रस्था देवे कित्रे कित्रे के ने अधिततः प्रथम कुनितः प्रवन्न ने संविद्ध ने स्वः प्रवेद्ध कित्र के ने विविद्ध कित्र के ने विविद्ध कित्र के नित्र कित्र कित विभागाध्यवत् मिन्याः पाद्युगनंगर्भावो वाच्योदराम् म्य स्मी वा न्यांवा मिन्यहेया ते सुने चैक्ने निष्यतं इंद्रशीतक पंत्रज्ञाक प्रमास्य भावित शतनो महराश्चर्य हेन्तु चेतत्त्व सहित पूर्व नत्मिन क्षांवानं वेक्षात्वती सुने तस्यास्त्र श्वज्ञगतापतिः प्रतिर्भत्तित्व तस्य द्रभिनिसर्वेने एवं जे समस्य द्वा वरस्व की तु कं मिक्त प्रवासि शोभने हि उ च द्वि में चावनः श्रुत्य के निक्के वा न्स्यस्म ता भोक्षा भणित में चात्व स्त्री के वह वच्चेत्रंवदास्य नृतथापितव्याज्ञया । य य च चरक्रतयुगेदेविवयुरकोति धार्मिकः बालदेशसमामातुष्विक्वान्यरिकीर्तितः पत्नीतस्याम्योमातुपसुविष्यमादिक्ती तस्या कालेऽनपसाषादेख्योसंवभ्रवतुः सममाविसमाचेव्रविसमारिष्येतपा कालेनविह तेतेतुषिरमारच्याधिते विमनातत्रज्ञतना प्रकृतिप्रतिगाधिनी जनन्याः सम्जानुनीच् क्षेत्राः शिनुकादिसा एक्याच्यामातृस्वप्यप्रजीवन्तिः वास्यान्त्रभाजियविद्याः CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तत्रयदातंत्रदृद्धांका स्वादरोद्वस्त्रत्वम् रत्यागेनदुदिवता तत्तस्यारद्वत्वस्त्रीवैद्धं हम्बनेश श्योत्।।तदाविज्ञापयामासविद्याद्रविज्ञानसा। अस्तीद्वाचा स्वातिकार्वे ति ने स्वातिकार्वे सामेनदुः विता ताना खासियंतुं पहिह्मपानी हेयदि खिया। हता न्या न स्यायहते तो विद्यु स्तनाम छह्मपानितः। ज्याश्वासे यन्त्र न स्त्रीतां वचने चेदम ब्रेबीत्। स्त्रीहर एउवाचा ज्यास व्यवसमासाच्यानिकरिक्रमम्बानमास्त्रमेवो होव सावास सेन्य हतः।।प्रयहेयेचेपि क्षेतित्वो अधा गरह धृति राग्नेति विष्वाति निकाति निकाति निकार विष्युत्तास्तु वे। स्ताउवाचा। क निषामित नीसातु मेषा प्रशिवनामानसा प्रोबाचलिस तेम नीदत्ता हेन् नेप्रपुर साष्यतु द्वायमामञ्ज्ञेस्याच्यसगर्वयो तस्यात्रमंतुनामध्यासायपरिरोचते द्विन्ताताय्वता चमापुर्ननी गिष्णित मद्वाग्यात्सपति के सिम्समाया ता विकासते त्येष वयाय ता तसे सुन छपतिनासनः नारं बल्तेरं के बल्तार्यो के समाय रिते ने तरकार्य विधास्पति विनेत दुरि क्राविरं रतिष्टली भिता न द्वी भीकित्या नेप्छ्यातस उवा न खाला स्वाना वा वा याने : कर्तिति केमता एक रित्र सोक जनकः कालः काल स्वान जनः अने ने बहतो श्वाता हा विदेशः स्वान प्र यः विधानमास्त्राम्यान्विजनकोन्न एतस्यगुराकको विवन्ने नालं नतुनुयः स्तदाज्ञानुगाः सर्वेदेवगं धर्वितन्त्रयः ददाति वित्तकः तहति ती वृत्वित्वेतं न्यनुनीद्वते न 

प्रविद्यातथ्वसंस्त्रतिम्रिक्तेषांकरेखिता। रयंवय्वतिमार्थाकुलस्यपरिक व्यतः। दनयंतिवसं स्त्रापमुक्तिमाजोहिते जना। व्यय्वेकाप्यी क्रयुतिपिर्विक्तिर तिथियाः। स्त्रात्वासंपर्यजेतिरं। नजीवाजनाभा विनः। तिश्रापेवतपावाकासस्त्रीतन्त्रसर्वे विमक्षिपिकरंगो। दन्यादेत्रर प्रज्ञ प्रत्याधाकुलंततस्त्राधियवके जागर्यासम्। एवस्त्राप्यतंथि विम्यास्त्रातः साउनक्तियतः। तिस्त्रिन्ववष्ठनःसर्वोष्ड्रयात्रास्वा अत्यावता स्वायपुः कृत्या सर्वो राग तज्ञ लाश्ये। ताव त्सामुदिताबाबाजगामवदरीवन।तच्चाछोत्तकारासीमाधवार्जतपासिवे।एकपार्विवारपापा ल्लाका के विविधि जागुरति ।।ताञ्चा चढणाचे षडपवासी विधी यते।। एवं संवी वितान निदत्ती व तालपारा श्रीस्वव्रसमागम्यसिवयः युतकविवार। किंग्रतनिवित्र वित्रामित्र स्वामित्र स्वामित ते द्रणा च वाशिता के प्रिवन्मा में वं कष्टमा वरा ब्रुस्त की तम्प्रवाल के विवयप्रतिमात्या भी तालगाम विवस्तुको त्यिता विक्यिता भवत्ये विज्ञायप्रतिमाहारं वृतभंगे विचार्यन प्रारा स्यक्षमण्यक्षेतिविद्यप्रतस्यत्वागत्यवनमध्येसावितामाकस्य दः विनाष्त्रीप्र रयामात्रवित्विष्णुत्रसीद्विष्णुक्कियीच्यायामानिष्णुत्रयीज्ञे ।। स्नात्वस्र हमनसाध्यायंती नगदी व्यां ति सिष्या विति सागिता मिता प्रियो व निता परि । याव निता व रहते बाष्ट्र के क्षिति ध्रुवं। ताव द्वित्रा नत्रायां तद दुष्ट्र सामनः स्य विभावमानं सन्ति होती त्वोक्सपूर्तेश्चर्रक्षेत्रः। जीतवस्वधरेः प्रायंवक्षधरेर्यण्डस्वायारीहणावाश्चनादरेहि । मानका नाहिब्लोविनायास्थ्रेसा सात्कारेगाकुत्रविताएवं यत्तिविताद्ताययः स्वतिवि

रान

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Dellai, Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

विध

्क्रोधितम्बतिष्ठवाचित्रकृरंपत्ववीवचनमंग्रहत्।दिदस्यास्यसत्वस्परंभिकस्पद्ती सिनःभू दृशोस्त्यभिद्यावीरियचासंयतिश्चारियाः।इतिनिर्मत्विताप्त्यानविद्यान्याने मापर क्षिद्यागर रस्यधर्म स्यूपंत्र पत्यूपकारियो। तस्माती क्षितियास्य मिकिमत्र त्यूस्पम वि.सं रुख का निर्णते विक्रिपिया छस्ती विस्ति भी न्याविक्रया ते त्या पत्ती प्रवी भाग में स्ता पतिष्वक्रतिज्ञांष्ट्रचीवित्रस्रांष्ट्रवत्राह्मस्य स्वास्त्र त्यास्त्र सामगामि विजनवने तनाप्रप त्ति साम्भासारणं कश्यपंतपा उपगण्याने स्तन स्व विद्यावाच इः विवता स्व ताते वसं त्यकामा नाचेवय ताचिता तस्यात्या गानहंत्य स्थिपितु दर्शन त्यात्यसा जिशास्ता विश्व स्ताष्ठवाच द्यान्वतः। निवानेवजननीनश्राता भक्तिनीजनाः। कस्यापिक त्रिव्येनेवासि संबंधीका विवाधकः । विकास तीवजनमा सिमायरां स्वकृतनवे ।तना पिष्ठावदः स्वातिस्व कतिनेव अंजितातस्या विकास्यापं ना विद्यादितव्यानने। बदलेवसनीत न सापं संध्यास मागता प्रसायप्रयो विष्ः संधाकर्तुन वाशये। साती विष्ठना वा वा नगमे तरते। दि शि विशिष्टिन्तियंतन्दर्शेष्ठतपावकं । निषिकत्या व्यतन्त्रास्तरा ग्रेस्न तुम्गाताः स मागम्युचताक्रवेकारिसंस्थाः कुमारिकाः तरागतीरमास्नाराधा कसस्पविदिकां देक प्रावरतैवे प्राव्यविषये प्रयोगिता । विनेश्च त्रयोपनेश्चित्रोपने दंसते । हिन्ने वाच ताः कत्या कि मत मधी कि मार्थ । कि मिति ह्या पिता वास्य फले कि एज नस्प है। एत ने व्य यो बे यो कर्षा कुरुः के मारिकाः । कुरु का मित्रोहे । सामित्रोहे के कि की मार्ग के स्मान्य कि प्रयोगित राज्य ₹2 ₹2 हानानांचेवसर्वणवित्रार्धतचवार्यां ब्राह्मयाः स्विवविषयोमंत्रवत्त्रातमाचरेत् त्सीमेवच श्रद्भपद्त्रीयांच्यात्रमादिनि बाव्याचतर्यति द्वानरनारीनवंसका प्रातः सर्वेष्ठशंशीत्सा नंकातिक मात्वयाः स्वातावेकातिके स्वाकाः प्राष्ट्रवंती स्थितं प्रसंगत्त्र उचाचगर्रने वेश्वनः वेश्वनः प्रवान्यहादेवा स्थान खेन को नारम्य विज्ञान्य महिन है से हान ने प्रवाद कर विश्व के वि प्रासंसर्वेषासेषु बोत्तमं अस्प्रिकासे वयिष्यादेवाः सनिहिताः करने इजिप्रातिमहाभागमं जनातिहिजातय तिल्बेडिहरगंपचरजत्म्सिवाससी जोय्यानानिस्स्पतिसर्वभावनस वत सर्वेषामेवप्रमानंकत्याप्रमेविशियते वृत्यगाप्ययेकत्यां प्रशंतिविधिवन्याः च कुँ वसितिक्षां याविष्वाश्चत्रदेश रोप्रकाल्तिसंसाप्ति स्त्रोतिकत्यको इतः कालेत्य धर्वविकः शक्तस्यदर्शने तस्मादिवार्ये कन्यायावन्ति मतीभवेत विवार स्वयवर्शयाः क माया कास्पते बुधेः दात व्याश्चात्रियाचे ब बुरुए गायतप्रिवने साद्यो द्धी तबेदाय विदिना बुह्यचारियो कत्यावरच्रमारणप्रथम एवविधिःस्थतः पानिवेवरोमागिकत्यापा अवतनी वन ताबद्वधन्तरसामितद्वाकेष्ठियते सहस्रमेवधेन्तनं शतंचनदुरंग्सम द्वान्दृत्सम यानेदशयानसमित्यः हयपनसहसिम्बाजनपनिविश्वासते जनपनसहस्रानास्वरीदानंद तत्ममं खर्गिभारसंख्यारों विद्यादानं चतत्समं विद्यादानात्को रिक्रणं भ्रमिदानं विद्यादानात्को रिक्रणं भ्रमिदानं विद्यादान प्रतिदानसहित्योगोप्रदानं विशिष्यते गोप्रदानसहित्योग्रास्त्रदानं विशिष्यते स्त्रनाधार निदंसवित्रशस्यावरतं गमं तस्याद्यं प्रपतिन कार्तिकि विवाहन वीशितु व्यवदानानि

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

No.

स्प्रमहात्म्त्रवादमनकस्पचाकेतकीष्ठव्यमहात्म्प्रचाधिन्यास्वसः वृत्तापंच्रीवास्यमहात्म् कथ्यस्वविस्त्रात्।ई स्रावाचामाध्रयसं त्वमञ्चलको छ र राहितवान यपाप्तिनसंह हस्त्वसमानारित्रबेस्वः शुप्रत्रेशात्यमावस्ततारिताहंनशस्यः निश्चव्याकेशविभित्त स्वितिष्कतिसर्वरा वेस्रवेदेस्वं अर्थेयोद्दाति क्रिजानमः समाग्रमहीदावेस्तरायं लमतेवसः कार्तिकस्पत्रमासस्पको देशेनाचिनाईति एकतः सर्वतिक्यो निसर्वदानावि चेकतः एकतेजीयवानानिसर्वयज्ञाःसदिस्याः एकत्रप्रकृरवासः क्रम् सेनेहिमालये श्रक्षरस्पवरेतीचेवारा राह्या चश्रकारे एक तः कानिको वस्त सर्वेदाके यव चियः॥सत्यवाच वृत्यस्यामरकार्तः अनवीवयन्त्रोहरः कार्तिकस्यानमाहात्यकथियमिविसारात। विकार र बाला हि जं हत युगं को केने तातुन्त निष्युगं हापरवैश्पनिस्पातः महन्त वियुगंस्यत क लोबत्समनुब्यागां के विस्वज्ञानक में गि तथा विक्य विष्या मिस्तानं का निक्रमा नयाः अवद्धानः पापास्माना स्तिको किन्नमानसः हेतुनस्त्र प्रचेतेनती पद्धनमात्रानः पात म् त्याययोविषः प्रातः साधीसदा मंबेत् सर्वपापवितिर्ध सः परंबु सा विगर्म सानेवति जियोक्तस्तानविद्धिः षदानन वायव्यं वाक्र्यां वेतिवाक्त्यं दियं तचास्यतं॥सन्तानां वास्तानां ना 

का॰

युस्यातात्रिकिविस्पतमान्सा विषयात्रवात्रवात्रीसात्त्रत्रमं विवेदता लाष्ट्रनेर्द्वनिव यदीप्वस्तुष्मार्यात् जागरंद्रवदवस्पवास्रेच्छमादतः यमद्तेर्नताव्धानीतास्य म्मिन्स् ममुद्रम्थन्यातुषाविभिताध्यंकित साचलंसाष्ट्रनाचार्ष्यं जन्मनिक ल्यिता खीषा खाने बद्ध में प्यापाका म्यान हशोषती लाखी स्वर्व छ एपा भ्याना विद्योदा छ भाषिति क्र स्वताकान संस्थानमञ्जू व्यक्तिक हे क्र कार्य सिद्ध मीते नी तचत सायां चता ख्सि रुखं का स्वस्पना श्रित्य न स्वीः संस्थिरता निवात खन स्वी न स्वी र स्वास्पन कं हे इसम्युता ज्ञानस्विद्वानापश्यताको मञ्चारिका रहिक्सस्य चिरतंत्रर हो।ति जाबयेत्रयः सर्वपापवितिर्धक्तेत्यमतेत्रस्मिसन्धिंभः वाद् तिजीपद्म प्राप्ति निक माह्य विकास निवास मान्यायः।। २२। स्त्र इत्व र्तिस के समाकर प्रसासन जित्सतात्व हरेकी कंप्रमहामा जास्त्यावचनमन् की ता सत्तावा चा का निकस्प चमाहारे नश्चतिवस्तरात्युमी सर्वधाववत्रासानाकातिकः प्रवरः स्टतः । श्री स्टाउवाचा साध्य णस्यास्यकातिकवृतमादग्रत् शोनकायध्याश्चोत्तंस्त्रतेनस्वम्भाना द्राज्यान्यः एत्ववास्यकातिकवृतमादग्रते शोनकायध्याश्चोत्तंस्यते व्यतेवग्वय्ये कानेदेव एत्ववा वहूविवज्ञा मध्यरहस्यानिष्मृतानिच् य चाहिन्रास्यमानानिवेस्यवेतत्वया वुको संसारमाजारेषाकाडःखादिलस्येटते तेषाञ्चरणाचीपकष्यवयपनितः कार्तिक स्थवतेवहिर तानस्थवद्र तावर येन इः खावधी ती ज्ञानिहान कि मानवाः करने एवधर्म स्पर्कायकासामिकारं क्रिकारं क्रिकारं क्रिकारं क्रिकारं क्रिकारं क्रिकारं क्रिकारं क्रिकारं क्रिकारं क्रिकारं

न्त्र

मीहिताः त्यन्ताचितंषुनःसातुध्यायंतीकसमितिके विवेशजनधीयन्तासारिक्यविष्यभी कार्त्रिकच्तजन्यनप्रयोग्यमिकंकरैः नस्टब्स्ज तम्माप्रमाधनध्याविकाविकोः लागु नर्जे अधेर प्रमेणने ने कता बना बातु सासमता बातामार ता जनमाहिता मारवत्याच क्रिटेसाचकारगरुमि विद्याता एकदामानु त्येसास्याः समाद्भूता प्रवेशयाने नेता लेखप्रवेशया र्गासायपोकाचनंपुरं विस्तातन्त्रमासानां पंचकं मातुलां स्व सापुन रवीर अनेरामात्रे पमन्त्रस्य वक् लखरीक्षणिद्वातवस्त्रितिस्याः स्वाताविकास्त्रीयंभाविते पीचमात्याः पूरतस्योजयामासःसाप्रमायजमिर्दं मस्योद्नोनेमातीबावसप्रज्ञात्वस रंड्सेनस्ततत्रवोगजाधर्मवृक्षक्षशः कार्त्रिकेस्यनिवयदीपानस्तरंपितान् रहोतस् रिचपीचित्रमं वर्षक स्पायत् साचरंतीप्रदेणनापरिचणीचकानिक राजमंदिरतामस्य निमेशपरिचारिकी एवंवेसंस्थितायां हित्वकिंपित्रविष्ठते ने ल्पानन्यां मस्प्रमे कार्याचलतथा उपाध्य स्थायकक्षायकक्षात्र देनेनेने दिर कस्य नागरंग ने स्थातः पीडितासती हादायाचितिवुद्धासाराजामेदिरप्रागमत् मस्यवार्यनकामामन्त्रमती विषया ए जो वन विगर्वस्था मेनिका भे भे जागरहे प्रविद्या तस्य भ्येतरितस्या दर्वे तदा भ्रतस्परित्वेननंत्रामा मेखन्मवः प्रमेद्रवापुनस्तस्य इखाना कविगर्रमां नुक सियनराक्तर्पियानस्मानियुः विवास चेत्रास्क्रां संक्रमाध्यम् निक्रं यया सामन

र्जूट व्याः

तिकेष्यसमाम्रोतिराजस्या प्रविधयोः विमासानकषां विस्ते स्वानां चर्यानं नमने कार्ति केयस्यहरे स्प्रापद्याविकस्य अक्तरेयः स्परेन्या सः किन्यानमा शिया कार्तिके मुनियार्द्य लक्षकारिष्ठगानवस् अवेतीमधनेमासिहन्यत्यापेष्ठगानितं धनाक्षेत्रानवानोकेकिकि लिकाखतः यकुर्वतिष्ठनित्यंपिअपेहरियज्ञनं किद्तेर्वहितः पिडेर्ययात्राप्ति पित्रेने तारितास्त्रवितरोत्तरकाञ्चनसंश्रयः सीरादिलयनविकाः क्रयतेषितकार्गातं कत्यका रिदिवण्यावसतिविद्योः सह कातिकनाचितावेत्वक्रमतेः केषले स्त्याः नमकोरिष विषेद्र ततेषां कमतागरे अहो प्रदावित्यासिपतिताः किविकदरे विभीविताहरि महादम निश्वातेः क्रितेः पद्मिनेक नदेवशाया विवत्सम्यापति वर्षायत्मस्यूपप्यस्य करते नति अवराध्यम् हिलाकात्रासञ्चातातित् पद्मिने केन्द्रेयः समतेष्रगतितः तुराचीव्यत स्यायोचियत्कानिकहिं पनेपनेष्ठिके स्वानिक सम्यादनं तुल्योगंधपनेत्याति क्षियतेष्ठते बत्यकोरिषहसारिएष्ट्रोतो प्रवितिकार्या अखिषा र सिदेहेत विक्रास्त्रोतीतयो बहेत् सर्वरोहेस्तवापापेर्वक्रीअवतिवयन्खि विस्तिर्मिन्यप्रवियापस्तागंस्यप्रते अने एरितावितस्यति व्याधयो यातिषंडशः श्राकीद्कंहरेर्मितिनी व्यपादयोर्जले वंदनंधः प्रीवंत्रब्रह्महत्यापहारकं प्राबुद्धानस्प्रमाहात्यंत्रस्यामावतात्रम त्वत्त्रमामालिकेके क्रिन् विस्मान त्राप्त वक्र तीर्थिहरिएका मधुरायां चके यानं यत्र लंदा समते जेता व वानेनतत्वलं जितेदियः शांतमनाः सववारेगानं धतः वानंकरेतियामान संसातिन

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

30

वाम वृष्ट

नीतितुत्पक्र निव सर्वकामङ्खाधेतुः वर्षाचेवसरस्वते।कार्निकेष्डग्रम् न्यानिपम् देवधर्मानोबत्त्रमहित पत्कलामर्वपापानिष्ठात्यत्रिद्योभवेत्।क्रल्डबन्।इतिएयःस एशंसः उनर्वक्षं प्रचन्ने पाविक्षं वहभास्तुत्वात खागु धंनपेश्वनः रेश्वर इवस्य परानेव जिप्यु ज्ञका विकेति प्रमेकते प्रान्तवर्जनादेवल मेखा दायराप्यते संया वेकार्तिक एका परानं यस्तव जीवेत् दिनिदिने तुक्त स्थाप्य संयान्नो तिना नवः बाह्य रो भ्यो नहीं द्वा गृहरो चंद्रस्यमाः प्रस्वेत्वभनेवस्तत्यः लेभ्रानिकापिनः भोजनेदि जदंपत्याः प्रजये विवि पनेः कंबन्यानिचरत्वाविवासोसिविविधानिच उपानस्वातपनेकातिकेदेरिमानिवि त्यिका १२ प्रति वा प्रक्षा द्रमप्टेः सह पः करोतिनरो नित्यंका सिके पत्रमे जने बुत्रस्यः स्रतः सा सात्यतात्राः सर्वकामदः प्रध्यं मेवजीयत्र का निकेशि रिव्वाहन वृद्धा विसुर्व रुप्रवचणदेवाविषयके षेष्वरं वजीयस्यवं वास्त्रं वेसवस्त्रं सर्वेष्ठराप्रवाक्षेतिके प्त्रेतुभोजनात् सेव्यान्यध्यप्त्रस्पक्षिकाष्यसातपा प्राश्नान्यतिशार्द्वनरोन्द्वमा षुयात् अज्ञानात्मशाते यहा अध्या काष्टिना पपः किष्यां वास्रियोद्या च्युद्धां मनति आमिति तिसदानंत्रदीसानेस्बिदासाधुदर्शनं जीजनंबस्य नेतुकासिक्षिदायकं भौनीपदाशामोजीन तित्रसायील एसमी कालीके स्तितिशायीन्ह्रमायावष्ठगहते जागरेक तिके मासियः करोय फागोर्षे पामोद्रगत्रेक्षेनातिज्ञातहाय एत्सित्र वित्य हुन्नदानेम ज्यस्य बाहे च्यारिसा का निकेतस्य (मं प्रमिण्योष्य वोष्ट्रमा स्वाधिक स्वाधिक

मुंहा बाव तितंध्वातंप्रजितं चनमस्ततं। शास्यामधिः नंद्वायंतिवाकत्यने कथः। विहंद्वाय्यायां तिवेगान्य गण्या अयात्। जनः करोतिष्रनुतः शालग्यात्रशिलाचित्। अत्यावायदिवासत्या त्रताष्ठात्रम् वाषुयात्रावेव श्वतमयं नास्तितयामर्गातम् नाः।। यः करोतिन र नित्येशातगा प्रशिक्षार्वनाणेश्वमात्यादिनेवेदिश्वदीविदित्वनेः।।गीतिविद्यस्त्रपासीकेशालगाम शिलार्चनं।कुरतिमानबोपस्तुकलोभिक्तिप्रायसाः॥कल्यकीरिसहस्रारिप्रमतिस्त्रम व्यविश्वा लगामनमस्कारोभावनाविनरेः कृतः॥मानुषात्वक्षयत्वाम्भनायनग्रम् प्रदेशित्वत्यद्विष्यमन्यमंनरमंतिये। वाष्ट्रदेनते ते यामञ्जू काः पापमाहिताः। मञ्जू को पि चर्याम् तामुक्रेलेकाद्योदिन।। मपातिस्कद्तामिक्रेनिर्यममञ्जातकः।। मिहिग्रयुर्ध नकार्यनाम्य मुद्धिविधीयते। पाति विदियिता विद्याः साति विक्रियवद्य गायस्तानापव सम्मर्यः स्वापीस्वप्राधिकः श्रास्त्रम् वित्याचातुस्य प्रम्यत्वाद्वदेवन्त्रस् खिस्यानप्रमभितः। पद्मकोरिस्हिल्प्रिलिप्रितिस्तियस्ति। तस्तिकोरियस्ति। लगामितार्वनात्। प्रतिते हं नते में क्रेनिमें नते ने दें ग्रमशिलार्चनं।शालग्रमशिलाग्रेत्यः क्रोतिम्मार्चनं।तेनार्चितः कार्तिक्षेयषुग्रानः मेकविशतिः।। किमवितिर्धिगक्षतेविद्युम् किविवितिः।। कालगुगम्बिताविवंनार्चितं यिष्वत्रकाष्ट्रवर्ष्ट्रममेवेचं छत्का केष्रयण चरत्। छत्का केष्यव्यवे वंपञ्चकोरिष्ट् वंत भेत्। पादोर्के न देवस्परु त्यकारिसम् लिताः। श्रध्यतिनान् सदेव स्वयास्य विदेवे न

या

Red

3.9

बेस्रतः । श्रीकास्य बाद्याश्राकारस्य वामाहास्य काचियातवा ग्रतः ॥पृथ्यविज्ञा नामा ने स्थानमा र्वदा। सत्राज्ञाचा व्यक्ताभगवान्क्षसः सत्यायेवहभाजगो। तद्रतंत्रप्रवत्यामित ख्युए। द्वंतयाथ नाः।श्रीतस्मावाद्यापंचयोजनविस्तीर्राष्ट्रकरेमममंदिरे।सन्तिहत्याक्रिक्वेचराह्यसेदिवा करे।तुत्नेषु राषदानेन पंत्यदन्विरिकी त्रितं।कायपादशगुरां क्रकें वर्षाशतगुरां मनेत्यसह तिगरि। तंष्रीक्षं ग्रेगासागरसंगरे॥ अनंतदेविविज्ञेषं श्रकरे सममंदिर। अन्यत्रद्दते असंसुवि धानेनभामिनि गृहे वैकेन प्रतेन अस्करेत सम्भवत्। अस्करेचन पावश्या राज्यसा राज्यसा सुरूदेवनरःस्तालावुह्यस्त्यां व्ययोहितान्त्रत्वेरापुराषाद्यासम्बीपावसंधरा ज्यवरस् वैमारात्यात्वत्याक्षंत्राज्ञापिति। मार्गाशीर्षस्वश्रक्तयाद्वाद्यं वृज्ञप्रविकार्यस् प्राक्षर्पप्रनः पष्रस्पाविकः शालग्रामार्चने भ्रयस्त छ। या ध्रेतपे धनाः भरति श्रीपद्मप रा रोकि निकारात्विकालको ध्यापः । अ । कि निकेष उदा चा अ शब न्यो दि नो श्रेष्ठ सर्वि धर्माः श्र ताममा। प्रात्नग्रमार्चनंब्रहिविस्तरेगाममयभे। दृष्ट्रावाक्। साष्ट्रसाध्रमहायाद्राप्रकातं परिएक्सि।तदहंसंबबस्यामिश्रयताममवत्सत्य।शात्रगमिश्रात्मांत्रवेताक्येसका च्यामयासरमहासेनतिहत्यत्रनसंघयः । श्रिन्नत्तेनययान्त्यार्भवासः स्वार्याः। पी तंयेनसदाविक्षाः शालकामशिताजनं कामाशको वियो नित्यमिक मान्विवर्तितः। शाल ग्रामिशितां प्रतिवित्ता स्थान भविते। श्रात्नग्रामिशितावितेहत्याकोरिविनाशन। स्प्रतिसंकी জীত ডিত

रिमिषिचित्रमानवः स्वर्जिम्बेचिषातात्वेषाष्ठाणाःसंतिम्दिमनाः शासग्रामिशास्यग्रावेन्दिन मास्तिप्रमंष्ट्रमः मानुषेद्धं में दो बेसप्रतेत्स्प्रमीवितं तिलप्रस्प्रातेनक्षाये दशतिदेने दिने तत्यत्वसमबाद्योतित्रात्नग्रामिताचीने पत्रेष्ठांष्ट्रवित्येम् विद्वतया जा पतिमर्गातुर्येशालग्रम्शिः वर्चन विधिक्षीतिष्यः कि विविक्तियानं विविधितः चक्राव अनमान्नातिसम्पक्षास्त्रादितंष्टं पत्तव्विमयाहबःक्रयंवः तेशानशनः तत्त्वेक व्यविद्यापितवसेहेन पुत्रक केले वस सिह विस्तिकिमाधारः किमाञ्चयः कर्षवाकियते देवतसर्वेक प्रपत्वनः। ज्यो कित्र वा । तिवसाविसदायां ने भारता ने वेयस ने वेयस च्यक्रोकेषाविनामानिवेष्टणु हारदेशेसम्बक्तेर्ययेत्रानायंयदि वासुदेवःसविज्ञयःस के बरेबातिक्रोमनः प्रयुद्धः समिवकानान शिक्षक्षेवच स्विष्टे बुठ अंदी होंक रंतुत प्रवेत म्य्र निरुद्ध स्त्रिपीताओवर्त्त व्यवातिष्ट्रीभूनः रेषात्र्यां कितो द्वारिहरू:पद्मेनिष्ट क्रितः स्थानानागपणोदेवानाभिचक्रेत्रकानाने दीर्ब्रकाममोपेतोद्विरोक्तियानितः इ. इ. विकानीया खूकरं हरिक्यिनं कामदंमी सदं चेव अर्थदं चिवि शेखतः परमेकी चन क्राभः पदाचन समन्वतः विवाह तिस्तपाय छत्र विव्यति पद्मते क्र सवर्गा स्तया विस्मृत्वेचक्रभुक्रीभने द्वारोपरित्यारेवालस्पतेमध्यदेशतः क्षिकानरसिंहश्वपश् वक्रमुक्राभितः ब्रह्मचर्षमाष्ठ्रचोऽसो स्रत्यचाबिब्र्दामबेत् वाग्रहः क्राह्मित्र ज्वास्त्र विम् निस्ति इंद्र नीतित्र प्रमुद्र सिरें बोनातितः छ मः दी द्वीकां चनवर्णा या विद्र न य विम षिता प्रत्यां त्या मा शिता ने पारे का वृत्ति प्रति ता क्रिने चुणा कि होता है वर्ग बने प्र

TIP

We

40

ित्यायोहिमाहे अवरो अत्वावे सर्व न चयु जयेत्यादे छा चया तिन र बंदा विद्या प्रचतु देशा जिया असी ग्रुपस्पष्ठहूर्तमपिविश्वमेत्।पितामहायुगाम्बोभवंत्यम्यतभोतिनः।संसारेषुःख्यातारे निम्जातेनराश्वमाश्वर्षकोष्टिसेहसारिं हर्त्वाराधनविताः। मिश्चिमकोष्टिर्मत्य अप प्रवाशिक्षवीवित्यंतस्य प्रांपित्वधमाकोरितिगसहस्रे सुप्रितं मान्वीतरे। का शी नासीयुगान्यकोष्टिनेनेकेनत्र बन्दानिष्ठनर्वहुमाह्नेन ए जयेहे स्वीनरः।।नाहं बह्माद योद्वाः संख्या कर्ते समीहते। तस्मा क्रक्रेयाचमक्रक्तेः प्रीत्य र्थममपुक्रका शास्त्र मानि स्पीयज्ञतिस्तिकेशवः।तज्ञदेवाः सुरायक्षाभवनानि चतुर्शास्यां कीर्ननेः सर्वेः कोरि भिश्च पर लेहाते॥ तत्करने की ईनादब के शबस्त होते करें।। शालगान शिलगात सह त्ये देन तिर्वताः। बसंति पितर स्तुस्य न संख्यात त्र विद्यते। येपिवति तरा नित्यं शालगामि शिला जलं प्रच्याबसर्हे स्तुष्प्राधितेः वित्रयोजनं प्रायम्बितेस्तुत्वेद्विद्यतेः किष्ठपेष्वगोः। चं प्रयोश्वकीरेशिववीत्वापादादकं हरेशायः करिततद्वातुष्वतिमाजल्यायिनी। कीरि निश्चापिकिकार्यमन्पदेवेश्वप जने॥विश्व खास्तवेदवास्तव नन्पतिदेवताः प्रमाण प्रसिक्षविष्यस्थते स्यक्षिपत्र काष्ट्र स्वप्राणसीनं तृशालग्रमणितार्वनं पोद्दतिशि स्याक्षकाः का त्रग्रमणिन्य क्र बंगाविषा पविष्युभक्तापत्रवेशकान्तिः शतेः। गरेषु वस्ततस्त स्यां क्राव्याने दिनिकित्रे॥ सम्बातः सर्वती क्रीष्ट्रकार्वस्त्र स्वित्र स्वाक्षकार्याः स्वित्र । स्वाक्षकार्याः स्वित्र । स्वाक्षकार्याः स्वित्र । स्वाक्षकार्याः स्वाकष्ठकार्याः स्वाक्षकार्याः स्वाकष्ठकार्याः स्वाक्षकार्याः स्वाकष्ठकार्याः स्वाकष्याः स्वाकष्ठकार्याः स्वाकष्ठकार्याः स्वाकष्ठकार्याः स्वाकष्ठकार्यः स्वाकष्ठकार्याः स्वाकष्ठकार्याः स्वाकष्ठकारः स्वाकष्ठकार्याः स्वाकष्ठकारः स्वाकष्याः स्वाकष्ठकारः स्वाकष् सर का०

नेचदानंच वारारा प्रणेन वाधिकं कुरुले वंष्रणांचने विष्युक्तरंत पा तत्रकी है गरां प्रपं बाराराष्ट्रं महापूलम् बुह्यहत्यादिकंपापयति वित्कारतिन इः तत्तवि विद्हत्या श्राण त्नग्रामशिक्ताच्यात शाक्षग्रामाञ्चलायत्रशिक्षाद्वारावतीनवा उभवोः संगन्नायन् सहि लिजनसंशयः ब्रुवादग्रस्थेभ्ववान् वृत्येष्वित्र जिल्ले के विक्रिवेदाना न कार्याविचारणा तत्य जनमञ्ज्यन जप्रमावना नस्तुतिकि विवाकार शासग्र प्रशिक्षाचीने शालगाप्रशिक्षाग्रेतुहरूक्ष्यक्षिक्षाद्यात् क्राहिकेतुविशेषेग्राप्रनात् सन्नमंकुलं अनुमानत्यःकुणीनंप्रस्केशवायतः यद्याधानविकारेश्वक्रत्यकारि दिवंबसेत प्रस्तुसंवत्सरंप्रशिविक्तिहे न श्रुपासते कार्निके स्वस्तिकं हात्वासममितन्व संशयः न्वराम्यागमने सेवन्यमन्पस्पतुमसारा तसापनाशमामातिवंदिपत्वाहर्गा हं महलंक्रतितिसंपानारीकेशवाग्रतः सञ्जनमनिवेधसंन्याक्रोतिकदाचन वानी क्यांपासमान्त्र त्यक्षपिरंतियाधना मुन्नि वयातिवितरः वसादान्य अविव गोष्ठिववेवदेहेषश्रष्ठ्यसर्वय अन्नेधाजीय संघल्तसम्माणतिद्रस्मः धाजीयः जिलि क्रांगेधा श्रेष्य विस्वितः धाश्रीक वहातार रोतरा नारावणा अवेत यः करिवहे सबी लोके धरेना लोकिषतः ताबतास्प्रशारिरतप्रपानं हतिकेशबः धात्रीक लंबत नकी प्रतिकाश्चाक्रमा सफलेजीवितंतस्यत्रितस्यविष्मनि याविद्गितिवहत्वधारी प्राप्तकत्वीनरः रावधुगन्ह्यागिद्वानां वृद्धियो नवत् नप्रस्तुत्वक्रीमाताभात्री

TIM

RS

रितः हरितं वर्गाम्यतेकोस्त्रनेन्तिविहतः ह्यगीबोहपाकारोरेष्ठपाचित्रिकाः वहविहस मासीर्गाः एक्टिनीट्यं चर्पके वैकुं हस्सि निन्ना अंचक्रमे क्त साथित प्राप्ति न सारे साथित कारे साथित साथत साथित साथ अशोभना जीधरस्तुतणादेवविचित्तिवनमाञ्चया कद्वकुष्ठमाकारोरेषापंचिविभ्रवितः व न्त्रवापिरू अववामनः परिकीतितः अत्योक्ष समावाद्यो विद्वापिर्शिताः सदर्शनस्तो द्वश्रपामवर्गीमरुखितः वामपाश्रवैद्यादाचक्रेरवाचैवतुद्क्षिरो दामे दरस्त्थारप्रवोमध्येचक युतिकितं दूर्वानं द्वानं क्विकामक्त्यप्रः विद्सिद्धिस्य सर्वामुपस्य प्रेत बोनमःसविज्ञेयोअक्तिस्वख्यदः दृश्यतेशिखरे लिंगशालगामशिलो द्रवं तृस्ययोगे श्वरोदे बाब्र ह्मा व्यापारति अवारकः पद्मना भस्ते पंक जनक संयुतः कु नस्पापक तो वित्येद रिद्रस्वी ब्बरोभवेत वकाक्र निहिर एका गर सिम्बा ने विकिद्दि क्रोत् स्वर्गी रेखा वक्र नेस्क्रिक चितिशोभितं अति विकासि दिकरी के साकी विद्याति च पाउरापापदर नापीता प्रवाद स्व दा नीलाष्ट्रपछतिल स्मीरक्रागेगष्ट्रपिनी हृस्ताबोद्देगजननी बकादरिष्ट्रनाशिनी एकसुद र्शनेत्रयं न स्प्रीनारायरोह्यं ततीयं क्या में त्रीयं चतुर्थे चन्ननार्नं पंचमं वा हर्षे चया म्बावन संकर्षणं सन्नमं ब्रायक्षेत्रकानमं ब्रायनवानक्ष्रेद्धानंतुद्धानकं एकाद्यानि इस्वाद्याद्वाद्यात्मकं अत्र देवजपा चिद्यपेत्रं नेतस्त्रके बहिन्नितियान्यात्या वनदेवभाक रूवा तुवस्प्याम् हिं सतायतेः यद् अवेत कि विकत्ता ते विकानवहते में तनाय 

one. ४२

जैतिव क्रास्ति तस्य संक्षाग्रा वामयत्र वित्य स्वत्य ं क्रीस्तुनेनत्वाची तिर्पणा चव्र नमा न्या तुलकी हत्येनसंस्थीतः का जित्रे च तत्वा हरिः॥ सत्त्रक्रमा प्रश्नाक वतं हस्त्रक प्राप्तिक तत्वरं खनः यो वा च मगबाना हारे वा व मगधाना र्षार्यका ना मरणु दीपस्प माहा स्पंका निक्रिकारिवकाहम पितरहेवेवका निस्ता विस्त शोर्द्धताः अविद्यतिकुलस्मकंषिरअकः पुष्णवनः कार्तिके दीवदानेनपत्तिषयतिके शवं हितनहीपकायस्पतिनतेनेनवायनः ज्वलतेषुरतेनानिन्यस्वमधेनतस्पकि ते नेषं अनुभिः सर्वे क्रतंतीचिव कर्ने व्याग्वसमहाना गये बदतं प्राचने दीपस्त्रो नाशक्र रः तुष्य विवस्पाणिनः पांचालदे प्रोवस्त्रियमा स्रितिह विक्रमः नामावितान शिर्धिरोहिरवज्जनव्यमः विष्ठुमित्रपूरेक्षिक्रन्यम्पाननेत्यरः प्रहामस्वत्रः श्रीमान्धमदः सर्वदामयी तस्पराङ्गमहायाचीमाम्नाहरिकरोद्यभत् दुराचारीदातकारीर्था क्रीसुर्गशयः अध्वतिस्याशकः शाब्बहेश्यारतोदितः चित्रवितस्यकरीवंशस्र क्रारकः म्युसत्तराष्ट्रभावेन्त्रयीमार्जनिवेश्वकः प्रक्रोविर्शतेः सोःयुमद्यपानरतेः मबर कपित्तेनदेवर्षे ज्तेपित धनमहत् रुपिते द्विनशाई सतते दः खीस वाभव त् राजास्वविद्यात्मिष्यम्नतेतिःकाणितोष्ट्रितः रातप्रतेतिकानिषः प्रतितःशोकसाग रे कदावित्साध्येसमा ली विवासप्रकेशतः अयोध्याप्राशतावत्समरुपातकत्वितः क र क्षांचार्या विश्व विश्व हो करें द्वारा जेनतेना शक्त तो दीवा निया हुन नदी प्रान ति केमा विभाग विश्व विश्व विश्व के नतेन क्षेत्र के निया विश्व विष्य विश्व CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

हिन्न

राष्ट्र

88

माताविशेषतः तस्पश्रमसानबद्देहस्तदृश्वाकित्विषीभवेत् यावृद्धितिकंठस्याधात्रीमातान रस्पिके ताबदेवनरित्रेयोहरित्रस्योनसंश्रयः नज्ञान्त्रत्वश्रीमान्त्रधानीमान्त्रिष्ठतः पा पक्ष चीनरेग्यस्त्रवेक्रें वसति में वेत् प्रांतायुग्में बहु स्वानी वस्ति संवे वहते कर देशेत कल्पकोटि दिवंबसेत् संतिवमिष्युं यहामंशान्यामिश्वाचीनं यः क्यानानवीमकाप क्षेत्रवेवाप्रवमेश्व संग्रेगाच्यापादिसः प्रवागामानतीतचा प्रातत्या हित्रदेव क्रेन्य प्रराधन जन्महः खन्नगरे अस्ति। क्षिनिक मानुयात माल तीमालक विसः प्रिति ते व नका तिक पाप सपः क्रासीनना माका की विकारणा भी वेदन सकर्र र स्वाद वसके कमं केत्रकीश्वप्रवेदार्वद्यक्राविष्यं कातिकेक्त्रविष्यद्रमेनकालीयो ही प्रातमहासनक्यांनातास्थे व्यतं सरोरहानिनुतसीमा लतीमुनिप्रध्यकं का निकेच क्रितात्पवरीपदानंतिपंचमं मालतीमालयाचेनकाहिके प्रधान पे केशवस्यारे विप्रवस्ति विस्तामम के तकीष्ठवीनेके नप् जिता शर्ध जः समासह विस्त्री तानापतमधसदनः मर्चियात्वाहषीक्रशंक छ्रमेः केतको प्रवेः प्रापाल प्रवे पातिकेश्वस्पश्चित्रम् ६मनकेनचदेवश्रामाध्यवम्बस्दनं गोस्तस्पम् नि न्य मुचेन हामतेषत्वं अगस्तिक छमेद्वयो चेवतज्ञार्दनं द्रश्नातास्य भो विष्वारकार्वः प्रगण्पति नतन्करोतिविषेप्तपसातिषितेहरः पत्तरितिम रासेनम् निष्णेरलंकतः विराधसर्वप्रधाणिम् निष्ण्यगाकेशवं यार्चयद्वरा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi, Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

মু জ্যা

बस्तित्वणमार्धिकारगर् माग्रमाष्ट्रिकातग्रिकोतग्रिका नेत्वेतीत्वाप्रहणसारीयंडा ज्यान्यप्रशिका एकादण्यापरेर्द्रमेरीयंषुज्यात्यप्रशिका मानुद्धांदुर्त्नमंद्राच्यपरात्रमम्बद्धाः अध्यक्तेंचतुर्द्वपंरीयंद्रत्याण्यकत्वे ज्ञम्याविनापरेविस्राःशिवन्त्रोक्तं ज्ञान्त्रसः कुर्वित कार्तिका विषेती के हरे हैं प्रकातिते विधानन का हद वान यं प्रमे हत ते सर्वे मार्ट्या तेष्ठेभागवतीत्रम् पत्र छहिल्यासम्पद् किमंच्यो तुम्हिति।कातिकेप उवाद्या आ का शरीपमाहात्यं खोतु विद्यामय में कथ्यत्वमहोद्देवक्वां हता ममेपार जामहोदे वड्डा वा मानाका रीपमाहात्यं श्रम्य पुष्टिमाहितः वेत्र प्रवेश मानेशाप्र विद्यम्य कि विदर्भदेशियानाभ्यत्सक्षं तीधर्मनदनः भुषनापादनतकरो दुकावगृहकारकः भरश उजप्रिंसोमहाधीरः ख्रमान्यतः विक्रमित्रातः शाब्वह्मान्योविद्यतिहरू तेनांत्र कार्तिकेमालद्त्रकाकाश्रदीपकः एवंहिकार्तिकेमालिब्रोतेम्निम रामोद्गय नअसित्यायां क्रियाम्ह प्रदेषेते प्रवासिन माने ताय वेषसे सानक्न क्रियाद्वे विस्त्रवेदमसके समाव्यकारादीपस्पत्नतीत्मग्रीविधिर्दप्रारंतस्यतंपविदि भोगा न्यमारमान सपत्रेषोत्रस्व ननावुभनेसरुभाष्येया तत्रक्षेत्रितवरो विमानस विभाग सम्बाद्धा विश्विम् मानः सम्बतः चनुर्वनः चीतवासः शेख्वकारः प्रमाहर सम्प्रेल्यप्रतिवय्योति प्रानतः तस्मानक निक्रमान् मानुद्धं द्वाय पु धरः विस्ति निक्षं विस्ति विधाननहरे ग्रेटे प्रास्ति का निक्रमान् मानुद्धं द्वाय प्र देने में मानुद्धा विस्ति विधाननहरे ग्रेटे प्राप्ति का निक्रमान् स्ति विद्यम् का निक्षं द्वार प्र व प्राप्ति तेन कप्र विस्ति विधान का त्या । स्ति विषय मानुद्धा स्पान् वार्षे व CC-0. La Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized

राम

RE

43

विनश्री कि छत्रेग्रेह तुनः समाध्यस्र्णान्कदाचिद्वित्तसनमः नानाची गोष्ट्रनाग्र व्यती चे वस प्रपाततः स्त्रतः सत्तेग्राककामात्त्वतीविद्यिक्चेत्रयः पायर्षितिमाश्याश्चानः पायः सम महिनाः प्रयतास्वर्तानां प्रतिहिन्तिः मन्ति दिवः प्रणतत्म दिवः प्रणतत्म दिवः प्रणतत्म दिवः प्रणतत्म दिवः प्रणतत्म दिविद्यानमारद्यिव्यक्षियात्रातस्य तेः दिवाभरतास्यक्षेत्रमान्यदिवेशतः दृश्यते उपापिलोकैः सिंहता त्रस्वमं इते नामाभि निन्छ विष्ये एता वान विष्ये प्रति स्था वर्त दीप स्प्रमाहास्यम् श्राब्य्ह विस्ताव्य कियुनमिहियमा त्रमाहास्य तायकी वन्न विस्ता तककि विश्विष्ठ्योकेषुमान्द यत्रेबद्धतिदीयः कार्त्विकेकेप्रावागृतः प्रतोवासदेवस्य रीपंदबाउकार्तिके जाजीतियास्वतंस्यानसर्वदःखविवर्तितं यःक्वर्णत्कातिकोः प्रः कर्र दीपकं एकाद्श्याप्रवाधिमातस्य प्रत्यवदाम्प्रं कुलेतस्य पुरुताये मविस तिसमान समती ता प्रयोक वित्य राषा सिहरि वियाः मी दिला छ विरंका संदेव देव के प द्ख्या सर्वेचप्रक्रिमेध्यतिष्याराच्च ऋषाणिनः दीव्को ज्वलते यस्पदिनरा नेहरेरहे एकादश्यांविशेष्णस्यातिहरित्रेदिरं दीव्यमानत्योद्येचवीयतेश्रहे परेगाते नस्मते निस्ती प्रियमयात्मा प्रायदाभास्यतेदीकोदेवगढरोपरि तदातदा छिन्नेख भीयतेषापसंचयः दिविदेवानिरीसंतेविस्तादीपपूर्वतरं करामविद्यात्वस्थानं सग प्राच्याकर्मणः नत्र प्रवतिविषेषु रूषे रिषम् समर्वेः काहिक्यत्वत्वे क्षेत्र प्रदेशक वाध्रमात् का विकेद्गस्य प्रेच्एकाद्यपादिकात्तम् वेश्यया वेदमत्यहरीया द्वाहर्यहे देवेदकायुलन्मकुक्तासम्बद्धाः विदेशका बक्तास्थकार्यक्ति विकाण्य स्तरित केतरे

ब्राहे में प्रमें कि मधीयी वित्यानं तस्याः कादवता मचेद किंचत च भवेदे ये कि नदेवम मच्नी प्रहर्षःकाः विद्विः कीराकात्रवकीतिता। स्रत्यक्षण्यतिसत्याववः श्वत्वा भगवान्त्रत विस्याः प्राध्नकाक्ष्मवाकातः प्रकृतिनद्रम् वीतः का विकस्यात्राते प्रवे विवाद्यपातुमा लिनि पदारीपेनिहर्यचारप्रस्थिनियपित मत्यनापाशहस्त्रनकालेनाम नपासह न्याद्यादीपदानात्सर्यनः वीयतापिति का निकेस्प परोच चतुर्द्या विध्य द्ये न्वव ग्राम्बदानिक्यानंगरकभीक्षिः प्रवैविद्वनुर्द्श्यांकी विकासिशानेतरे प्रसेपत्रक समयेखानंक्ष्याद्वितः तेथे स्त्रीजेलेगगादीपमा लाचनुर्दशी पातः सान्हिपः कर्य चमतो सन्प्रपति न्यपामार्गस्त्रणातुवीयप्रनाटस्त्रणान्यः आमयसानमध्यत्तरस्त स्यापवे तीता लाखसमा अक्तसक देकद्या निता हरपापम्यामार्ग माना माना प्रमा पुनः म्युषामार्गेष्युनारं मामये तिरामापरि तत्रवतप्रांकार्वधर्मग्रम्थनाम्। प मायुष्यभूगम्बन्धनायप्रमिष्टिने ढको दुरायचिनायविन्गृन्नायवेनमः नर्दस्पृत्र तकी क्षेत्रः संस्कृदेवताः ततः प्रदेषसमये दीपान्याननो रमान ब्रुविस्क्रिवादीना भवनेषुविशेषतः क्रागारेषुचैत्येष्ठसभाष्ठ्यनदिषुच् प्रकारोचानवावेषुप्रतातीवः करे वृत्र मंद्रमाविविका मुहालिका लामु चैनिह एवं प्रविवसमय विविद्याना गर् चित्र तेषांशासी ब्रमा विह के वारि आच्या रच चित्र गांव क्षार्य वस्त्री तेष्ठ ना चते दिव

श्रम राम

प्रवाहिनाः प्रनःपष्रधातर्भभित्रम्बद्धान्तः क्ष्त्रिक्ष्यः विशेष्रणप्रमागयको व्रसिद्धिक्षेत्रो कि प्रवृद्धियते दिवस्तस्यं कादेवता भवेत ईल्रावा वतिस्व नेप्रराम्यहस्य खायसक्त वयतिर्धर्मगुष्णि अस्तिवधर्मनियवकः तस्पराष्ट्रनपवरमामाली नावती मने वेदपाजनिष्यारम्बार्षे एकं ममन्त्रिता न्यासीन्य निवर खेळतस्परा के विना सिनी कालिवित्रचप्रत्कारकारकारियोगिदेवकागतः सावित्रकाष्ट्रप्रचेत्रप्रचेत्रामगज्ञेगाविती प्र सारत्यक्षेत्रवापदेरवगुंहितं बङ्गिल्यधिकासीनेपुराम्यानतकेथरा कृता नतिपुराष्ट्रिक प्रतिदंष्युवाचेशा प्रधानद्वेनहतेनेष्यासवृतेक्ते प्रज्ञानप् जितःशंपुनेच वन्त्रीपति हिरः संज्ञतंत्रणमानायाधानिकिविहदस्यमे चेनदः काश्विमानाहे तिस्तरिम नार्याना त एवंतरणस्त्रवहृशःश्रुताचकर्णावयः काहण्यत्वस्य पामासन्निधनिनि परीखें स्त्रों में मान के किया के मान रखन्कासम्विधीमान्यर त्ताविक्रियो सापिन्य वामन्यान्य तिमानर तिमानर ती राज स्वाराजी राजी बकार दिपामा लिका तस्य ब्राम तेन मनोर का स्वाराम स्वाराजी करने प्रत प्रमाद्वानुकार्द्विताः प्रहर्षहर्जीव स्वत्काराज्य जे ब्वर प्रमदेत तस्मादीयाः ब्रदातसा गं गवस्तितिरवै गरेख सर्वगाळ प्रचेत्राव्य तम् प्रच देवा त्येषु देवा नां प्रमानप्र रः मन् ग्राम्साना अभारति वावाय विद्यादिना वित्र वाविनः विन्ना विद्यादिन कि CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi: Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

व्याव्य ४५

य्वेबकुखमानान्यरेः स्र एज्य्येवापियोधां श्वप्रातीन्त्रमञ्कतान् प्रं कार् छः स्वयं पश्येत्रान संस्वारणान् के शावयेश्वाणयेश्वेत्रोमहिष्यादिसंततः वर्षान्स्वीपयेश्वीमहित्रित्रस्वित्रस्वित्र गत् तते। प्रान्स्मियपूर्वस्यादिशिमाविति मार्जवाकी प्रवर्धीयाद्वीस्तेने रचवाचे कुश काशप्रयोदिकातं विकेव्हितिः विचे की स्विताग्रजान्यवान्तायमस्यान्त्र सेनयत् गा बोदधान्तमहिवान्यहतो बंदको त्वरणन् इति विविद्ये स्तुवधीयान्या गणि दिकाम् नमस्कारंततः बुर्योन्से नेनाने नप्राचित मार्शवादिन महान्यं सर्वत्वे त्वाक प्राचित्र जितलेने स्पंयां तिमानी महात्यकाः एजानीय इस्वाङ्चनाह्य वाह्य विशेषतः प्रारीपाली सम्बन्धिक्रिक्तः स्पान्त्रावीतद् हत्वेतत्सर्वमेवेहरात्रीदेत्यपतेवेतः प्रजाहत्वाष्ट्रियस स्वाद्भीमंदलके हते विज्ञातिकादेगेंद्रवर्शकेः पंचर्राकेः स्वानर्शासप्निविधाव ध्या संस्थिते क्षेत्रा द्रमय जे ओर प्रेष्ट्र पानवसंयुत्ते से ए गीम् ह वर्षे कि रोटो त्कर के दर्व क्षित्रमेदेख्रामान्सारिकाख्यस्मनः गरुख्यमध्यमान्यवाविकान्त्रापातमे । चीत्र ना तमार जनेः सार्धिते विद्या वेश्वातिः सहः कमलेः कडिदे विद्येः क स्ट्रिक् को सलेः प्रधेवया न्नेवेचेः मसीरेर्गुरपायमेः प्रधानम्य तस्तिपवर्खयहारकेः प्रवेतानेनराजेन्द्रः त प्रजीसप्रोहितः प्रजाबिष्यितियेवैष्याः प्रदानाम्ब्यवितसरं विस्राजनमञ्ज्यवियेव नामुस्युओं भविष्येंद्रक्षरारातेष्क्रेयंय्वतिराह्यतं एवंष्क्रांचिक्कत्वाराज्ञीजाज्ञर्यात्तः कारमेखें संगोधादितरत्यकणनकेः को कस्याधिग्रहस्थानः सप्योष्ट्रकतः संस्था CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

Ac

अप्रवृद्धस्योप्रवित्रिपिर्ल्नस्योप्रवोधयेत प्रवोधसम्बद्धन्द्री बोधित्वा भन्ति व प्रशंसवत्तर यावस्त्री तंत्रेवष्ठं वति स्र्थायायाविष्ठभीतः करिषः क्षत्रं तीरे द्धीनात्यवद्धीः पद्माश्चितातथा त्वन्योतिः जीरविश्वेद्रविष्ठुत्सोवर्गतारकः सर्वेषं ज्योतिषं ज्योतिः सर्वेषं च स्थितनमः पानस्प्रीद्वित्रवृप्येदीयावन्याचम्द्रतत्वे ग्रवागोद्धतुक् निन्यासात्व स्प्रीवरदाम् म शंकर राजमवाकी चकी द्यां प्रतामा स्थितो अवान्या स्य चिंता व द्या धेनु हरे प्राप्त स्थिता जो क्ती जितः प्रशं भुने के विक्रिति किता निर्मा के के विक्रित के प्रमें विजयायस्य स्वत्सरेष्ट्रभे एवं गते विशी चितु जने विद्यं धरोचने तावन्व गर्नारेशिः सर्विष्ठिमवादतेः विःकाष्पतेष्ठहृद्धान्निरल्द्योज्वगर्गगणात् प्रतयो विद्वयः स्पन् तिपचित्रियो प्रतर्गिवर्धनः प्रत्यो च्रत्रेरामी शास्त्रीय प्रवर्गियास्त्यामाने वर्गानास्त्र देहमात् ज्ञावर्धनधराधारमाकुलनाएकारक विश्वनास्त्रत्यायमने विद्यानन पालक्ष्मीलोकपालानां धिनुरुषण संस्थिता हातंत्रहतियज्ञार्धमम्पापेव्यपोहतु स्वगृतः संतमेजावीजाबीमसंतु एखतः गाबी मेपार्यतः संतु ग्रंथा मध्ये वा स्यहम् । इति गोवा नप ना स्मावेनैवसंते छादे वन्तरपुर्वान्नरान् रतरान्वान्नप्तिनारानेनपिरतान् विदेशांद्रतिनेश्वष्ठध्यकर्परकुंकुनेः अस्येर्ज्ञावच्नेनित्रेरतः प्रविनासिनीः गामेर्ट षभयानेश्वसामास्यत्रपतीश्वनैः पद्मितनसंद्यात्रच्येत्रयेः करकेः सभेः खनामकेश्वता त्या ज्ञाताच्या त्वज्ञ नान्य प्रकृप्य प्रतास्य वात्र तत्र तत्र त्र वात्र वात्र वात्र वात्र वात्र वात्र वात्र व

ताडीक्रलंबतवर्षनं कृजिश्रक्षितीयायाप्तितास्त्रितायमाः महिषासनमारक्षेपंडमक्रभ्य भः विष्तिः किंकरेर्द्रश्चेत्रत्येयाम्यात्मनेनमः चेश्रीक्षन्यः स्रवातिन्ववस्त्रत्नार्तिष्ताः नते षावत्तर्ययावत्कत्नहानिर्वार्थयं धन्ययास्यमाप्रयोश्चर्तकामार्थसाधनं व्याखात्त्वव वेष्ट्रन सरहस्पनयानव यस्यातिकायभगन्यायमगनदेवः संमोजितः प्रतितिको ख्रस्तो हदेन तस्या त्त्वसः करते ना दिस्योग्धानि कि क्षेत्रीति ति ति ति प्रति प्रति । विश्व क्षेत्री क्षेत्र क् पवासस्यक्तं वास्यप्रणेदितं प्रयाविधिनरे कार्योवतवर्याय्यानवेत् आराधिताययाप्रवेत माव्यतियणविधि प्रथासंख्यंतुक्तेथंतत्वं द्रिषितामह वतमेतत्तरप्रेष्ठविस्तरेणम्मानेव र्वत्र वान्। मा ज्या वक सर्वते प्रस्पातरो प्रतः प्रारमित्र तो ने स्त न्यू राउद वनी मित मुराशांचयथाविश्वस्तवं ने न्यवारितः महः शिख्विर्गायहिष्टनतेयश्चप्तिसां तीर्पान्तु प्रवाशंतायुक्तमातुययाविणिक् असंसर्ववृतामातुतस्मासाप्रवासकं सर्ववृतस्मार्यप्र र्वतार्श्वस्वविक्ष सर्वयानाप्रवंदापित्रमेन्यासापवासकत् अतिकामादिविक्षेत्रित दस्योः नतत्यराष्ट्रमबाद्रोतियन्यासपरिज्ञ्चनात् तन्त्रनेष्ठतद्वतपत्तन्नेकृतास्वका यः करोति विधानन नरीमासे विषयां प्रविश्यवेसन्य देतेना म्बन्धन नार्दन गुरोरा नातते व ज्बाकुपी आसापवासनं बेसवानितचाकानिक त्वासन्बन्तानित प्रद्यादीनिप्रापानिततामा सम्पावसेत् अतिक्रखंचपागकंक्तः वाचंप्रयनंततः मासेप्वासंकुर्वीतकात्वोद्देवदावलं सम्पावसेत् अतिक्रखंचपागकंक्तः वाचंप्रयनंततः मासेप्वासंकुर्वीतकरो विवासयातः अवस्थितस्य CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

राम

96

व्यवतिए जानेक दोः पुष्पेश्चप्रज्ञयेत वतिमृद्दिश्वदीयतत्र ज्ञानिति या नियास्य ता सार्मियं सर्द्धितं यदस्यदेषते दानं स्वत्येवा यदिवावक तदस्यं भवेत्सर्वविस्रोः क्रीतिकरंश्रमं राजीवेनकि छिलेतित्वप्रजावलेमम तेषामश्रीविमे घर्मी ५ कर्मत्वप्रपत पते विश्वनावस्थात्रश्चनव्यविष्ठनः उपकारंकरंदत्तमसुरागां महोत्तवं ततःप्र म्द्रतिरं जोहंप्र बताको मदी प्रभा सर्वी पद्वविदाविसर्वविद्वविवाधिनी तो कशो कररी काम्याधन उद्धिकरीष्ट्रमा कु शब्दनम्हीत्रयामुद्रहर्षततीयाप् धातुन्नेर्तिश्वमत्रेश्वतेनेयाको मुदीस्त्रता स्त्र मुद्दानिबर्लेर्यस्मादीयतेतन्मामिनि द्रत्रद्रनवरानस्य स्थादशीमवम्द्रतते यः क्रोतित्यास्य तस्यकासिमयं कृतः स्विन्दं स्वेममाराज्यशास्य संपद्मकृति दे निक्त श्वन नाः सर्वेसर्वी पद्भव जिताः क्रीष्ठरिक्तियतेपस्माञ्जवंतीरमहीतले प्रायाद्यानभावनिष्ठत्यस्यानुखराषुरव हर्ष्यः बादिभावेनतस्पवर्षप्रयातिहि हिदितेरोदितंवर्षहृत्ये वर्षः प्रह्यति भक्तेभोक्तभवेद्वंत्व माः खस्या प्रविद्यति तसात्मह हे सुहे प्रविद्य कर्तिया की प्रदी नरे: वेस बी पान की वे प्रति थि: प्राबाचमापिति दीपात्सवं ज्ञानितसर्वजनष्ममादं विविध स्मतया विराजप्ता प्रानापमारा सख्य द्विशाता क्र के ने के बिव्रयाति सक् विच्या के विवर्ध का त्रिक चित्रियायां पूर्व के प्रमान चेपेत भानु अया नरः स्वात्वे यम त्वो कं नप्रपति का निकेश्य स्वाति कि तिया यो तुरी नक यम यम यम प्रविभोतितः स्वगहिर्दितः दितीयायां महोत्सर्शनार् की याश्चतर्विताः पायभ्योपिविनुकासिनुकाः सर्वितिवेश्वनात् स्वनाष्ट्राताश्वसंतुष्टाः स्थिताः सर्विषद् स्वया तेषां प्रहात्स्वा स्वाप्तायम् । पापपाप्तायम् खते प्रमित्रीय पंत्रिष्ठ हो के ब्रिक्सित क्रिक्सित क्रिक

RO allo

जाविवस्वर्गने के मुहीयते. रित्ममापकाषिप्यक्तकानुवाद्य निर्वापयेत्ततकानेविति नायेवनव्याण कारयेहेसव्यक्तने कार्यपाठकेवितः यज्ञिवसंदेवरामाचार्वानुसम्हरि चूर् यित्वाय्यायात्रिमानवा युग्रदेतया तृते विभाजये विचानवा स्वार्थरः सराम विम्य एक ल्यार नान्विस्युननतत्वग्न तते। अव्यविस्त्रत्याशास्त्रास्त्रतं कार्यिसास्त्रने प्रतिके न्त्रीतुर्ख्याक्षितः न्यसेत्तर्णातुशक्यायानुपकत्यास्त्रामिः न्यासनपाइकेस्त्र्त्रेवस्त्रपुग्ननुपा नहीं पिव नाशितुप्रका शिक्षायाम्यक न्ययेत् एवं शक्ताने तनक न्यविश्व स्वतानिक न्य विक्रितिवाक्यं मुक्रुं हुः मंत्रहीनं किया हो नं सर्वेहीनं दि जात्रमाः सर्वेहे दर्गतां यातु नवहाक्य प्रसादतः विधिमीसोपवासस्पपणावत्पेरिकीतितः कार्तिकेपमहाभागकिमन्य द्योतिमिख सि॥३२॥इतिज्ञीवस्रव्यक्रिकानिकक्रारामिनपश्चिकतिक्राध्यापः॥३३॥कानिकप्रजानः।केथ्तनि यते ब्रुक्त विकारकादकी ब्रुतं विधानंतत्ममा वस्वसंसारमयभंजन ई र वा तः अत्रवाध्येका दशीहरेः प्रमाष्ट्रायन विधिना तं विधि प्रविवीम्यहं का तिका सक्त पर्ये तुद्रा खा विष्तः श्रीवः सालादेवार्वतं हा लावित्व कार्यवणविधि खादते स्वयना साहित्या लाउन स्तातं मृत्वासम्युक्तमागासेक् वी च्छीचंचपार्योः रात्रःपविषमयामेतुसम्यायपपाविधि क्षान्य प्रतिवेच वी चेक पी दति दितः क्षात्वा छे ज त्मानंत्र सी रक स्म सुद्ध वे म स्पेद्त का छ च निक्षानामे सुपनिवान स्टब्यांगा नितपादिष्विचिर्धाये जनित स्रत्मी प्रस्ति ग्रह्मी भारोबन्धेजे श्राप्तवक्षणप्रशांशीत्रवाहितीहिनं प्रसन्नवद्वदेवस्त्रस्त्रस्त्रानिहे CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

হাদ

मलेपचे एका एमा खुंपाबितः भवतवत्ता महोपाचावविश्वहिनानितः। बाखेदवस्य सर्वकार्तिकंस कलेकरः। मार्वकार्यसम्बद्धिक्तप्रथमा अवत्। अखुतस्य अवेशस्यात्वा न्वस्य स्थाप्ता व्याप्ता स्थाप्ता स्थापत् तीरिवरेः पद्मैः कमलेख्युजिपितः। कुंकुमो शीरकपूरे विकिष्णवर्यदेनेः। मैवेचे र्यारीणचैर्व पेत्रजनार्शनामनसामनसामनाप्रजयेद्वर्धः अञ्चलाविधवास्त्री प्रकृतिवरुद्वसानितिष्याः ना स्नामवत्रदानापेविकीः कुर्योदहर्सिशं। मन्याविक्षी स्तुतिवी सामिष्यानापविवर्जिता। सर्वस्र द्यायुक्तः शांतवतिरहिसकः। स्त्रोवासनसंस्था वावासुदेवं प्रकी नीयेत् स्थावाकास्य गंधाया स्वादतंपरिकीर्तितं। श्रेम्ययवर्ताचे द्वासंग्रासानां सर्वमेक्ष्यां मा ना अवंग शिरोभंग तांबूल स्वितेषनं। वृतस्यो वर्त्रयेत्वर्वयञ्चात्रात्विगक्ततं। नवतः षः स्यूरो तिविद्वक्रिक्तिस्येन चानये तादेवतालयनेतिष्काहस्य भ्वर द्रता क्रातामासोपवासंतुवतेत्रिश हिने रिहा क्रातामासो प्रवासतुस्यतात्वा जितेदियः॥ततार्वयतवेपुरापदादरपोर्गर्उध्व जाप् जिसेसुध्यमालाभि जीवस्यविजयतेः।।वस्त्रालेकारवारीश्च ताष्यद्युतं तरः।स्वापयतहरिभत्त्यातीर्थचेदतवा रिभिः।।चंदनेना नुजिन्ना मं प्रदेषेरनं हुतं । वस्त्र दाना दिनि भेव प्रजिन दिनो नमाना दत्वाच द्वसिंगातेभ्यः प्रियस्यक्षमाप्येत्। विप्रान्समाप्यिनातुः विसर्ज्यास्य चिप्रिना त्रास्ववि बानुसारेगा मित्रके ने बाक्ष के वास के बाक्ष के प्रति के द्वाप्य की न के विश्वादि

ত্যাত

दिविवर्जितं ष्रदित्रगादिलं युक्तं न्यस्कार सुरुषर्।। नीराजन्म मायुक्तं मनिविन्ने नचे तता।। यामेया मेमरा भागकर्वनीराजनंहरेः। श्रेतेर्योः समाप्रक्रंक्यां न्जागरणाविलाः। एकाग्रमनसायस्त्रनपुन्की प्रतिष्ठ वि॥यश्वेक्रत्तेमक्रावित्रकाद्यविविक्षितः॥ज्ञागरंवासरेविक्षां सिवतप्रमासन्॥उद्यस्तिनयोनि त्यकार्त्रिकेर्व्यते हिर्गावर्षकोरि सहसारितमञ्जूतर शालिकाष्ट्राकार्त्रिकेमारिकार्यकतेरिका कु लेतस्य विषयाताः शतको व्यस्त स्वराः॥प्राप्त्र वित्र विस्त्र स्वराज्य किता गरी का हिन्दे पश्चित्र पा नित्र विषय के स्वति स्वराज्य के स्वति स्वति स्वराज्य किता किता के स्वराज्य के स्वति स्वराज्य के स्वति स्वराज्य के स्वरा पुगानिव्यतेखर्गे तावेतिष्ठनिमलमान्यस्यं प्रनिषार्द्रन्मानतीक्ष्रत्या वृत्रास्ववेयदेवदेव येस णतिप्रमेष्दं कितिके प्रवास्था प्रदेत हुन ने प्राप्य का तो प्रदेत ते। कर्त व्यं का ति का ति अवता भी जापे व के । विकास ते स्थान के ता प्रवास के प्रवास के ता प्रवास के प्रवास के प्रवास के ता के ता कि का ता ता कि का ता कि का ता कि का ता कि का ता कि । वार्तावन न्याप्रिमहाण्यंपवृतेवतवतावयाभीक्षेत्रेतयतः प्राप्नेवतेप्रेविधनात्मक्षासकाया है। जदब्यतेनेक्रेशेष्यपंत्रके बत्यास्पग्रणान्वक्रेकः शक्तः केश्वा हते।कार्त्रिकेष्ठक्रपने तृष्ट गुर्धित्वातम्।विक्षिष्टभगुगर्गोद्येश्वीगिकतछ्यादिष्ठान्येव्रीवेगान्येणविक्वीगित्रसम्मादि ष्ठानास्योर्वस्यविंगाजप्रोप्रक्रियादिभिः। हा वियेश्वतवावेश्वेः मृत्यशोवप्राप्येः। प्रसाक् चितिवयं द्रतेन सर्वेक् तमवेत्। वृतंचेतम् राप्य प्रम्य प्राप्त का वा ने। स्वतो नरेः प्रमत्तेन कर्त व्यंभी खार्च बके। क्षा निक्स्या में लेप केस्वानं सम्यावि धानतः । एकाद्यपंतु ग कीपादु तप्रदिना सकाष्यातः सात्वाविधानेनम्ध्याने चत्रणावती। न द्यानि भेर्र गर्ने वास्माल भ्यच्याने ये। प्रवेशी हिति है: सम्प्रहाबर स्ति स्ति चे चे किया ता स्ति वाकी नता है वाधी तवासा रहे बात । आधा CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

राम

तत्रोभान्द्येवादिहस्तेनपरिग्रह्मच कुश्गन्वितंपुग्द्रीपानियमेविसुतुख्ये एकाद्र्यान्ग्रह्म रः स्थिताचैवापरेहति ओत्यहंपुंदरीका राधारणिभवा खत स्वम्साततःसम्पक् नित्यवं कर्म अमधीः समापवेदिधाने निबक्षं संप्रजावे अने सहस्रसंख्यया स्वस्थः सावित्री संजपेद्विजः सर्वणप स्यकरींबतस्यपरिष्क्रीयं दश्मिनेन्यजनितंशतेनयस्युगक्षतं त्रिष्ठांतुस्कृतेरामाधिनीहंतिक िवषं गापित्रीवेदज्ञतनीजािष्वत्रीपापनािष्ठी जािष्यास्तिप्तितिवेदहस्पवनं तस्मान वलसाविश्वागिष्विभाविभाषाते रविष्युम्ब्यज्ञष्यात्रण्याव्यय्रुक्षप्रवेत कार्तिके शक्तप्रकेष क्रत्याविकादशीनरः प्रातदित्वाश्रमान्क्रमान्स्यातिम्ममंदिरं प्रवाधिन्याश्चमाहात्मंबावबुप्रस् वर्षनं मुक्तिदंतत्ववुष्त्रीनाञ्च्या खरूर्यन्तम ताबक्रजीतिसेनाविज्ञाताभागीर्थी सिती यावनाया तिपापवीकानिकेहिमे विक्रित ताबाजितिती जीति सासप्रदूसरे तिच पावत्ववे धिनी विक्रोति विक्राणितकार्तिके दुर्वभवेवदः प्राप्येत्रेत्वेक्ष्यस्याच्ये तद्विवार्थितवीरद्वतिवाधिनीवते हे श्वर्यस्तितिज्ञानराज्यं वसः खसंपदं दरान् प्रविश्वति व्यवस्ति विश्वति विश्वति विश्वति विश्वति विश्वति विश्वति व त्यत्यक्तितातिवै एकेनेवोपवासेनप्रतिहरिवोधिनी उपवासंप्रवाधिन्यायः करोतिस्वभावतः विश्वितन्त्रशाद्विषणकेलात्रकेल प्रवेतमसहविष्ठपापेय त्वष्ठपानितं नागरेताच्या विश्व दहतेत्स्याशिकेत् श्राणुवागम्बन्याविताशंस्यवस्यां पस्यवितातमानेदुर्नियोगनाना दिनः जीतंबाद्यवन्यं व प्राणपढने तथा ध्रंपदीपं चनेबेद्यं तथा गंधानु त्यमं प्रतम्बी वृद्य CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digittzed by Sarvagya Sharada Peetham

6

68

क्या ०

त्यातक्षतमानसः म्य्रचीयत्वाहृश्चीके वामकाद्यवामानाः तिः प्रायप्राप्तामयोकाद्यवाष्ट्रयस्य वर्षः त्रिः प्रायप्तामयोक्षः वर्षः व को क्योत्सर्वपतिनभाविति संवत्सरद्वतानातु समाधिः कार्तिक्षेत्रका प्रपद्मवित्ताकार्यारेद्वकातिशे प्राप्त धङ्गरुक्तावितिः कार्तानात्रपद्मकरातिनी तिलदस्योगरिङ्गायहास्वर्द्वाभिवरिद्धता रक्षपुद्धकता गीराज्य ते को चलकुं इत्य संयुज्य परया महाना अभेरा तथा मामी र रम मही र ये में में मिल से मामी है। यद्गानम्भिक्तिक्तिक्रान्मित्वपुनः पापप्रधाममायात्त्वपायप्रतिः एवंसेप्निविधिनन्तिमाता यद्गानम्भिक्तिक्तिक्रान्मित्वपुनः पापप्रधाममायात्त्वपायप्रतिः एवंसेप्निविधिनन्तिमाता यप्रतिन्द्रभाभभिक्षेयतानिति बावकायप्रतिन्द्रभावपायपायात्रकार्यस्थान्तिस्विधिकार्यस्थानिस्विधि ताविति कृतकृत्यः रिचतिभ्रत्वाविद्रतः संपतिभवेतं स्वयाप्राप्तिस्विधिक्त्यप्त्रमापन्तिस्ते प्रातिविज्ञीत ताबिति कृतकार्याः विश्वास्त्रात्रात्रात्रात्रात्र्यामे वर्त्दे चतुर्धनं स्वख्यादेक नयनः शंकुकरणित्रत्। राजाधः परंपद्भवाष्ट्रयत् भीनी सन्दर्भवामे वर्त्तर्दे चतुर्धनं स्वख्यादेक नयनः शंकुकरणित्रत्। स्वनः अधिकिक् स्तानासी प्रगणनत्त्रस्यः विवनी यो महादेवी प्रस्पन्तविद्यते द्देभी स्नेनकि तंशारतत्यगतेनते तदेवतमयाच्यातंडकारंभीकापंचकं अन्यष्ठरंपपापहरंखिकिरमहावतम् यत्कत्वा

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पादकराने चन्ध्रं सेवप्रयत्नतः प्रज्ञानी ब्यास्यकर्त्र काराने द्वात्यप्रततः पंचरते विशेष्ठि गादला विश प्रयत्नतः वाष्ट्रदेवेषिसंप्रज्ञो व्यवस्था एक स्तरप्रभुः पंचे केप्रज्ञायिन विशेष्ठ कमिनुस्पृति यति वित्रयतेसंविषवधातुष्रकल्पयेत् संवत्सरवृतानातुतथार्वस्पचपपनं प्रवेगाननयं क्यां सुनिभा जीमवेलरः वैयावप्रजीनायसंक्रित्यववरायच स्वनप्रताप्रदेशप्रद्वभी स्ववर्षरी वस्ताम वतारायशनानोग्रत्मजायच अविद्विमिश्रीव्यायम्याजन्मवस्त्रचारियो स्वननविधिनायस्तुपंचकं त्समाप्येत न्यावमध्यमप्रग्रेयप्राष्ट्रोत्यज्ञनसंश्रायः पंचाहमिष्कर्त्रवं नियमचप्रयानाः निय व्रमित्रायम्भाव्यवस्विति उत्रायगाहीनायभाष्यायव्रद्दीहरिः उत्रायगाहीनोपिश्रद् अम्बिनान्तरं ततः संप् ज्येदेवंसर्वपापहरंहरि मान्तरंप्यतिनकर्तव्यंभीव्यप्तकं साप पेजन विभिन्नामधुद्गीर हतिनच तथ्रवपंचग्रामगंध्चदनवारिशा चंदनेनसुगंधन्द्रंदिन मार्चिद्धिः कर्परोग्रीरिमञ्चन लेपयेइक्डबर्न अर्व्येड्डिसरे प्रधेर्गध्य प्रमनिन्तेः गुन वं रतसंग्रक्ते द्वात्क सायू अक्रिमान् दीयकं नुदिवारा के द्वात्व वित्त नेव चेदेव देव स्वयू र मानंतिवेद्येत एवमप्रविदेवसक्यत्वाचवराम्यच अनमावासुदेवायप्रहायम् मुक्या ब्रह्मता भ्येते स्ति अबी ह्या दि निश्चतं अह सरे रामि वेगास्वा हा का शन्वते नव उपास्पपविच मासंध्याप्राप्रमाद्राक्षं जिल्लाप्रविमंत्रेच्छातवारम्हर्निशं सर्वमनिक्षान्त्वार्यवेचित्ना ाच विशेषेणवतेहास्मन्यदन्यनं ऋगुखतत् यूधनिहिहरे:पादेषज्ञयेकानलेवती दिनीयिक वि - वपत्रेगा तात्रकां समर्थित ततानुक जये की येमा नाया च क्रपातानः कार्तिक देव देव स्थान CC-0: Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ब्रह्महामोबुः सर्वपाषैः प्रमुखते। प्रद्रीक्र्यंचकिमित्रञ्जिष्यामेकादशीप्रस् तिपंचित्रं प्रसिद्ध &स्य न्योजनप्रस्य तदानिष्ठभस्तिस्त्र न्यातेष्ठाम पर्श्येष्ठ६ति विक्तुः॥स्तर वर्षाम् तस्यितेष्ठगण्ड र्जिनं अवतेक लो। वर्ष अद्यं मणा स्वातं शास्त्र सम्बद्धं प्रस्ति राक्षं जीवितं सर्वे परंग्र हो बनी सर्।। अ त्वाचेकपरेभक्यान्युगम्यागम्नेरतः।कन्याविकीखास्विकीचीभयतुविमीचयत्।मीचर्चर्द शास्त्रियकार्यनेतरेजने। खुलांचेकप्रयेत्ना संगर्छतिमानवाः। ज्ञापनीयवपतेनये संप्यत्यातिना न्यः। तत्रको कण्यतेष्ठणं सत्यं सत्यं व स्थात्र स्थात् सर्वित्र स्थातं का विक्रु का चा काणितदेवदेवेनदेदेगाहितकाम्यया।वितृत्तदाव्यमाक्यप्रेष्ठ्यम्वित्वर्वितर्भरः।हिन् प्रोजन्यःस वित्रवन्त्रमाद्यं वित्रकृत्यावयं जाताः श्रुत्वाकाः विक्रजंष्ट्रते। स्वयं नास्तिश्चात्रव्यानं प्रेतस्य तः प्रति। माहात्व्यमत्त्रवित्रविद्याप्याद्यः प्रवाहकः गोन्नहिर्णयविद्यविद्युत्योयतिहतः।। नः परला वालात्वार्था । विवास क्षित्र क्षितः । तस्मा संयु जये निसंयपि क्षेत्र पर लेखात्वार्था । विवास स्वास्त्र वानवापात्रातार वाच्याताष्ठ्रस्तवं वाचकायेवद्गतवं धर्मिख्ता । प्राशाविद्यादानारोधनं तप्त कार्तिकमारात्माः महार्गिष्ठ मन्न स्वाहितस्व १८५६ को ब्रह्म ६ विवित्तायंत्रयोगमा नेद्वाहितन्। CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

राप्त

का निक्र फील ठेव

CC-0: Lal Bahadur Shastri University, Delhi, Digitized by Sarvagya Sharada Peetham